फरवरी 2019

₹ 10

भारतीय रेल

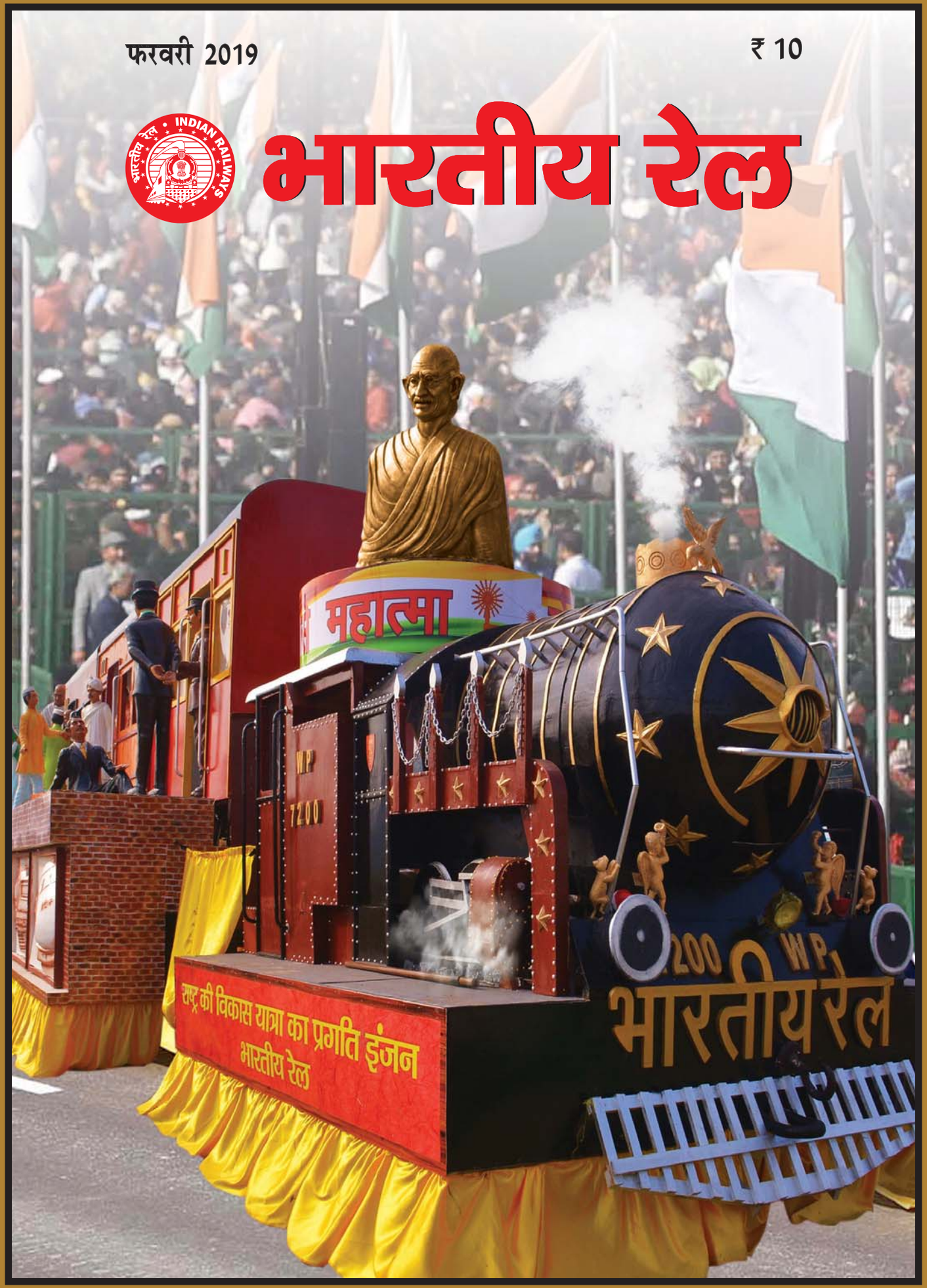

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

भारतीय रेल की विज्ञापन दरें (रुपये में)

विवरण	सामान्य दरें	अनुबंधित दरें
सेकण्ड कवर	10,450/-	9500/-
थर्ड कवर	9500/-	8550/-
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	8550/-	7600/-
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	7600/-	6650/-
आधा पृष्ठ	5130/-	4180/-
सेन्टर स्प्रेड	15,000/-	13,300/-
सेन्टर स्प्रेड (स्पेशल पोजिशन)	16,500/-	14,700/-

(विज्ञापन चार कलर में)

तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी–बारी विज्ञापन देने पर ही अनुबंधित दरें लागू होंगी

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार 28 से.मी. x 20.5 से.मी.

छपाई क्षेत्र 23 से.मी. x 16.5 से.मी.

★ पत्रिका का प्रसार समग्र देश में ★

विज्ञापन सामग्री – ई–मेल, आर्टपुल, सीडी

संपर्क करें : व्यापार प्रबंधकः प्रशांत कुमार पट्टनायक, मोबाइल : 9717647367

310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली–110001

टेलीफोन : 011–23382531, 23303665, 23304456

Email : bmpr310rb@gmail.com

Road-Rail Vehicles solutions
for OHE and infrastructures maintenance

V2R-C OHE road-rail vehicle

- For track and catenary works and measurement purposes
- Efficiency in rail / urban / private networks

VCP Self-propelled OHE access unit

- Off-road mobility
- The fastest rail-road transition on the market
- Safety and precision on catenary works

Worldwide experience

GEISMAR INDIA Private ltd

248 DLF Tower – 15, Shivaji Marg, Najafgarh Road, New Delhi 110015 – India
Telefax: +91-11-47553255 / Email: india@geismar.com
Website: www.geismar.com

GEISMAR
INDIA

SECURITY AND TELECOM SOLUTIONS

for New Age Businesses

More Features • More Technology • More Performance

IP VIDEO SURVEILLANCE

The 3-Dimensional Video Surveillance Security: Persistent, Proficient, Proactive

- Enterprise Video Management System (VMS)
- Intelligent Video Analytics (IVA)
- Network Video Recorders (NVR)
- IP Cameras
- Mobile Applications

www.MatrixVideoSurveillance.com

PEOPLE MOBILITY MANAGEMENT - TIME-ATTENDANCE & ACCESS CONTROL

Right People in Right Place at Right Time

- Palm Vein, Fingerprint, PIN and RFID Card
- Aadhaar Enabled Biometric Attendance System
- Access Control
- Contract Workers Management

www.MatrixAccessControl.com

TELECOM

Communication Solutions for Modern Enterprises

- Unified Communication Solution for Modern Enterprises
- IP PBX with in skin support for Multiple Interfaces
- The Smart Video IP Deskphone
- Universal Media Gateways
- 4G GSM/Volte-SIM Compatible FCT with Battery Backup

www.MatrixTeleSol.com

Available on GeM Government e Marketplace

MATRIX
TELECOM | SECURITY

MATRIX COMSEC

394-GIDC, Makarpura, Vadodara-390 010, India.
Call: **(+91) 1800-258-7747**
E-mail: **Inquiry@MatrixComSec.com**

www.MatrixComSec.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

फरवरी 2019

आरंभ : 1960 | वर्ष : 59 | अंक : 7 | मूल्य : ₹10

संपादक मंडल

विनोद कुमार यादव
अध्यक्ष

ए.के. प्रसाद
वित्त आयुक्त (रेलवे)

सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव

राजेश दत्त बाजपेई
निदेशक (सूचना एवं प्रचार)

योगेश अवस्थी
संपादक

संपादकीय कार्यालय

सम्पादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
रेलवे टेली - 44519, 9666
(मो.) 9717641075,9909909966
ई-मेल
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन :
23303665, 23382531
रेलवे टेली. : 43665/9669
(मो.) : 9717647367

सदस्यता शुल्क :

सर्वसाधारण - ₹ 100,
रेलकर्मियों के लिए - ₹ 90

उप संपादक : दिनेश
संपादन सहयोग : रणमत सिंह

आवरण :
रेल मंत्रालय की झांकी
'मोहन से महात्मा'

Twitter
@bhartiyarailrb
Facebook
www.facebook.com/
bhartiyarailpatrika
Instagram
bhartiyarailpatrika

7 प्रधानमंत्री द्वारा टाटानगर-बादामपहाड़ डेमू पैसेंजर का शुभारंभ
8 भारतीय रेल की कंपनी कॉनकोर ने समुद्र-तटीय संचालन
9 मध्य रेल की पहली मुंबई-दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस का शुभारंभ एवं अन्य यात्री सुविधाओं का उद्घाटन, लोकार्पण एवं शिलान्यास

प्रधानमंत्री द्वारा ओडिशा में विभिन्न रेल परियोजनाओं की शुरुआत - 7

सरकार ने वर्ष 2019-20 में रेलवे के लिए 64,587 करोड़ रुपए आवंटित किए - 10

मनोज सिन्हा द्वारा हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर यात्री सेवाओं का लोकार्पण - 17

12 रेल मंत्री ने रेलवे बोर्ड, क्षेत्रीय महाप्रबंधकों व मंडल प्रबंधकों के संग उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की
18 रेल राज्य मंत्री द्वारा भारतीय रेल के ब्रॉड गेज लाइन के अंतिम मानव रहित समपार की समाप्ति की घोषणा
19 राजेन गोहांई ने सिलघाट-कोलकाता एक्सप्रेस को हरी...
19 अध्यक्ष रेलवे बोर्ड ने उत्तर रेलवे मुख्यालय में...
20 सांसद
22 सदस्य कर्षण द्वारा डीरेका निर्मित 100वां विद्युत रेल इंजन 'शतक' राष्ट्र को समर्पित

गणतंत्र दिवस परेड - 28

23 गणतंत्र दिवस के परेड पर रेल सुरक्षा बल के नए विन्यास चिन्ह...
24 सतर्क प्रहरी
25 पश्चिमी डेडीकेटेड फेट कॉरीडोर के 306 किमी मदार (अजमेर)-न्यू रेवाड़ी-किशनगढ़ बालावास सेक्शन का कार्य पूर्ण
26 सफेद बर्फ से ढकी कश्मीर घाटी में भारतीय रेल

तिनसुकिया रेलवे हेरिटेज पार्क - 30

35 भारतीय रेल की प्रतिष्ठित पर्यटन रेलगाड़ियां *विमलेश चन्द्र*
40 चारधाम यात्रा *जे.पी. पाण्डेय*
44 ट्रेन-18 की छोटी बहन एमईएमयू
46 अंतरराष्ट्रीय पतंगोत्सव
48 हरित पहल
49 रेलों के अंचल से
57 मध्य रेल पर ईएमयू सेवा के गौरवशाली 94 साल पूरे
58 बदलाव की हलचल, श्रेष्ठ कुम्भ (कविता) *शैलेन्द्र कपिल*

भारतीय रेल हुई मानव रहित रेल समपार से मुक्त

भारतीय रेल के लिए ब्रॉडगेज लाइन पर मानव रहित रेल समपार (फाटक) अब अतीत बन चुके हैं। यह ऐतिहासिक दिन था 2 फरवरी, 2019 और अंतिम मानव रहित समपार था इलाहाबाद मंडल का चुनार-चोपन रेलखंड पर (समपार संख्या 28-सी), जो अब मानव सहित समपार हो गया है। यहाँ पर गौरतलब है कि इस समस्या के कारण हर वर्ष कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता था।

मानव रहित रेल फाटक को खत्म करने के प्रयास पिछले कई सालों से किये जा रहे थे, लेकिन सही मायनों में इस कार्य में प्रगति पिछले एक-दो सालों में ही देखने को मिली। भारतीय रेल की ब्रॉडगेज लाइन पर 4605 मानव रहित रेल फाटक थे। स्थानीय लोगों के लिए आवागमन का भी यही रास्ता था। साथ ही सुरक्षित एवं सुचारू रूप से रेल यातायात भी चलाना था। इन फाटकों को खत्म करना कोई आसान काम नहीं था।

लोगों को इस प्रकार के मानव रहित रेल फाटकों से आवागमन के समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसके लिए रेलवे द्वारा विशेष जागरूकता अभियान चलाये जा रहे थे। इन सब के बावजूद भी लोग अपनी जान की परवाह किये बिना, आती ट्रेन को नजरअंदाज कर ट्रैक से वाहन गुजारने की खतरनाक कोशिश करते थे।

पहले रेलवे ने मानव रहित रेल फाटक मुक्त बनाने का लक्ष्य मार्च, 2020 रखा था। कार्य भी चल ही रहा था। लेकिन अचानक अप्रैल, 2018 में कुशीनगर में ऐसे ही एक फाटक पर हुए हादसे में 13 लोग, जिसमें ज्यादातर बच्चे थे की मौत हो गई। इस घटना के तुरंत बाद रेल मंत्री पीयूष गोयल ने इस प्रकार के फाटकों को सितम्बर, 2019 तक खत्म करने के आदेश दिये। यह आंकड़े ही बता रहे हैं कि रेलवे ने इस कार्य को किस तेज गति से किया है, वर्ष 2015-16 में 1253 तथा पिछले साल सभी संभागों में 3478 मानव रहित फाटक खत्म किये गये। पिछले सात महीने में यह कार्य पिछले सालों की तुलना में पांच गुणा तेजी से किया गया। जागरूकता अभियान तथा इस प्रकार के फाटक कम करने के कार्य के कारण ही इस प्रकार के फाटकों पर हुए हादसों तथा उसमें मरने वाले लोगों की संख्या में भारी कमी दर्ज की गई। 2009-10 में ऐसे हादसों में 65 लोगों की मौत हुई थी। 2018-19 में यह आंकड़ा केवल 3 रह गया।

रेलवे ने इस प्रकार के फाटकों को दूर करने के लिए एक कार्य योजना बनाई, जिसमें जिन मानव रहित रेल समपारों पर रेलों का आवागमन कम या नगण्य था, उन्हें बंद कर दिया गया। वैकल्पिक रास्तों का निर्माण करके इन फाटकों को निकट वाले फाटक से जोड़ा गया या सब-वे, रोड अंडर ब्रिज की व्यवस्था की गई। जिन मानव रहित फाटकों को उपरोक्त माध्यम से समाप्त करना संभव नहीं था, उन फाटकों पर रेलकर्मी की नियुक्ति की गई।

इस विशेष अभियान के तहत कई स्थानों पर छोटे एवं मध्यम प्रकार के तैयार सब-वे को, ज्यादा ट्रेन आवागमन को प्रभावित किये बिना, इन्स्टॉल कर दिए गए। पूर्व तट रेलवे के संबलपुर मंडल ने कुछ ही घंटों में अपने क्षेत्र में 6 सीमित ऊंचाई वाले सब-वे का इन्स्टॉलेशन किया, जिसकी प्रशंसा सोशल मीडिया तथा देश के मीडिया ने दिल खोल कर की। मध्य रेल, पूर्व रेलवे, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे तथा पश्चिम मध्य रेलवे, जैसे चार रेलवे ने एक साल पहले ही अपनी रेलवे को मानव रहित फाटक मुक्त कर लिया था।

इलाहाबाद मंडल के चुनार-चोपन रेलखंड के गेट नं. 28-सी पर एकमात्र मानव रहित रेल समपार शेष था, जिसकी घोषणा दो फरवरी को रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा द्वारा मानव सहित रेल समपार के रूप में की गई।

वित्त, कॉरपोरेट मामले, रेल और कोयला मंत्री पीयूष गोयल ने 1 फरवरी को संसद में अंतरिम बजट 2019-20 पेश करते हुए कहा कि ''भारतीय रेल के इतिहास में यह वर्ष सर्वाधिक सुरक्षित वर्ष रहा है। ब्रॉडगेज लाइनों पर सभी मानव रहित लेवल क्रॉसिंग को समाप्त कर दिया गया है। पहली देश में ही विकसित और विनिर्मित सेमी हाई स्पीड 'वंदे भारत एक्सप्रेस' को चलाने से भारतीय यात्रियों को गति, सेवा और सुरक्षा का विश्वस्तरीय अनुभव प्राप्त होगा। हमारे इंजीनियरों द्वारा पूर्णत: विकसित प्रौद्योगिकी में यह बड़ी छलांग मेक इन इंडिया को गति प्रदान करेगी और रोजगार सृजित करेगी।''

अंत में, 70वें गणतंत्रता दिवस पर भारतीय रेल की झांकी 'मोहन से महात्मा' ने लोगों को काफी आकर्षित किया। इस झांकी में आगे वाष्प इंजन तथा पीछे के तीन कोचों में गांधी की जीवनी प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया।

खुश रहें, स्वस्थ रहें, सदा अपने आसपास सफाई बनाये रखें। ■

प्रधानमंत्री द्वारा ओडिशा में विभिन्न रेल परियोजनाओं की शुरुआत

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 जनवरी को ओडिशा के बलांगीर में 1500 करोड़ रुपए की लागत वाली अनेक विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया और इसके साथ ही कई परियोजनाओं की आधारशिला रखी। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने झारसुगुड़ा में मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क राष्ट्र को समर्पित किया। 115 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत वाली बलांगीर-बिछूपाली रेल लाइन का उद्घाटन किया।

बलांगीर-बिछूपाली नई रेलवे लाइन को हरी झंडी दिखाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, साथ में हैं ओडिशा के राज्यपाल प्रोफेसर गणेशी लाल, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस तथा कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, जनजातीय कार्यमंत्री जुएल ओराम

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन मे कहा कि 'सरकार पूर्वी भारत और ओडिशा के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। बलांगीर में अनेक विकास परियोजनाओं का शुभारंभ इस दिशा में एक ठोस कदम है।' प्रधानमंत्री ने इसके साथ ही नागावेली नदी पर बने नये पुल, बरपली एवं डुंगरीपली और बलांगीर देवगांव रोड रेल लाइन के दोहरीकरण और 813 किमी लंबी झारसुगुड़ा-विजयनगरम् और संबलपुर-अनुगुल लाइन के विद्युतीकरण को भी राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने कनेक्टिविटी और शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, ''शिक्षा से मानव संसाधन का विकास होता है और ये संसाधन तब अवसर में तब्दील होते हैं, जब उसे कनेक्टिविटी का सहारा मिलता है। छह रेल परियोजनाओं का उद्घाटन कनेक्टिविटी बढ़ाने की दिशा में हमारा एक ठोस प्रयास है। इससे लोगों को आवाजाही में सुविधा होगी, उद्योग जगत के लिए खनिज संसाधन और ज्यादा सुगम्य हो जाएंगे और इससे किसानों को दूरदराज के बाजारों में भी अपनी उपज को ले जाने में मदद मिलेगी, जिससे ओडिशा के नागरिकों के लिए जीवन यापन और ज्यादा आसान हो जाएगा।''■

प्रधानमंत्री द्वारा टाटानगर-बादामपहाड़ डेमू पैसेंजर का शुभारंभ

बारीपदा, ओडिशा से वीडियो लिंक के द्वारा टाटानगर-बादामपहाड़ डेमू पैसेंजर ट्रेन का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं अन्य गणमान्य अतिथि

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 5 जनवरी को बारीपदा, ओडिशा से वीडियो लिंक के द्वारा टाटानगर-बादामपहाड़ डेमू पैसेंजर ट्रेन का शुभारंभ किया गया। प्रधानमंत्री ने पूर्व तट रेलवे के अधिकार क्षेत्र के तहत कुछ रेल परियोजनाओं को भी राष्ट्र को समर्पित किया। उन्होंने ओडिशा में कई विकास कार्यों का उद्घाटन किया एवं आधारशिला रखी।

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल, झारखंड, रघुवर दास, मुख्यमंत्री, झारखंड, विद्युत वरण महतो, सांसद, रामचंद्र सहिस, विधायक एवं श्रीमती मेनका सरदार, विधायक टाटानगर रेलवे स्टेशन पर आयोजित समारोह में उपस्थित थे। यह ट्रेन बादामपहाड़ एवं इसके आसपास के इलाके के लोगों के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगी और उन्हें टाटानगर-मुंबई रूट पर टाटानगर के लिए सीधी ट्रेन मिलेगी। नई ट्रेन तीव्र गति से सामाजिक एवं आर्थिक विकास को सुनिश्चित करेगी। ■

लोकसभा अध्यक्ष द्वारा पश्चिम रेलवे की पहली हेरिटेज सेक्शन ट्रेन राष्ट्र को समर्पित तथा इंदौर–दिल्ली सराय रोहिल्ला ट्रेन का शुभारंभ

लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने 18 जनवरी, 2018 को इंदौर रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में 100 फीट का एक विशालकाय राष्ट्रीय ध्वज फहराया। पश्चिम रेलवे के पहले हेरिटेज खंड पातालपानी–कालाकुंड पर एक विशेष हेरिटेज ट्रेन की शुरुआत की।

इसके अतिरिक्त ट्रेन नं. 19333/19334 इंदौर–बीकानेर एक्सप्रेस, 19336/ 19335 इंदौर–गांधीधाम एक्सप्रेस के शुभारंभ की घोषणा के साथ ही ट्रेन नं. 19313/19314 इंदौर–पटना एक्सप्रेस की बारम्बारता में वृद्धि करते हुए इसे साप्ताहिक से द्वि–साप्ताहिक करने और ट्रेन नं. 19329 इंदौर–उदयपुर वीर भूमि एक्सप्रेस की समय–सारणी में परिवर्तन करने की घोषणा की। नई ट्रेन 19337/19338 इंदौर–दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस को झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस समारोह में सांसद श्रीमती सावित्री ठाकुर पश्चिम रेलवे के अपर महाप्रबंधक राहुल जैन सहित गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। ■

भारतीय रेल की कंपनी कॉनकोर ने समुद्र–तटीय संचालन सेवा की शुरुआत की

रेल और कोयला मंत्री पीयूष गोयल और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, जहाजरानी और जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्री नितिन गडकरी ने रेल मंत्रालय की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी कंटेनर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (कॉनकोर) की पहली समुद्र यात्रा पर जहाज एसएसएल मुम्बई को नई दिल्ली के परिवहन भवन से वीडियो कांफ्रेंस के जरिये 10 जनवरी को कांडला बंदरगाह पर मौजूद सांसद विनोद चावड़ा की उपस्थिति में रवाना किया। इस मौके पर सदस्य यातायात, रेलवे बोर्ड गिरीश पिल्लई, जहाजरानी मंत्रालय में सचिव गोपाल कृष्ण, कॉनकोर के सीएमडी वी.कल्याण रामा और रेल एवं जहाजरानी मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

कॉनकोर की पहली तटीय जलयात्रा को वीडियो कांफ्रेंसिंग द्वारा हरी झंडी दिखा कर रवाना करते हुए रेल मंत्री पीयूष गोयल, साथ में हैं सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, जहाजरानी और जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्री नितिन गडकरी

इस अवसर पर पीयूष गोयल ने कॉनकोर और जहाजरानी मंत्रालय को इस संयुक्त उपक्रम के लिए बधाई देते हुए कहा कि रेलवे ने पिछले चार साल में कई नये सुधार किए हैं। उसी श्रृंखला में यह एक और कदम है। कॉनकोर द्वारा शुरू की गई नई सेवा से किफायती तौर पर विभिन्न स्थानों पर समान भेजना काफी फायदेमंद होगा और इससे रेल मार्ग और सड़क पर भार भी कम होगा। सरकार का लक्ष्य विशाल भारतीय रेल नेटवर्क का पूरी तरह से विद्युतीकरण करना है। श्री गोयल ने बताया कि सड़क और रेल मंत्रालय की संयुक्त कोशिशों की वजह से ही हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा बोगीबिल पुल का उद्घाटन करना संभव हो पाया।

इस अवसर पर श्री गडकरी ने कहा कि भारत के परिवहन इतिहास में यह क्रांति का दिन है। रेलवे और तटीय शिपिंग का यह जुड़ाव दोनों के लिए अच्छी स्थिति है, क्योंकि इससे रेलवे की माल ढुलाई क्षमता बढ़ेगी और स्टील, सीमेंट और अन्य सामानों को तटीय व्यापार के जरिये लाने–ले जाने की सुविधा और बढ़ेगी और इस तरह तटीय व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।

कॉनकोर की 10 जनवरी से शुरू हुई यह तटीय संचालन सेवा साप्ताहिक होगी, जो कांडला बंदरगाह से मेंगलौर बंदरगाह एवं कोच्चि बंदरगाह से होते हुए तूतीकोरिन बंदरगाह तक होगी। ■

मध्य रेल की पहली मुंबई–दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस का शुभारंभ एवं अन्य यात्री सुविधाओं का उद्घाटन, लोकार्पण एवं शिलान्यास

मध्य रेल की पहली मुंबई–दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए रेल मंत्री पीयूष गोयल, साथ में हैं सामाजिक न्याय एवं रोजगार राज्य मंत्री रामदास आठवले एवं अन्य गणमान्य अतिथि

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई में आयोजित समारोह में रेल एवं कोयला मंत्री पीयूष गोयल, राज्य मंत्री सामाजिक न्याय एवं रोजगार रामदास आठवले, शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र एवं पालक मंत्री मुंबई उपनगर, विनोद तावडे, चिकित्सा शिक्षा, बंदरगाह, सूचना प्रौद्योगिकी, खाद्य एवं लोक आपूर्ति तथा उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री, महाराष्ट्र एवं पालक मंत्री रायगढ़, रवींद्र चव्हाण, सांसद, अरविंद सावंत, गोपाल शेट्टी, राहुल शेवाले, विधायक, आशीष शेलार, राज पुरोहित, पी. सेल्विन, अतुल शाह ने मुंबईकरों के लिए विभिन्न यात्री सुविधाओं का उद्घाटन, लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक, मध्य रेल, डी.के. शर्मा, महाप्रबंधक, पश्चिम रेल, ए.के. गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई मंडल, एस. के. जैन एवं अन्य रेलकर्मी उपस्थित थे।

मुंबई छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस–हजरत निजामुद्दीन के बीच चलने वाली पहली राजधानी एक्सप्रेस को रेलमंत्री ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया तथा इस अवसर पर कहा कि लगभग 27 साल बाद मुंबई से मध्य रेल रूट पर पहली राजधानी शुरू की गई है। इस गाड़ी की बुकिंग मात्र 5 घंटे में फुल हो गई। अभी यह सप्ताह में दो दिन चलती है इसकी फ्रीक्वेंसी बढ़ाने पर विचार करेंगे। इसके बाद रोहा से दिवा–पनवेल–रोहा खंड पर मेमु सेवाएं एवं पुणे–कर्जत–सवारी गाड़ी का पनवेल तक विस्तारित सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पेण–रोहा विद्युतीकरण एवं पनवेल स्टेशन पर 2 एस्केलेटर का उद्घाटन किया।

रामदास आठवले ने छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई सेंट्रल एवं लोकमान्य तिलक टर्मिनस पर स्मारकीय हाय मास्ट ध्वज का लोकार्पण किया। रवींद्र चव्हाण ने बेलापुर, तलोजा, प्रभादेवी, माटुंगा रोड, जोगेश्वरी, गोरेगांव, विरार, मलाड स्टेशनों पर पैदल ऊपरी पुल एवं रोहा, पेण एवं आपटा–ग्रीन स्टेशन का लोकार्पण किया। इसके बाद बांद्रा टर्मिनस, अंधेरी एवं बोरीवली स्टेशन पर लिफ्ट का लोकार्पण सांसद गोपाल शेट्टी ने किया, पनवेल स्टेशन के सरक्यूलेटिंग एरिया में सुधार का लोकार्पण सांसद अरविन्द सावंत ने किया, पश्चिम रेलवे के मुंबई उपनगरीय स्टेशनों पर 40 अतिरिक्त एटीवीएम एवं दादर, लोकमान्य तिलक टर्मिनस, ठाणे एवं कल्याण स्टेशन पर प्रकाश व्यवस्था में सुधार का लोकार्पण सांसद राहुल शेवाले ने किया। घाटकोपर स्टेशन पर नए एलईडी आधारित आधुनिक इंडिकेटर का लोकार्पण राजपुरोहित विधायक ने किया।

रोहा–दिवा मेमू सर्विस के शुभारंभ के उपलक्ष्य में अनंत गीते, भारी उद्योग और सार्वजनिक उपक्रम मंत्री, भारत सरकार, रोहा स्टेशन पर एवं पुणे–कर्जत–पनवेल सवारी गाड़ी की विस्तारित सेवा के शुभारंभ के उपलक्ष्य में प्रशांत ठाकुर, विधायक पनवेल में उपस्थित थे। ■

22221/22222 का विवरण

ट्रेन नंबर 22221 मुंबई–हजरत निजामुद्दीन राजधानी एक्सप्रेस (सप्ताह में दो दिन) छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई से प्रत्येक बुधवार और शनिवार को 14.50 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 10.20 बजे हजरत निजामुद्दीन पहुंचेगी।

ट्रेन नंबर 22222 हजरत निजामुद्दीन–मुंबई द्वि–साप्ताहिक राजधानी एक्सप्रेस (सप्ताह में दो दिन) प्रत्येक गुरुवार और रविवार को हजरत निजामुद्दीन से प्रस्थान कर अगले दिन 11.55 बजे छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई पहुंचेगी।

हाल्ट: कल्याण, नासिक रोड, जलगाँव, भोपाल, झाँसी और आगरा कैंट।

सरकार ने वर्ष 2019–20 में रेलवे के लिए 64,587 करोड़ रुपए आवंटित किए

1 फरवरी को नई दिल्ली में अंतरिम बजट 2019–20 पेश करने के लिए नार्थ ब्लॉक से राष्ट्रपति भवन और संसद भवन के लिए जाते हुए, रेल, कोयला, वित्त और कॉरपोरेट मामलों के मंत्री, पीयूष गोयल, साथ में हैं वित्त और जहाजरानी राज्य मंत्री, पी. राधाकृष्णन, वित्त राज्य मंत्री, शिव प्रताप शुक्ला एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

वित्त, कॉरपोरेट मामले, रेल और कोयला मंत्री पीयूष गोयल ने संसद में अंतरिम बजट 2019–20 पेश करते हुए कहा कि भारतीय रेल के इतिहास में यह वर्ष सर्वाधिक सुरक्षित वर्ष रहा है। ब्रॉड गेज लाइनों पर सभी मानवरहित लेवल क्रॉसिंग को समाप्त कर दिया गया है। पहली देश में ही विकसित और विनिर्मित सेमी हाई स्पीड 'वंदे भारत एक्सप्रेस' को चलाने से भारतीय यात्रियों को गति, सेवा और सुरक्षा का विश्व स्तरीय अनुभव प्राप्त होगा। हमारे इंजीनियरों द्वारा पूर्णत: विकसित प्रौद्योगिकी में यह बड़ी छलांग मेक इन इंडिया को गति प्रदान करेगी और रोजगार सृजित करेगी। रेलवे के लिए बजट से वर्ष 2019–20 (ब.अ.) में ₹ 64,587 करोड़ की पूंजीगत सहायता का प्रस्ताव है। रेलवे का समग्र पूंजी व्यय कार्यक्रम ₹1,58,658 करोड़ है। प्रचालन अनुपात वर्ष 2017–18 के 98.4 से सुधरकर वर्ष 2018–19 (सं.अ.) में 96.2 प्रतिशत तथा आगे और अधिक बेहतर होकर वर्ष 2019–20 (ब.अ.) में 95 प्रतिशत होने की संभावना है। 'बुनियादी ढांचा किसी भी राष्ट्र के विकास और बेहतर जीवन स्तर की रीढ़ है। चाहे यह राजमार्ग हो या रेलवे अथवा हवाई मार्ग या डिजी–वे हो, हमने वृद्धिपरक विकास से भी कहीं आगे बढ़कर रूपांतरकारी उपलब्धियां हासिल की हैं।'

पूर्वोत्तर क्षेत्र में बुनियादी ढांचागत सुविधाएं : कई दशकों से अटकी पड़ी कई परियोजनाएं अब पूरी कर ली गई हैं जिनमें दिल्ली के आसपास स्थित ईस्टर्न पेरिफेरल हाईवे और असम एवं अरुणाचल प्रदेश में बोगीबील रेल–सह–सड़क पुल भी शामिल हैं। देश के तटीय क्षेत्रों से जुड़े प्रमुख कार्यक्रम 'सागरमाला' से ऐसे बंदरगाहों का विकास संभव हो पाएगा जहां आयात एवं निर्यात कारगो का त्वरित संचालन हो सकेगा। पहली बार कोलकाता से वाराणसी तक अंतर्देशीय जल मार्ग पर कंटेनर फ्रेट की ढुलाई शुरू हुई है। वित्त मंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ब्रह्मपुत्र नदी की नौवहन क्षमता बढ़ाकर पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए भी कंटेनर कारगो की आवाजाही की शुरुआत करेगी।

वित्त मंत्री ने घोषणा करते हुए कहा कि इस अंतरिम बजट में आधारभूत विकास का महत्त्वपूर्ण लाभ पूर्वोत्तर के लोगों को मिला है। अरुणाचल प्रदेश में हाल ही में विमान सेवा शुरू की गई है और मेघालय, त्रिपुरा तथा मिजोरम को पहली बार भारतीय रेल के नक्शे पर स्थान मिला है। ■

अंतरिम के बजट के पश्चात् रेल भवन में पत्रकारों को संबोधित करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, वित्त आयुक्त (रेलवे) ए.के. प्रसाद, सदस्य यातायात, गिरीश पिल्लई, सदस्य इंजीनियरी, विश्वेश चौबे, सदस्य कर्षण, घनश्याम सिंह, सदस्य चल स्टॉक, राजेश अग्रवाल, सदस्य कार्मिक, एस.एन. अग्रवाल, अपर महानिदेशक जन संपर्क श्रीमती स्मिता वत्स शर्मा

रेल मंत्री ने रेलवे बोर्ड, क्षेत्रीय महाप्रबंधकों व मंडल प्रबंधकों के संग उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की

रेल एवं कोयला मंत्री पीयूष गोयल ने 3 जनवरी को रेल भवन में रेलवे बोर्ड, सभी महाप्रबंधकों और सभी 68 मंडल प्रबंधकों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। सभी डीआरएम के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बात की गई।

रेल भवन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए महाप्रबंधकों एवं मंडल रेल प्रबंधकों के साथ समीक्षा बैठक करते हुए रेल एवं कोयला मंत्री पीयूष गोयल, साथ में हैं अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड विनोद कुमार यादव

मौजूदा वर्ष के दौरान कामकाज की समीक्षा करते हुए मंत्री ने आगामी जनवरी–मार्च, 2019 तिमाही के लिए रोडमैप तैयार करने का निर्देश दिया। उन्होंने रेल परियोजनाओं और गतिविधियों की कड़ी निगरानी और उन्हें समय पर पूरा किये जाने पर बल दिया।

वर्तमान वर्ष में अब तक के कामकाज समीक्षा करते हुए रेल मंत्री ने आगामी जनवरी–मार्च, 2019 के रोडमैप के लिए निर्देश दिए, जो इस प्रकार हैं :

समयबद्ध कार्य : रेल मंत्री ने उच्च रेल अधिकारियों का आह्वान किया कि वे समयबद्ध तरीके से विभिन्न परियोजनाओं और गतिविधियों को पूरा करने के लिए कमर कस लें और निर्धारित तारीख का पालन करें। उन्होंने कहा कि सुरक्षा, यात्री सुविधा, सेवा, राजस्व, अवसंरचना विकास, स्टाफ कल्याण और कामकाज के हर स्तर पर पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए।

ऑनलाइन निगरानी : परियोजनाओं को समय पर पूरा करने की जरूरत पर जोर देते हुए श्री गोयल ने कहा कि प्रगति की सख्त निगरानी भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। 15 जनवरी, 2019 तक एक एकीकृत डैशबोर्ड पोर्टल शुरू कर दिया जाए। प्रयास किए जाएं कि आम जनता को भी इस डैशबोर्ड तक पहुंच मिले। काम शुरू होने के पहले और पूरा होने के बाद की तस्वीरों को नियमित रूप से डैशबोर्ड पर अपलोड किया जाए।

समर्पित माल कॉरीडोर की शुरुआत : श्री गोयल ने कहा कि इस तिमाही में 777 किमी पूर्वी और पश्चिमी डीएफसी को चालू करना सुनिश्चित किया जाए।

खान–पान व्यवस्था में सुधार : रेल मंत्री ने कहा कि सभी खान–पान स्टाफ और टीटीई को 31 मार्च, 2019 तक स्वाइप और बिल जनरेटिंग मशीन के साथ पीओएस मशीनें वितरित की जाएं। खान–पान व्यवस्था वाली सभी गाड़ियों में सामग्री की कीमतों की सूची लगाई जाए, जिसमें जीएसटी भी शामिल हो। यह सूची टिन–प्लेट पर छापी जाए और उसे मार्च, 2019 तक उपलब्ध करा लिया जाए। टिन–प्लेट पर यह पंक्ति भी लिखी जाए – 'कृपया टिप ना दें, यदि बिल नहीं दिया गया है, तो आपका भोजन नि:शुल्क होगा।'

पारदर्शी आरक्षण प्रणाली : टिकट बुकिंग को और अधिक पारदर्शी बनाने के दृष्टिकोण से मंत्रिमंडल ने निर्देश दिये हैं कि आरक्षण चार्ट को पब्लिक डोमेन में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अगर सीट उपलब्ध है तो रेलों के निर्धारित प्रस्थानों या ट्रेन में चढ़ने के बाद भी टिकटों की बुकिंग की संभावना का पता लगाया जाना चाहिए।

वाईफाई : यह उल्लेख करते हुए रेल मंत्री ने कहा कि 723 रेलवे स्टेशनों को उपलब्ध कराई गई वाईफाई सेवा से जनता को बहुत लाभ पहुंच रहा है, उन्होंने निर्देश दिया कि निकट भविष्य में पूरे देश के कम से कम 2,000 रेलवे स्टेशनों को वाईफाई सेवा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। सभी स्टेशनों पर यह सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। मंडल रेल प्रबंधकों को स्टेशनों पर वाईफाई कार्य के जल्दी समापन पर पुरस्कृत किया जायेगा।

सिंगल हेल्प लाइन नंबर : श्री गोयल ने कहा कि जनवरी के अंत तक यात्रियों की सुविधा के लिए गैर–सुरक्षा शिकायतों के लिए एक सिंगल हेल्प लाइन नंबर विकसित किया जाना चाहिए।

राजस्व जुटाना : राजस्व जुटाने के बारे में श्री गोयल ने कहा कि वृद्धि के आधार पर माल लोडिंग करने के प्रयास किये जाने चाहिए। गैर किराया राजस्व जुटाने के प्रयास भी किये जाने चाहिए। स्क्रैप के निपटान से राजस्व जुटाने के लक्ष्यों को बढ़ाया जाना चाहिए और सभी संभागों को इस

वित्त वर्ष के अंत तक, जीरो स्क्रैप बैलेंस अर्जित करने के लिए प्रयास करने चाहिए।

स्टेशन विकास : स्टेशन विकास का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 68 स्टेशनों पर पुनर्विकास फरवरी-2019 तक किया जाना चाहिए, जिसमें वर्तमान फोटोग्राफरों के साथ एकीकृत-बोर्ड सहित उनकी प्रगति की निगरानी करने का भी प्रावधान होना चाहिए।

ट्रेन उन्नयन : ट्रेन उन्नयन पर जोर देते हुए मंत्री ने कहा कि रेट्रो-फिटमेंट और स्वर्ण और उत्कृष्ट रेक्स का कार्य प्राथमिकता के आधार पर तेजी से पूरा किया जाना चाहिए। हाल में विकसित विस्टाडोम डिब्बों का उल्लेख करते हुए कहा कि पर्यटकों के लिए ग्लास और सीसे की बॉडी वाले डिब्बे अधिक मार्गों पर चलाये जाने चाहिए।

स्वच्छता : शौचालयों के बारे में उन्होंने कहा कि सभी पूरे हुए शौचालयों के फोटोग्राफ 4 जनवरी, 2019 से अपलोड किये जायें। सभी शौचालय साफ-सुथरे हों और उनमें पानी की उचित आपूर्ति हो तथा कहीं से टूट-फूट न हो। सभी नये डिब्बों में बायो-वेक्यूम शौचालय उपलब्ध कराने के प्रयास किये जाने चाहिए।

तेज गति की रेलें : श्री गोयल ने कहा कि एक आगे और एक पीछे, दो इंजनों वाली राजधानी ट्रेनों के परीक्षण का काम समय पर पूरा होना चाहिए ताकि राजधानी ट्रेनों से यात्रा करने में लगने वाले समय में कटौती हो।

स्टेशन सुधार : एलईडी लाईटिंग, किचन और विश्रामगृह में सीसीटीवी लगाने जैसी गतिविधियों से रेलवे स्टेशनों और उसके आस-पास सुंदरता और बुनियादी ढांचे में सुधार लाने, ए-वन श्रेणी के स्टेशनों पर लंबे राष्ट्रीय ध्वज लगाना, हाल के वर्षों में रेल की उपलब्धियों के बारे में होर्डिंग लगाने का काम समय पर पूरा होना चाहिए। 100 स्टेशनों पर श्री-डी डिजिटल संग्रहालयों का काम निश्चित समय में पूरा होना चाहिए। सभी डीआरएम और जीएम के विचार गुड-वर्क्स पोर्टल पर होने चाहिए।

कर्मचारी कल्याण : कर्मचारी कल्याण के बारे में उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य देखभाल अधिक प्रभावी तरीके से उपलब्ध कराई जानी चाहिए। आरपीएफ बैरकों का उन्नयन समयबद्ध रूप से किया जाना चाहिए। कुलियों के कल्याण की योजना बनाने का भी उन्होंने निर्देश दिया। ऑटो-मेटिक कोच धुलाई-संयत्र और त्वरित जल सुविधाओं के कारण जल्द से जल्द पूरे किये जाने चाहिए। ■

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 30 जनवरी को रेल, ऊर्जा, कोयला, वित्त और कॉरपोरेट मामलों के मंत्री, पीयूष गोयल ने अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव के साथ अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) रिपोर्ट 'द फ्यूचर ऑफ रेल' का शुभारंभ किया

कुसुंदा-सोनारदीह को रेल यातायात के लिए खोला जाएगा

पूर्वी मध्य रेलवे के धनबाद डिवीजन की धनबाद-चंद्रपुरा रेलवे लाइन झरिया कोयला क्षेत्र से गुजरती है। खान सुरक्षा महानिदेशक (डीजीएमएस) की रिपोर्ट पर 15 जून, 2017 को इस लाइन पर यात्री और मालगाड़ियों का परिचालन रोक दिया गया था। बाद में डीजीएमएस के प्रमाण पत्र पर धनबाद-कुसुंदा, सोनारदीह-चंद्रपुरा और कटरासगढ़-निश्चितपुर लिंक लाइन को जून से नवम्बर, 2017 के बीच यातायात के लिए खोल दिया गया था। डीजीएमएस के साथ संयुक्त निरीक्षण के बाद हाल ही में रेलवे सुरक्षा के मुख्य आयुक्त ने कुसुंदा-सोनारदीह के बीच शेष सेक्शन को मालगाड़ियों और यात्री ट्रेनों के लिए फिर से खोलने की अनुमति दे दी। इस लाइन की मरम्मत और पुनर्सुधार की आवश्यकता है। इन कार्यों के पूरा होने के बाद इस सेक्शन को पूर्वी मध्य रेलवे द्वारा यातायात के लिए खोल दिया जाएगा। ■

रेलवे सुरक्षा पर अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन

रेलवे सुरक्षा पर अखिल भारतीय सम्मेलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रेल एवं कोयला मंत्री पीयूष गोयल, साथ में हैं गृह मंत्री राजनाथ सिंह, रेल राज्य मंत्री एवं संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मनोज सिन्हा एवं रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव

16 जनवरी को रेल मंत्रालय द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में रेलवे सुरक्षा के बारे में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। गृहमंत्री राजनाथ सिंह, रेल और कोयला मंत्री पीयूष गोयल, रेल राज्य मंत्री एवं संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मनोज सिन्हा, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, गृह सचिव राजीव गोबा, सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे। इस सम्मेलन में 23 राज्यों और दो केन्द्र शासित राज्यों के पुलिस प्रमुखों और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें रेलवे सुरक्षा तंत्र की सुरक्षा की तैयारियों की पहचान और समीक्षा करने का अवसर प्रदान कर रहा है। इससे यह भी पता चलेगा कि हमारे सुरक्षा बल यात्रियों की कितनी बेहतर सेवा कर सकते हैं।

इस अवसर पर श्री गोयल ने किसी भी स्थिति में देश की सेवा करने में बहादुरी और साहस का प्रदर्शन करने के लिए अर्द्धसैनिक बलों को बधाई दी। उन्होंने यात्रा करते समय यात्रियों में आत्मविश्वास बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया और आरपीएफ के लोगों से यात्रियों के साथ मित्रवत व्यवहार करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि स्टेशनों के लिए 6 हजार सीसीटीवी कैमरे खरीदे जा रहे हैं और साइबर अपराध कक्षों को क्रियात्मक बनाया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि रेल यात्रा को सबसे सुरक्षित बनाने के लिए ठोस प्रयास किए जाने चाहिए और अपराधों को घटित न होने देने का लक्ष्य होना चाहिए।

श्री सिन्हा ने कहा कि पिछले वर्षों के दौरान आरपीएफ के कार्यप्रदर्शन, यात्रियों के साथ मित्रवत व्यवहार और संवेदनशीलता में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों की तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देना समय की जरूरत है। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव ने पूरे नेटवर्क में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा किए जा रहे विशिष्ट कार्यों की सराहना की। आरपीएफ के महानिदेशक अरुण कुमार ने अपने विचार प्रस्तुत किये। ■

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 30 जनवरी को पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय स्थित ऊर्जा नीति के लिए क्लीमैन सेंटर से 'कारनोट पुरस्कार' प्राप्त करते हुए रेल, कोयला, वित्त और कॉरपोरेट मामलों के मंत्री, पीयूष गोयल

रेल मंत्री ने 22 जोड़ी रेल सेवाओं का विस्तार करने की घोषणा की

22 जोड़ी रेल सेवाओं का विस्तार करने की घोषणा करते हुए रेल मंत्री पीयूष गोयल, साथ में हैं रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव

रेल एवं कोयला मंत्री पीयूष गोयल ने रेल भवन में ऐसी 22 जोड़ी रेल सेवाओं के विस्तार की घोषणा की जो भारतीय रेल व्यवस्था में चल रही हैं। इससे देश के विभिन्न हिस्सों के बीच अतिरिक्त संपर्क मुहैया करवाया जा सकेगा। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव, रेलवे बोर्ड के यातायात सदस्य गिरीश पिल्लई और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर श्री गोयल ने कहा कि रेलों के बीच में रुकने में लगने वाले अतिरिक्त समय को घटाने के लिए और 'परिसंपत्तियों का पूरा दोहन करने' पर जोर देते हुए हमने भारतीय रेल के विभिन्न मंडलों में कई रेलों का विस्तार करने का फैसला लिया है। उन्होंने यह भी कहा कि विस्तार का पहला सफल प्रयोग गतिमान एक्सप्रेस पर किया गया था, जिसे आगरा से ग्वालियर तक बढ़ाया गया था और बाद में वहां से झांसी तक।

इसी क्रम में 22 जोड़ी रेल सेवाओं का विस्तार इन क्षेत्रों के विकास में मदद करेगा और हमारे संसाधनों का उपयोग उनकी पूर्ण सीमा में करने में मदद करेगा। विस्तार और निर्धारित ठहराव इस प्रकार है:

रेलगाड़ी संख्या और नाम	कहां तक विस्तार	विस्तारित हिस्सों पर ठहराव
18107/18108 राउरकेला-कोरापुट एक्सप्रेस	जगदलपुर	जेपोर, कोटापार रोड
14369/24369-14370/24370 बरेली-सिंगरौली/शक्तिनगर एक्सप्रेस	टनकपुर	बरेली सिटी, इज्जतनगर, पीलीभीत, मझोला पकरिया
14630/14629 फिरोजपुर-लुधियाना कैंट सतलुज एक्सप्रेस	चंडीगढ़	साहिबजादा अजीत सिंह नगर (मोहाली), न्यू मोरिंडा
24887/24888 बाड़मेर-हरिद्वार लिंक एक्सप्रेस	ऋषिकेश	रायवाला
18213/18214 दुर्ग-जयपुर एक्सप्रेस	अजमेर	दुर्गापुरा
19710/19709 कामाख्या-जयपुर कविगुरु एक्सप्रेस	उदयपुर	अजमेर, भीलवाड़ा, चंदेरिया, मावली, राणाप्रतापनगर
20889/20890 हावड़ा-विजयवाड़ा हमसफर एक्सप्रेस	तिरुपति	ओंगोले, नेल्लोर, रेनीगुंटा
22604/22603 विल्लूपुरम-खड़गपुर एक्सप्रेस	पुरुलिया (1 दिन के लिए)	हिजली, मिदनापुर, बिश्नुपुर, बांकुड़ा, आद्रा
18416/18415 पुरी-बरबिल एक्सप्रेस	राउरकेला	केंडपोसी, चाईबासा, चक्रधरपुर, मनोहरपुर
22632/22631 बीकानेर-चेन्नई अनुव्रत एक्सप्रेस	मदुरई	चेन्नै एग्मोर, तांबरम, चेंगलपट्टू, विल्लूपुरम, वृद्धाचलम, अरियालुर, श्रीरंगम, तिरुचिरापल्ली, दिन्दिगुल, कोडैकनाल रोड
22913/22914 बांद्रा (टी)-पटना हमसफर एक्सप्रेस	सहरसा	बेगूसराय, खगड़िया
12473/12474 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-अहमदाबाद सर्वोदय एक्सप्रेस	गांधीधाम	वीरमगाम, ध्रांगध्रा, समाखयाली
19301/19302 यशवंतपुर-इंदौर एक्सप्रेस	डॉ. अंबेडकर नगर	कोई नहीं
66019/66020 सलेम-कटपड़ी मेमू (एमईएमयू)	अराक्कोनम	मुकुंदरायपुरम, वलजह रोड, शोलिंगहुर
68433/68434 कटक-ब्रह्मपुर मेमू	इच्छापुरम	रास्ते में आने वाले सभी स्टेशन
64511/64512 सहारनपुर-नंगल डैम मेमू	ऊना हिमाचल	रास्ते में आने वाले सभी स्टेशन
67249/67250 सिकंदराबाद-तांडूर मेमू	चित्तपुर	मनतट्टी, नवांदगी, कुरगुंटा, सेरम, मलखेड रोड
79457/79458/79459/79460 सुरेंद्रनगर-ध्रांगधरा डेमू	बोटाड	कुंडली, रानपुर, चूडा, लिंबडी, वाधवान सिटी, जोरावरनगर, सुरेंद्रनगर गेट, सुरेंद्रनगर
74906/74907 उधमपुर-जम्मू तवी डेमू (डीईएमयू)	पठानकोट	रास्ते में आने वाले सभी स्टेशन
77673/77674 मिरयलागुड़ा-काचेगुड़ा डेमू	नाडिकुडे	कोंड्रापोल हॉल्ट, विष्णुपुरम, पांडुगुला
59121/59120 प्रताप नगर-छोटा उदयपुर पैसेंजर	मोटी सादली	पडालिया रोड
58526/58525 विशाखापट्नम-प्लासा पैसेंजर	ब्रह्मपुर	रास्ते में आने वाले सब स्टेशन

इस विस्तार की योजना मौजूदा रेलगाड़ियों के अपने आखिरी स्टेशनों पर इंतजार करने की अवधि का उपयोग करते हुए बनाई गई है। ये विस्तार कोचिंग स्टॉक का ज्यादा लाभकारी उपयोग करने में मदद करेगा और भारतीय रेल के राजस्व को बढ़ाएगा। उपरोक्त रेलगाड़ियों का विस्तार मौजूदा परिसंपत्तियों का अधिकतम उपयोग करते हुए किया गया है। ■

सीतापुर–ऐशबाग नव आमान परिवर्तित रेल खंड का उद्घाटन

सीतापुर–ऐशबाग नव आमान परिवर्तित रेल खंड का उद्घाटन एवं इस खंड पर बड़ी लाइन की गाड़ियों की संचलन को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए रेल राज्य मंत्री एवं संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मनोज सिन्हा

रेल राज्य मंत्री एवं संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मनोज सिन्हा ने 9 जनवरी को खैराबाद (अवध) रेलवे स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में सीतापुर जं.–ऐशबाग नव आमान परिवर्तित रेल खंड का उद्घाटन एवं इस खंड पर बड़ी लाइन की गाड़ियों के संचलन का शुभारम्भ किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि 260 किमी लम्बे ऐशबाग–पीलीभीत खंड के आमान परिवर्तन हो जाने से सीतापुर–ऐशबाग रेल लाइन उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से सीतापुर को जोड़ रही है। इससे इस क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को गति मिलेगी। यह कार्य रेल मंत्रालय के उपक्रम रेल विकास निगम लिमिटेड द्वारा किया गया है। इस अवसर पर श्री सिन्हा ने कहा कि इस खंड पर तीन जोड़ी सवारी गाड़ियों का संचलन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त गोरखपुर–गोमतीनगर एक्सप्रेस का मार्ग विस्तार सीतापुर तक किया गया है और सीतापुर जं. स्टेशन पर मानक के अनुरूप यात्री सुविधाएं उपलब्ध करा दी गयी हैं।

श्री सिन्हा ने कहा कि उत्तर प्रदेश में रेलों के विकास हेतु वर्ष 2009– 2014 तक के 1,109 करोड रुपए की तुलना में वर्ष 2014–19 तक 5,278 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया, जो कि 376 प्रतिशत अधिक है। उत्तर प्रदेश में 2014 से अब तक 409 किमी नई रेल लाइन का निर्माण, 471 किमी आमान परिवर्तन, 2,156 किमी रेल लाइनों का विद्युतीकरण करने के साथ ही 29 सड़क उपरिगामी पुलों का निर्माण पूरा किया गया।

इस अवसर पर सांसद राजेश वर्मा, कौशल किशोर एवं अजय मिश्र टेनी, विधायक रामकृष्ण भार्गव, महेन्द्र प्रताप सिंह, सुरेश राही, योगेश वर्मा, पूर्व केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री रामलाल राही, पूर्व सांसद जनार्दन मिश्रा, पूर्वोत्तर रेलवे के प्रमुख विभागाध्यक्ष तथा रेल विकास निगम लिमिटेड के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं भारी संख्या में क्षेत्रीय जनता उपस्थित थी। ■

पनकीधाम स्टेशन पर विभिन्न सुविधाओं का लोकार्पण

5 जनवरी को पनकी धाम में आयोजित कार्यक्रम में रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा ने पनकी स्टेशन का पनकी धाम के रूप में नाम परिवर्तन किया, पनकी धाम स्टेशन पर यात्री सुविधाओं तथा यार्ड अपग्रेडेशन एवं इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग का लोकार्पण किया तथा पनकी धाम–भाऊपुर तीसरी लाइन पर यात्री ट्रेन परिचालन का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सिर्फ पनकी रेलवे स्टेशन का नाम बदल कर 'पनकी धाम' नहीं रखा गया है, बल्कि उच्चीकरण, सुंदरीकरण भी किया गया है। इस स्टेशन के विकास से कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन का दबाव कम होगा। इस स्टेशन पर यार्ड व स्टेशन के विस्तारीकरण, इंटरलॉकिंग आदि कार्य हो चुके हैं। इस स्टेशन पर एक अतिरिक्त एफओबी बनाया जाएगा। रेल राज्य मंत्री ने बताया कि कानपुर सेंट्रल स्टेशन के उन्नयन में 50 करोड़ रुपए व्यय किये गए। इससे लोको शेड की क्षमता में वृद्धि, रूफ टॉप सोलर पैनल आदि के कार्य किए गए। प्रयागराज कुम्भ–2019 में श्रद्धालुयों/यात्रियों की सुविधाओं

हेतु रिकॉर्ड अल्प समय में 700 करोड़ रुपए के कार्य रेलवे द्वारा कराए गए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री सतीश महाना, सांसद देवेन्द्र सिंह 'भोले', उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक राजीव चौधरी, मंडल रेल प्रबंधक, इलाहाबाद, अमिताभ सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। ■

मनोज सिन्हा द्वारा हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर यात्री सेवाओं का लोकार्पण

संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा ने हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर विविध यात्री सुविधाओं का उद्घाटन किया। इन यात्री सुविधाओं में एक नया विश्रामकक्ष और प्रतीक्षालय शामिल है, जिसे उतराखंड से राज्यसभा के पूर्व सदस्य तरूण विजय की सांसद निधि से बनवाया गया है। इस अवसर पर तरूण विजय, भारतीय जनता पार्टी के राज्य अध्यक्ष अजय भट्ट तथा सांसद (लोकसभा), रमेश पोखरियाल निशंक प्रमुख अतिथि थे। उत्तर रेलवे के अपर महाप्रबंधक राजेश तिवारी, मंडल रेल प्रबंधक मुरादाबाद, ए.के. सिंघल, रेलवे बोर्ड एवं राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारीगण भी इस अवसर पर मौजूद थे।

इस अवसर पर श्री सिन्हा ने कहा कि भारतीय रेल रेलयात्रा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने तथा यात्री सुविधाओं के नए मानक स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये नई सुविधाएं रेलयात्रियों के यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने की दिशा में भारतीय रेल का एक और कदम हैं। देहरादून-दिल्ली और देहरादून-हावड़ा मार्ग पर हरिद्वार प्रमुख रेल जंक्शन है। लगभग 1400 वर्ष प्राचीन हरिद्वार शहर भारत में हिंदुओं के सात प्रमुख शहरों में से एक है। उत्तर रेलवे द्वारा हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर एस्केलेटर और लिफ्ट, प्रतीक्षालय, पे एण्ड यूज टॉयलेट जैसी यात्री सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। सुरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए रेलवे ने यहां नई रेल सुरक्षा बल और राजकीय रेल पुलिस चौकियां स्थापित की हैं। उन्नत सीसीटीवी निगरानी प्रणाली से यहां की सुरक्षा मजबूत होगी। ■

रेल राज्य मंत्री द्वारा अम्ब अंदौरा-चिंतपूर्णी मार्ग-दौलतपुर चौक नई बड़ी रेल लाइन का शुभारंभ

संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा ने अम्ब अंदौरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. 1 एवं दौलतपुर चौक रेलवे स्टेशन पर आयोजित दो विभिन्न कार्यक्रमों में अम्ब अंदौरा-चिंतपूर्णी मार्ग-दौलतपुर चौक नई बड़ी रेल लाइन, अम्ब अंदौरा स्टेशन पर नए फुट-ओवर-ब्रिज, अम्ब अंदौरा स्टेशन पर प्लेटफॉर्म नं. 1 के विस्तार, ऊना हिमाचल स्टेशन पर प्लेटफॉर्म नं. 1 के विस्तार एवं ऊना हिमाचल रेलवे स्टेशन पर नए द्वितीय श्रेणी के प्रतीक्षालय का राष्ट्र को समर्पण, ऊना हिमाचल रेलवे स्टेशन पर नए फुट ओवर ब्रिज व नए प्लेटफॉर्म नं. 2 एवं अम्ब अंदौरा-दौलतपुर चौक रेल सेक्शन के विद्युतीकरण के शिलान्यास, दिल्ली-अम्ब अन्दौरा-दिल्ली हिमाचल एक्सप्रेस एवं नंगलडैम-अम्ब अन्दौरा-नंगलडैम पैसेंजर रेलगाड़ी के दौलतपुर चौक तक के विस्तार का शुभारम्भ किया। अम्ब अंदौरा-चिंतपूर्णी मार्ग-दौलतपुर चौक ब्लॉक स्टेशन (लगभग 16 किमी) नंगलडैम-तलवाड़ा नई रेल लाइन का एक भाग है। मुकेरियां-तलवाड़ा सेक्शन सहित नंगलडैम से तलवाड़ा (83.74 किमी) रेल मार्ग की इस परियोजना के अंतर्गत निर्मित की जाने वाली यह रेल लाइन पंजाब (23.504 किमी) और हिमाचल प्रदेश राज्य में (60.334 किमी) निचली शिवालिक पर्वत श्रेणियों की तलहटी से होकर गुजरती है। अम्बाला-लुधियाना, जलंधर सिटी/जलंधर

छावनी-पठानकोट-जम्मूतवी सेक्शन पर मुकेरियां तक का कार्य पूरा हो जाने से अब यह रेल लाइन जम्मू एवं कश्मीर राज्य के लिए सामरिक महत्त्व का एक वैकल्पिक मार्ग भी साबित होगी।

श्री सिन्हा ने कहा कि रेलयात्रा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने तथा यात्री सुविधाओं के नए मानक स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री, हिमाचल प्रदेश, वीरेंद्र कंवर, सांसद, अनुराग ठाकुर, विधायक, चिंतपूर्णी, बलबीर सिंह और विधायक, गगरेट, राजेश ठाकुर सहित इस मौके पर उत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक, टी. पी. सिंह, उत्तर रेलवे, अम्बाला मंडल के मंडल रेल प्रबन्धक, डी.सी. शर्मा उपस्थित थे। ■

रेल राज्य मंत्री द्वारा भारतीय रेल के ब्रॉड गेज लाइन के अंतिम मानव रहित समपार की समाप्ति की घोषणा

सूबेदारगंज नवनिर्मित स्टेशन भवन व विविध यात्री सुविधाओं का उदघाटन

2 फरवरी को रेल राज्य मंत्री एवं संचार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मनोज सिन्हा ने प्रयागराज स्थित सूबेदारगंज स्टेशन के नवनिर्मित स्टेशन भवन, द्वितीय प्रवेश, प्लैटफॉर्म संख्या 4 एवं अन्य यात्री सुविधाओं का उदघाटन किया। प्रयागराज के दौरे पर आये हुए श्री सिन्हा ने सूबेदारगंज स्टेशन के नवनिर्मित भवन के प्रांगण में आयोजित एक कार्यक्रम में बटन दबा कर उक्त उदघाटन किये। श्री सिन्हा ने 'प्रवीण हैंडहेल्ड टिकट वेंडिंग मशीन' से एक अनारक्षित टिकट निकाल कर इस 'प्रवीण' सिस्टम का लोकार्पण किया। (यह सिस्टम कुम्भ मेले के प्रारंभ से ही चल रहा है और इसमें रेल कर्मचारी-कुम्भ रेल सेवक-तीर्थयात्रियों के पास जा कर उन्हें अनारक्षित टिकटों का विक्रय कर रहे हैं)। श्री सिन्हा ने 'फेस-टू-फेस' बहुभाषीय एंक्वाइरी सिस्टम का भी डेमोस्ट्रेशन देखा। 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' पर आधारित इस सिस्टम से अहिन्दी भाषी यात्री भी हिन्दीभाषी पूछताछ कर्मचारियों से अपनी भाषा में वार्तालाप करते हुए अपने प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं।

इस अवसर पर श्री सिन्हा ने कहा कि भारतीय रेल ने प्रयागराज में अल्प समय में ही 700 करोड़ रुपए के गुणवत्ता पूर्ण कार्यों को संपन्न किया है। रेलवे में निवेश पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय रेल की सबसे बड़ी समस्या पूँजी निवेश की थी। 2014 से पहले भारतीय रेल लगभग 48,000 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष खर्च किया करती थी। परंतु प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से निवेश तेजी से बढ़ा; पिछले वित्तीय वर्ष में हमनें (रेलवे ने) 1,30,000 करोड़ रुपए खर्च किये जो वर्तमान वित्तीय वर्ष में 1,48,000 करोड़ हो गए। इस प्रकार बढ़े हुए बजटरी सपोर्ट ने रेल का कायाकल्प करने में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

इस अवसर पर इलाहाबाद के सांसद श्यामाचरण गुप्त, प्रयागराज की महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता, महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, राजीव चौधरी, अमिताभ, मंडल रेल प्रबंधक (इलाहाबाद मंडल), अपर महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, अरुण मालिक के साथ रेलवे के उच्चाधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। ■

इसी कार्यक्रम के दौरान रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा ने चुनार-चोपर रेलखंड मानव रहित समपार - नं. 28 सी को मानव रहित रेल समपार की विधिवत घोषणा की। इसी घोषणा से भारतीय रेल मानव रहित रेल समपार से मुक्त हो गई है

राजेन गोहांई ने सिलघाट-कोलकाता एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई

उन्नत यातायत हेतु 1 जनवरी को रेल राज्य मंत्री राजेन गोहांई ने सिलघाट कोलकाता के बीच नई साप्ताहिक एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर असम के जल संसाधन मंत्री और कलियाबर के विधायक केशव महंत, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक (निर्माण) निलेश किशोर प्रसाद, मंडल रेल प्रबंधक, लामडिंग, राम बहादुर राय सहित बड़ी संख्या में लोग सिलघाट रेलवे स्टेशन में मौजूद थे। इस अवसर पर श्री गोहांई ने कहा कि प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा घोषित परिवहन के माध्यम से परिवर्तन की दिशा में यह एक और कदम है। इस एक्सप्रेस ट्रेन से देश के बाकी हिस्सों के साथ आवागमन बेहतर होगा साथ ही मध्य असम के क्षेत्रों में व्यापार और वाणिज्य में सुधार के लिए इसके बहुत फायदेमंद होने की उम्मीद जताई जा रही है। इस ट्रेन में 19 नए अत्याधुनिक एलएचबी कोच हैं। यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं मुहैया कराई गई हैं। काजीरंगा राष्ट्रीय वन्यजीव अभयारण्य की यात्रा करने वाले पर्यटकों को भी इस ट्रेन से लाभ होगा। क्योंकि, ट्रेन का आमोनी और जखलाबंधा में भी ठहराव निर्धारित किया गया है। यह साप्ताहिक ट्रेन 13182/ 13181 मंगलवार को दोपहर 12.30 बजे सिलघाट से चलेगी, जो अगले दिन 12.50 बजे कोलकाता पहुँचेगी। वापसी में यह ट्रेन सोमवार को 9.05 बजे चलेगी जो अगले दिन यानी मंगलवार को 9.55 बजे सिलघाट पहुँचेगी। यह ट्रेन जखलाबंधा, आमोनी, नगांव, सेनचोवा, चापरमुख, जागीरोड, गुवाहाटी, कामाख्या, ग्वालपाड़ा, न्यू-बंगाईगांव, फकीराग्राम, न्यू-अलीपुरद्वार, न्यू- कुचबिहार, मालदा टाउन, रामपुरहाट, बोलपुर और बर्धमान में रुकेगी। ■

अध्यक्षय, रेलवे बोर्ड ने उत्तर रेलवे मुख्यालय में समीक्षा बैठक की

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष वी.के. यादव ने उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय में क्षेत्रीय रेलवे के कार्य निष्पादन की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड के सदस्य यातायात, गिरीश पिल्लई, उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, टी.पी. सिंह, प्रमुख विभागाध्यक्ष और उत्तर रेलवे के अम्बाला, दिल्ली, मुरादाबाद, लखनऊ और फिरोजपुर के मंडल रेल प्रबंधक उपस्थित थे।

चालू वित्त वर्ष 2018-2019 के दौरान उत्तर रेलवे के समूचे संरक्षा निष्पादन का मूल्यांकन करते हुए श्री यादव ने पाया कि पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में दुर्घटनाओं में 31% की कमी आई है। उन्होंने उत्तर रेलवे द्वारा अपने क्षेत्राधिकार से मानवरहित रेल फाटकों को पूरी तरह से समाप्त करने, जोकि 'मिशन जीरो एक्सीडेंट' का एक अंश है, पर संतोष जताया।

अध्यक्ष ने नई रेल लाइन, दोहरीकरण जैसी क्षमता विस्तार परियोजनाओं को शीघ्रता से निपटाने और परिचालन (समयपालन) संरक्षा के दो उद्देश्यों को विस्तार देने पर भी बल दिया। उत्तर रेलवे ने वर्ष के दौरान यात्री रेलगाड़ियों की समयपालनबद्धता को बेहतर करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं।

अध्यक्ष रेलवे बोर्ड ने स्टेशनों की भीड़-भाड़ को कम करने और प्राथमिक अनुरक्षण को शीघ्रता से पूरा करने के लिए रैक लिंक और टर्मिनलों में परिवर्तन जैसी कार्य योजनाओं की समीक्षा की अन्य सुधार कार्यों में, शीघ्रता से ईंधन एवं पानी भरने के साथ-साथ वाशिंग लाइन में ओएचई कनेक्टिविटी बढ़ाई जायेगी।

अध्यक्ष ने आगामी वर्ष में प्रस्तावित विभिन्न विकास योजनाओं अर्थात् दोहरीकरण कार्य, परिचालन दक्षता, विभिन्न उन्नत यात्री सुविधाओं और वाराणसी यार्ड रि-मॉडलिंग योजनाओं की समीक्षा की। वर्ष 2019-20 में 41 किमी नई रेल लाइनों के और 137 किमी दोहरीकरण के कार्य किए जायेंगे। ■

पश्चिम रेलवे के खार रोड, कांदिवली एवं भायंदर स्टेशनों पर तीन पुनर्निर्मित पैदल ऊपरी पुलों का उद्घाटन

खार रोड स्टेशन पर नवविस्तारित पैदल ऊपरी पुल का उद्घाटन करती हुईं सांसद सुश्री पूनम महाजन (बाएं) कांदिवली स्टेशन पर पुनर्निर्मित पैदल ऊपरी पुल तथा बुकिंग ऑफिस का उद्घाटन करते हुए सांसद गोपाल शेट्टी एवं भायंदर स्टेशन पर पुनर्निर्मित पैदल ऊपरी पुल का उद्घाटन करते हुए सांसद राजन विचारे एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण

5 जनवरी को सांसद सुश्री पूनम महाजन द्वारा खार रोड स्टेशन पर नवविस्तारित पैदल ऊपरी पुल का उद्घाटन विधायक आशीष शेलार, अन्य गणमान्य अतिथिगण और पश्चिम रेलवे के विभिन्न वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। खार रोड स्टेशन पर विद्यमान 6 मीटर चौड़े दक्षिणी पैदल ऊपरी पुल को प्लेटफॉर्म नंबर 1 से पश्चिम दिशा की तरफ विस्तारित किया गया है।

कांदिवली स्टेशन पर पुनर्निर्मित पैदल ऊपरी पुल तथा दो बुकिंग कार्यालयों का उद्घाटन सांसद गोपाल शेट्टी द्वारा विधायक योगेश सागर, विधायक अतुल भातखलकर, अन्य गणमान्य अतिथियों और पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में किया गया। भायंदर स्टेशन पर पुनर्निर्मित तीसरे पैदल ऊपरी पुल का उद्घाटन राजन विचारे द्वारा विधायक नरेंद्र मेहता, विधायक प्रताप सरनाईक, अन्य गणमान्य अतिथिगण तथा पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में किया गया। यह 6 मीटर चौड़ा पैदल ऊपरी पुल भायंदर स्टेशन के मध्यवर्ती उत्तरी छोर पर पूर्व में मौजूद पुराने पैदल ऊपरी पुल के एवज में बनाया गया है। पुनर्निर्मित यह पैदल ऊपरी पुल भायंदर स्टेशन के पश्चिमी छोर को प्लेटफॉर्म संख्या 1/2, 3/4, 5 एवं 6 को जोड़ता है। ■

इरकॉन ने जीता वैल्यू ग्रोथ के लिए पीएसयू अवार्ड

17 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में सांसद मनोज तिवारी, अभिनेत्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री पूनम ढिल्लों ने इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड (इरकॉन) को छठे गवर्नेंस नाउ पीएसयू अवार्ड से सम्मानित किया गया। इरकॉन की ओर से मुख्य महाप्रबंधक, व्यवसाय विकास पराग वर्मा एवं मुख्य महाप्रबंधक, सूचना प्रौद्योगिकी पीयूष आर्य ने यह अवार्ड प्राप्त किया। इरकॉन को यह अवार्ड मिनी रत्न-I श्रेणी में वैल्यू ग्रोथ के लिए प्रदान किया गया है। ■

जामवंथली स्टेशन पर जामनगर-सूरत-जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस के स्टॉपेज का शुभारम्भ

पश्चिम रेलवे, राजकोट मंडल के जामवंथली स्टेशन पर आयोजित समारोह में जामनगर-सूरत-जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस के स्टॉपेज का विधिवत शुभारम्भ सांसद श्रीमती पूनमबेन माडम द्वारा किया गया। समारोह में मंडल रेल प्रबंधक, राजकोट पी.बी. निनावे, जामवंथली की सरपंच श्रीमती मीनाबेन टोरिया, पूर्व विधायक मेघजीभाई चावड़ा आदि उपस्थित थे। ■

सोनीपत रेल कोच नवीनीकरण कारखाना का भूमि पूजन

सांसद (लोकसभा), रमेश चन्द्र कौशिक ने 11 जनवरी को सोनीपत रेल कोच नवीनीकरण कारखाना के निर्माण कार्यों के प्रारंभ हेतु भूमि पूजन किया। इस अवसर पर उत्तर रेलवे के मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, अरून अरोरा, उत्तर रेलवे दिल्ली मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक, नवीन कुमार परशुरामका भी उपस्थित थे। सोनीपत में रेल कोच नवीनीकरण कारखाना के विकास की परियोजना को वर्ष 2020-2021 तक पूरा करने का लक्ष्य है। यह 484 करोड़ रुपए की अनुमानित परियोजना लागत के साथ अत्याधुनिक मशीनरी एवं प्लांट के साथ अपने तरह का पहला नवीनीकरण कारखाना है। यह मुख्यत: एलएचबी कोच एवं ट्रेन सेटों के नवीनीकरण कार्य के लिए सेवाएं प्रदान करेगा। 161 एकड़ क्षेत्रफल में फैले इस कारखाने में प्रतिवर्ष 250 कोचों की पीरियोडिक ऑवरहालिंग तथा नवीनीकरण की क्षमता होगी जिसका विस्तार 1000 कोच

प्रतिवर्ष तक किया जा सकता है। कारखाने का अनुमानित वार्षिक टर्न ओवर 250 करोड़ रुपए होगा। ■

मस्जिद स्टेशन पर विभिन्न सुविधाओं का लोकार्पण

सांसद अरविंद सावंत ने 1 जनवरी को मस्जिद स्टेशन के नवनिर्मित पैदल ऊपरी पुल (एफआबी) का लोकार्पण किया। इस के उपरांत श्री सावंत ने परेल स्टेशन पर एस्केलेटर एवं लिफ्ट को भी लोकार्पण किया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक एस.के. जैन, तथा अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। 26 नवम्बर, 2018 से इस एफओबी के नवीनीकरण का कार्य शुरू किया गया। रिनोवेशन का काम 33 दिनों के रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया जो कि लक्ष्य समय से 12 दिन पहले पूर्ण किया गया जो मध्य रेल पर एक रिकॉर्ड है। नवीनीकरण में एफओबी का डिसमेंटलिंग और उसी स्थान पर नए एफओबी पादचारी पुल का निर्माण शामिल था। ■

रायपुर स्टेशन पर नवनिर्मित बुकिंग एवं आरक्षण कार्यालय व मोवा पर रोड अंडर ब्रिज का लोकार्पण

24 जनवरी को रायपुर रेलवे स्टेशन के गुढ़ियारी छोर पर नवनिर्मित बुकिंग आरक्षण कार्यालय का लोकार्पण सांसद (लोकसभा) रमेश बैस द्वारा किया गया। इस अवसर पर विधायक कुलदीप सिंह जुनेजा, विकास उपाध्याय एवं महापौर प्रमोद दुबे, शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इसी कड़ी में मोवा रेलवे फाटक पर नवनिर्मित रोड अंडर ब्रिज का लोकार्पण सांसद रमेश बैस द्वारा किया गया। इस अवसर पर विधायक सत्यनारायण शर्मा एवं महापौर प्रमोद दुबे सहित रायपुर शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

इन दोनों लोकार्पण के कार्यक्रम में रायपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक कौशल किशोर, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) शिव शंकर लकड़ा एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (ओपी) अमिताव चौधरी, रायपुर मंडल के शाखा अधिकारी सहित क्षेत्रीय रेल

उपयोगकर्ता सलाहकार समिति सदस्य दीपक शर्मा एवं राजेश शर्मा एवं मंडल रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति सदस्य जितेंद्र जैन बरलोटा अन्य सदस्य एवं मीडियाकर्मी उपस्थित थे। ■

सदस्य कर्षण द्वारा डीरेका निर्मित 100वां विद्युत रेल इंजन 'शतक' राष्ट्र को समर्पित

सदस्य कर्षण, रेलवे बोर्ड घनश्याम सिंह द्वारा 7 जनवरी को डीजल रेल इंजन कारखाना (डीरेका) द्वारा उत्पादित 100वें विद्युत रेल इंजन डब्ल्यूएपी-7 'शतक' को महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल एवं जनवरी में सेवानिवृत्त होने वाले उत्पादन से जुड़े डीरेका के सात कर्मचारियों के साथ झंडी दिखाकर लोकार्पित किया गया। इसके पूर्व उन्होंने महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल के साथ उक्त रेल इंजन के ड्राइवर कैब का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान श्री सिंह ने महाप्रबंधक श्रीमती गोयल एवं प्रमुख अधिकारियों से उक्त रेल इंजन से संबंधित महत्त्वपूर्ण तकनीकी जानकारियां प्राप्त कीं।

इस अवसर पर अपने संबोधन में सदस्य कर्षण डीरेका ने हरित ऊर्जा को आगे बढ़ाते हुए विद्युत रेल इंजनों के उत्पादन का 'शतक' पूरा किया, इससे पता चलता है कि डीरेका विश्व के अग्रणी रेल इंजन उत्पादन इकाई के रूप में उभर रहा है। भविष्य में डीरेका 55 से 60 रेल इंजन प्रतिमाह उत्पादन करने में सक्षम होगा।

समारोह के दौरान डीरेका कर्मियों को सदस्य कर्षण ने 50,000 रुपए का सामूहिक पुरस्कार तथा जनवरी माह में सेवानिवृत्त होने वाले सात डीरेका कर्मियों एवं चालक दल को 5,000-5,000 रुपए के पुरस्कार की घोषणा की।

इस अवसर पर महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल ने कहा डीरेका ने फरवरी, 2017 में अपने पहले विद्युत रेल इंजन का निर्माण किया। 2016-17 में मात्र 2 विद्युत रेल इंजन निर्माण की छोटी सी शुरुआत के साथ, 2017-18 में उत्पादन धीरे-धीरे बढ़कर 25 रेल इंजन तक पहुंच गया। डीरेका ने दिसंबर 2018 से विद्युत रेल इंजनों की उत्पादन क्षमता को 18 रेल इंजन प्रति माह तक बढ़ा दिया है। डीरेका द्वारा 2018-19 के दौरान अब तक 77 विद्युत रेल इंजन का निर्माण किया गया है। दिसंबर 2018 तक डीरेका ने कुल 104 विद्युत रेल इंजनों का निर्माण किया है। ■

सुशांत कुमार मिश्रा सचिव, रेलवे बोर्ड बने

भारतीय रेल यातायात सेवा के अधिकारी सुशांत कुमार मिश्रा ने 22 जनवरी, 2019 को सचिव, रेलवे बोर्ड का पदभार संभाल लिया।

आईआईएम अहमदाबाद से अनुस्नातक श्री मिश्रा 1986 में भारतीय रेल में आए। सचिव रेलवे बोर्ड का पदभार संभालने से पूर्व आप रेलवे बोर्ड में प्रधान मुख्य कार्यकारी निदेशक, अवसंरचना का पदभार संभाल रहे थे। अपनी सेवा के दौरान आपने कई महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है, जिसमें रेलवे बोर्ड में कार्यकारी निदेशक समवेत समन्वय, कार्यकारी निदेशक, सार्वजनिक निजी भागीदारी और मंडल रेल प्रबंधक, सिकंदराबाद मंडल का पदभार शामिल है। आपने सड़क एवं परिवहन मंत्रालय में निदेशक, परिवहन का पदभार भी संभाला है। आपको सरकार, अकादमिक एवं निजी क्षेत्र में कार्य करने का 33 वर्ष का विशाल अनुभव है, जिसमें से 30 वर्ष आपने भारतीय रेल/सड़क परिवहन के क्षेत्र में दिये। आपने इस दौरान भारतीय रेल परिवहन की शक्तियों एवं सीमाओं को, विशेषकर निजी क्षेत्र के साथ भागीदारी के संदर्भ में गहराई से जाना। आपने रणनीतिक सोच, योजना नीति एवं परिचालन प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न कार्य किए हैं। आपने विश्व के सर्वोत्तम संस्थानों से प्रशिक्षण/पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में भाग लिया है। आपका भारतीय रेल एवं परिवहन क्षेत्र के विभिन्न प्रबुद्ध मंडलों, नीति नियंताओं, परिचालन प्रमुखों एवं अर्थजगत के विद्वानों के साथ अच्छा नेटवर्क है। ■

रेल सुरक्षा बल के नए विन्यास चिन्ह व सिपाही प्रशिक्षण अनुदेशक कोर्स बैज का अनावरण

गणतंत्र दिवस 2019 समारोह के दौरान रेल सुरक्षा विशेष बल के महानिदेशक अरूण कुमार ने बल के नए विन्यास चिन्ह और सिपाही प्रशिक्षण अनुदेशक (सीटीआई) कोर्स बैज का अनावरण किया।

यह उल्लेखनीय है कि रेल सुरक्षा बल ने इस वर्ष राजपथ पर गणतंत्र परेड में पूरे गौरव और सम्मान के साथ भाग लिया। परेड के तुरंत बाद अरूण कुमार ने 6ठीं बटालियन के सहायक सुरक्षा आयुक्त, जतिन बी.राज के नेतृत्व वाली 148 जवानों की टुकड़ी का स्वागत किया।

मरून बेस वाला रेल सुरक्षा विशेष बल के इस नए विन्यास चिन्ह का उद्देश्य 'तपसा शौर्य संधानम' है जो बल के कड़े परिश्रम के साथ अर्जित बल के परम शौर्य को दर्शाता है। रेल सुरक्षा बल के महानिदेशक ने नए विन्यास चिन्ह और सिपाही प्रशिक्षण अनुदेशक (सीटीआई) कोर्स बैज को बल के सदस्यों को प्रदान किया। सीटीआई कोर्स बैज महिला कांस्टेबल संतोष और उप निरीक्षक सुखवंत को जबकि विन्यास चिन्ह कमांडेंट राजकुमार यादव और निरीक्षक एम. अरूणाचलम को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर बल को संबोधित करते हुए अरूण कुमार ने राजपथ पर मार्चपास्ट के दौरान देश के उच्च नेतृत्व, विदेशी अतिथियों और बल के सर्वोच्च कमांडरों के समक्ष

रेल सुरक्षा बल की प्रतिबद्धता और कर्तव्य निष्ठा के प्रदर्शन की सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि बल की यह प्रतिबद्धता राष्ट्र के नागरिकों में आत्मविश्वास का संचार करती है। रेल संपत्तियों की रक्षा और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए आने वाली हर तरह की कठिनाइयों से निपटने में रेल सुरक्षा बल का विशेष जंगल हैट और मरून फीता सुरक्षा की आश्वस्ति का प्रतीक है। उन्होंने बल के इन प्रयासों को बनाए रखने उन्हें और अधिक विश्वसनीय और अनुशासित बल के रूप में प्रतिष्ठित करने पर जोर दिया। ■

एतिहाद रेल के प्रतिनिधिमंडल द्वारा डीरेका का दौरा

एतिहाद रेल, संयुक्त अरब अमीरात के सम्पत्ति प्रबंधक निदेशक मंसूर आलम के नेतृत्व में वरिष्ठ इंजीनियर पावर सिस्टम मोहम्मद अब्दुल्ला अल् शेहनी एवं वरिष्ठ प्रबंधक रोलिंग स्टॉक एन्ड्रीस पेट्रस लॉबशर ने 14 दिसम्बर को डीजल रेल इंजन कारखाना का दौरा किया एवं महाप्रबंधक डीरेका श्रीमती रश्मि गोयल के साथ मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने महाप्रबंधक/राइट्स देवाशीष त्रिपाठी, मुख्य विपणन प्रबंधक, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/उत्पादन एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विभिन्न कार्यशालाओं का भ्रमण कर जानकारी प्राप्त की।

भ्रमण के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने डीरेका के अधिकारियों के साथ विभिन्न तकनीकी विषयों, एतिहाद रेल के लिए रेल इंजनों एवं अतिरिक्त पुर्जों के क्रय एवं रेलवे क्षेत्र में आपसी सहयोग की संभावनाओं पर विचार विमर्श किया तथा डीरेका में चल रही उत्पादन गतिविधियों, परियोजनाओं एवं भावी विकास योजनाओं की जानकारी प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि एतिहाद रेल से डीरेका को अत्याधुनिक तकनीक के 5 अदद् रेल इंजनों एवं अतिरिक्त पुर्जों की आपूर्ति के लिए क्रय आदेश मिलने की संभावना है। ■

डीरेका डीजल रेल इंजनों का एक प्रमुख निर्यातक है। अब तक डीरेका ने 11 देशों को 156 डीजल रेल इंजनों का निर्यात किया है, जिनमें तंजानिया, वियतनाम, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यान्मार, सूडान, सेनेगल/माली, अंगोला, मोजाम्बिक एवं मलेशिया शामिल हैं। हाल ही में डीरेका ने श्रीलंका को एक HHP रेल इंजन का निर्यात किया है। डीरेका ने विगत वर्ष रेल इंजनों की बिक्री से 333 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त किया। इस वर्ष 372 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त होने का अनुमान है।

मोटरमैन एवं गार्ड की सतर्कता से बची महिला की जान

30 दिसंबर को टी-97 गाड़ी पर कार्य करने के दौरान आर.एस. तिवारी, मोटरमैन को किमी 10/19 माटुंगा-सायन अप एवं डाऊन पटरी के बीच एक महिला घायल अवस्था में दिखाई दी, श्री तिवारी ने आपातकाल ब्रेक लगाकर गाड़ी को रोका एवं गार्ड एस.डब्ल्यु. बोरकर को इसके बारे में सूचना दी। श्री बोरकर ने अन्य यात्रियों की मदद से उस घायल महिला यात्री को नजदीक के महिला यात्री कोच में चढाया और सायन स्टेशन मैनेजर को सुपुर्द किया। स्टेशन मैनेजर ए.पी. पॉल ने प्राथमिक उपचार देने के बाद जीआरपी सिपाई नंबर 1089 के साथ तत्काल सायन अस्पताल भेजा। श्री तिवारी, बोरकर, ए.पी.पॉल एवं जीआरपी श्री शेख की तत्काल मदद से उस महिला की जान बचाई जा सकी। उनके इस सराहनीय कार्य के लिए महाप्रबंधक, मध्य रेल डी.के. शर्मा ने मोटरमैन आर.एस. तिवारी एवं एस.डब्ल्यु. बोरकर, गार्ड को

प्रशस्ति पत्र एवं रुपए 5000 का पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई, एस.के. जैन, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, मध्य रेल, सुनील उदासी, वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता एस.के. सुमन, टीआरओ एवं वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी, मध्य रेल, डॉ. ए.के. सिंह उपस्थित थे। ■

ग्रामीण तथा रेल कर्मी की सतर्कता से टला रेल हादसा – डीआरएम ने किया सम्मानित

राजकोट मंडल में 3 जनवरी, 2019 को परापिपलिया ग्राम के निवासी भीमाभाई ने समपार फाटक संख्या 130 के गेटमेन को सूचित किया कि 'रेल की पटरी टूटी हुई है'। गेटमेन जुवान सिंह जाडेजा ने तुरंत रेल की जाँच कर इसकी सूचना संबंधित अधिकारी को बताया। रेलवे प्रशासन द्वारा 19218 जामनगर-बाँदरा सौराष्ट्र जनता एक्सप्रेस को खंढेरी स्टेशन पर तथा 12906 हावड़ा-पोरबंदर एक्सप्रेस को राजकोट स्टेशन पर रोक दिया गया। इन दोनों की सतर्कता से रेल हादसा टल गया।

इस उत्कृष्ट कार्य के लिए मंडल रेल प्रबंधक, राजकोट पी.बी. निनावे द्वारा भीमाभाई को 2000 रुपए का नकद पुरस्कार व गेटमेन जुवान सिंह जाडेजा को 1000 रुपए का नकद पुरस्कार तथा दोनों को योग्यता प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। ■

रेल फ्रैक्चर देखने वाले सतर्क स्थानीय निवासी को सम्मानित

दयाराम बघेल, रिटायर्ड चाबीदार एवं भाटापरा क्षेत्र के स्थानीय निवासी अजय बघेल ने रेल फ्रैक्चर देखकर इसकी सूचना नजदीकी गेटमैन को देकर संभावित दुर्घटना होने से बचा ली। उक्त सराहनीय कार्य के लिए 4 जनवरी को मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर कौशल किशोर द्वारा दोनों को अलग-अलग प्रशस्ति पत्र एवं 1500 रुपए प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अजय कुमार बघेल तथा दयारास ने 3 जनवरी को किमी क्रमांक 763/10 ए-21 ए के मध्य डाउन लाइन में गाड़ी संख्या N/Box-212 के आने के ठीक पहले रेल फ्रैक्चर देखा और तुरंत इसकी सूचना गेट क्रमांक 383 (बलोदा बाजार गेट) के गेटकीपर को दी। गेटकीपर ने तुरंत 40 किमी प्रति घंटा की स्पीड से आ रही गाड़ी को रेल फ्रैक्चर वाले स्थान से ठीक पहले रूकवाया, जिससे एक संभावित दुर्घटना टल सकी। ■

पश्चिमी डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर के 306 किमी मदार (अजमेर)–न्यू रेवाड़ी–किशनगढ़ बालावास सेक्शन का कार्य पूर्ण

भारत में सबसे बड़ी रेल अवसंरचना परियोजनाओं में एक डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर (डीएफसी)अपने निर्माण के उद्देश्य को पूरा करने और हमारे देश में माल और रसद क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव की ओर अग्रसर है। हाल ही में डीएफसी के पूर्वी कॉरीडोर में दिल्ली कानपुर रेल नेटवर्क के बीच 194 किमी के भदान–खुर्जा सेक्शन में मालगाड़ी के सफल ट्रायल रन को पूरा करने के बाद, विभिन्न रेल सेक्शनों को पूरा करते हुए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतरता का प्रदर्शन करते हुए डीएफसी ने एक और महत्त्वपूर्ण सेक्शन के कार्य को पूरा किया है।

30 दिसंबर, 2018 को पश्चिमी डीएफसी पर भारत के व्यस्ततम रेल नेटवर्क मदार (राजस्थान में) से किशनगढ़ बालावास (हरियाणा में) सेक्शन में मालगाड़ी का सफल संचालन किया गया। यह डीएफसी के पश्चिम कॉरीडोर के पहले चरण (चरण–1) का भाग है। इस 306 किमी सेक्शन में 6 क्रॉसिंग स्टेशन (डबला, भगेगा, श्रीमाधोपुर, पचार, मलिकपुर, शकुन और किशनगढ़) सहित 9 नए फ्रेट स्टेशन और तीन जंक्शन स्टेशन (रेवाड़ी, अटेली और फुलेरा) बनाए गए हैं। भारतीय रेल के मदार और किशनगढ़ बालावास स्टेशन के बीच इस नए पूर्ण किए गए पश्चिमी डीएफसी पर मालगाड़ी का ट्रायल रन का विधिवत उद्घाटन न्यूसाखून स्टेशन पर अनुराग सचान, प्रबंध निदेशक, डी.एस. राणा, निदेशक/अवसंरचना, नवीन कुमार शुक्ला, निदेशक परिचालन एवं व्यवसाय विकास, श्रीमती सौम्या माथुर, डीआरएम जयपुर मंडल, और सोजित–एल एंड टी कॉन्सयट्रोरियम और हितेची–टेक्सेमेको के वरिष्ठ कार्यकारियों के अलावा उत्तर पश्चिम रेलवे, डीएफसी के अधिकारीगण और स्टेकहोल्डर्स की उपस्थिति में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

यह खंड हरियाणा के रेवाड़ी और महेंद्रगढ़ और राजस्थान के जयपुर जिलों में स्थित है। इस सेक्शन में 15 बड़े पुल और 271 छोटे पुल, चार रेल फ्लाई ओवर (आरएफओ) और 177 रोड अंडर पुल (आरयूबी) शामिल हैं।

इससे पहले 30 नवंबर, 2018 को पूर्वी डीएफसी के भदान–खुर्जा (उत्तर प्रदेश) के 194 किमी सेक्शन को पूरा किया था।

भारतीय रेल पर मालगाड़ियों की अधिकतम गति 75 किमी/घंटा की तुलना में डीएफसी पर चलने वाली मालगाड़ियां 100 किमी/घंटा की गति प्राप्त करने के योग्य होंगी। मालगाड़ियों की लाइनों पर औसत गति वर्तमान 26 किमी/घंटा से बढ़कर डीएफसी पर 70 किमी प्रति घंटा हो जाएगी।

डीएफसी के बारे में:-

डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर के रखरखाव और परिचालन, निर्माण, योजना में संलग्नक एक विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) संस्था है। प्रथम चरण में दो कॉरीडोर पूर्वी कॉरीडोर लुधियाना से दानकुनी (1856 किमी) और पश्चिमी कॉरीडोर दादरी से जवाहर लाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (जेएनपीटी) (1504 किमी) का निर्माण विशेष रूप से माल गाड़ियों के आवागमन के लिए किया जा रहा है। पूर्वी डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल के राज्यों से गुजर रहा है। पश्चिमी डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर दादरी (उत्तर प्रदेश) से जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (मुंबई) तक उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से गुजर रहा है। पश्चिमी कॉरीडोर को जापान इंटरनेशनल कारपोरेशन एजेंसी (जीका) द्वारा वित्त पोषित किया जा रहा है, जबकि पूर्वी कॉरीडोर मुगलसराय से लुधियाना तक विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित किया जा रहा है।

जीएसएम–आर लोकोमोटिव से नियंत्रक के साथ संवाद करने के लिए लोको पायलट को सक्षम करने के लिए रेलवे मोबाइल संचार के लिए ग्लोबल सिस्टम है।

भारत सरकार के 'मेक इन इंडिया' पहल में भागीदारी

न्यू रेवाड़ी–मदार (अजमेर) सेक्शन में जो प्रमुख उपकरण उपयोग किए जा रहे हैं, जैसे ट्रांसफार्मर, ऑटो–ट्रांसफार्मर, अन्य कंडक्टर भारत सरकार के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम का हिस्सा हैं। ■

सफेद बर्फ से ढकी कश्मीर घाटी में भारतीय रेल

साल के एक बड़े हिस्से में बर्फ से ढकी रहने वाली कश्मीर घाटी को देश का स्विट्जरलैण्ड कहना सर्वथा उचित है। सर्दियों में पर्यटकों के लिए इस खूबसूरत घाटी में पहुँचना एक सपने के समान था, क्योंकि सर्दियों में भारी हिमपात के कारण जवाहर सुरंग से गुजरने वाला सड़क संपर्क पूरी तरह से बंद हो जाता है। अब भारतीय रेल ने विशेष खूबियों वाली डीईएमयू रेलगाड़ियों के जरिए यहां के लिए एक सुगम और निर्बाध रेल संपर्क उपलब्ध करा दिया है।

भारतीय रेल नेटवर्क के जरिए एक युग की सुबह : भारत की इस खूबसूरत घाटी को देश के शेष भागों से जोड़ने के लिए स्वप्निल परियोजना के रूप में इसकी शुरुआत हुई। उत्तर रेलवे के उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना दल दृढ़ निश्चय और चरणबद्ध रूप से इस पर निरंतर कार्य कर रहा है और देश के उस हिस्से तक अपनी पहुँच बना रहा है जो अलग-थलग पड़ जाता था। इसे राष्ट्रीय महत्त्व की परियोजना घोषित किया गया है। हिमालय पर्वत के कठिन हिस्सों से होकर गुजरने वाली यह रेल लाइन विश्व की सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण रेल लाइन है।

कश्मीर घाटी में रेल नेटवर्क : चरणबद्ध रूप से कार्य करते हुए रेलवे ने पहले अनंतनाग से मझोम तक 68 किमी उसके बाद मझोम से बारामूला 32 किमी तत्पश्चात काजीगुण्ड से अनंतनाग 18 किमी लंबे रेल सेक्शन का कार्य पूरा करके

पीर पंजाल सुरंग

कश्मीर घाटी में रेल संपर्क उपलब्ध कराया। इस लाइन पर सबसे लंबी रेल सुरंग, पीर पंजाल रेल सुरंग जम्मू एवं कश्मीर रेलवे के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। श्री माता वैष्णो देवी कटरा तथा बनिहाल सेक्शन को रेल नेटवर्क से जोड़ने का कार्य भी तेजी से किया जा रहा है।

पीर पंजाल सुरंग : 11 किमी लंबी टी-80 सुरंग सबसे लंबी यातायात सुरंग है। यह पीर पंजाल पर्वत क्षेत्रों से गुजरते हुए कश्मीर घाटी को जोड़ती है। यह जम्मू के लोगों को हर मौसम में उपलब्ध रहने वाला वैकल्पिक यातायात माध्यम उपलब्ध कराती है। 7 वर्ष 5 महीने में तैयार की गई इस सुरंग को 150 इंजीनियरों और 1300 फील्ड कर्मियों ने दिन-रात के अथक श्रम से पूरा किया है। इस लाइन के निर्माण में तीन लाख क्यूबिक मीटर कंक्रीट और 7500 मीट्रिक टन इस्पात का उपयोग किया गया है।

रेलवे स्टेशन : इस सेक्शन पर पड़ने वाले रेलवे स्टेशनों में बनिहाल, शाहाबाद हॉल्ट, काजीगुण्ड, सदूरा, अनंतनाग, बिजबहेड़ा, पंजगाम, अवंतीपुरा, काकापोर, पंपोर, श्रीनगर, बड़गाम, मझोम, पट्टन, हामरे, सोपोर और बारामूला शामिल हैं।

कश्मीर घाटी रेलवे के लिए विशेष प्रकार के डीईएमयू डिब्बे

इंटीग्रल कोच फैक्टरी, चेन्नै द्वारा खास खूबियों वाला एक रेल इंजन इस लाइन के लिए डिजाइन किया गया है। यह 1400 अश्वशक्ति का डीजल इंजन है। इंजन को सर्दियों में तत्काल स्टार्ट करने और गर्म रखने की सुविधा है। इसके चालक कक्ष का बाहरी सिरा फाइबर के प्लास्टिक नोज कोन वाला है जो इंजन के आगे के हिस्से को खूबसूरत बनाता है। चालक कक्ष को गर्म रखने तथा कश्मीर के शीतकालीन मौसम में कोहरे को हटाने के लिए डी-फॉगिंग यूनिट और स्पष्ट दृश्यता के लिए सिंगल लुक आउट ग्लास है। सर्दियों में पटरियों पर गिरी बर्फ को हटाने के लिए इंजन के आगे स्नो कटिंग टाइप कैटल गार्ड लगे हैं। इस सेक्शन पर चलाई जा रही 11 जोड़ी डीईएमयू रेलगाड़ियां हर मौसम में रेल सुविधा उपलब्ध कराती हैं। जनयातायात के रूप में शुरू की गयी यह रेल सेवाएं बहुत जल्दी ही वहाँ के लोगों में लोकप्रिय हो गई हैं। रेल यात्रियों की बढ़ती हुई संख्या के मद्देनजर डीईएमयू रेलगाड़ियों की यात्री वहन क्षमता भी बढ़ाई गयी है।

तो, अब कश्मीर यात्रा के लिए हो जाइए तैयार! उत्तर रेलवे के साथ चलिए भारत के एक अनोखे भू-भाग में। एक विशिष्ट संस्कृति, आस्था के ताने-बाने, एक समृद्ध विरासत, कुटीर और लघु उद्योग, कढ़ाई, अखरोट की लकड़ी से बने फर्नीचर, हाथ के बुने कार्पेट, हैंड-रग, कीमती केसर के साथ-साथ मिलिए वहां के अदभुत एवं मिलनसार लोगों से। यह भारत की भूमि है। विविधता में एकता दर्शाने वाली एक अनोखी संस्कृति...■

70वें गणतंत्र दिवस परेड

70वें गणतंत्र दिवस परेड में प्रस्तुत भारतीय रेल की झांकी

भारतीय रेल ने 70वें गणतंत्र दिवस परेड में 'मोहन से महात्मा' की थीम पर आधारित अपनी झांकी प्रस्तुत की। इस झांकी में महात्मा गांधी और भारतीय रेल की स्वदेशी विकासवादी यात्रा को प्रदर्शित किया गया।

भारतीय रेल की झांकी में 'मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा में रूपांतरण' को दर्शाया गया था। 1893 में युवा मोहनदास को दक्षिण अफ्रीका के पीटरमैरिट्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर एक 'यूरोपियन ऑनली' डिब्बे से बाहर निकाल दिया गया था। इस घटना ने उन्हें 'सत्याग्रह' करने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में काम किया। बाद में वह इस राष्ट्र के लिए 'महात्मा' के रूप में उभरे।

झांकी के प्रथम हिस्से में एक भाप के इंजन को दर्शाया गया था। इसके शीर्ष पर महात्मा गांधी की प्रतिमा थी जो जून 2018 में दक्षिण अफ्रीका के पीटरमैरिट्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर स्थापित प्रतिमा के समान थी। मध्य भाग में युवा मोहनदास को दक्षिण अफ्रीका में डिब्बे से बाहर निकालने की घटना का, मध्य भाग के दूसरे कोच में गांधीजी को उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी के साथ तृतीय श्रेणी के डिब्बे में संपूर्ण भारत की रेल यात्रा के दौरान रेलवे स्टेशन पर लोगों से मिलते हुए तथा झांकी के पिछले हिस्से में, महात्मा गांधी को बंगाल, असम और दक्षिण भारत की नवंबर 1945 से जनवरी 1946 के बीच की अपनी रेल यात्रा के दौरान 'हरिजन फंड' के लिए दान एकत्र करते हुए दिखाया गया था।

साइड पैनल में दिखाया गया था कि कैसे भारतीय रेल ने महात्मा गांधी के 'स्वदेशी' के सपने को साकार किया है। इसमें भारतीय रेल की भाप इंजन के युग से शुरू हुई यात्रा से लेकर भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' परियोजना के तहत् बनाई गई स्वदेशी अत्याधुनिक 'ट्रेन-18' (वंदे भारत) को दिखाया गया था। ■

में भारतीय रेल

70वें गणतंत्र दिवस पर पूरे गौरव के साथ भाग लेते हमारे रेलवे सुरक्षा बल के जवान

विशिष्ट सेवा हेतु आरपीएफ कार्मिक राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित

गणतंत्र दिवस-2019 के अवसर पर राष्ट्रपति ने विशिष्ट और मेधावी सेवाओं के लिए रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और रेलवे सुरक्षा विशेष (आरपीएसएफ) के कार्मिकों और अफसरों को राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया।

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (पीपीएम) पुरस्कार

- पी. पोनराज, सुरक्षा आयुक्त/ दक्षिण रेलवे

मेधावी सेवाओं के लिए पुलिस पदक (पीएम) पुरस्कार

- टी. ए. रामचंद्रन, सहायक सुरक्षा आयुक्त, केआरसीएल
- टी. मुरली कृष्णा, सहायक सुरक्षा आयुक्त, दक्षिण मध्य रेल
- संजय कुमार स्वैन, सहायक सुरक्षा आयुक्त, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- ओमप्रकाश यादव, हेड कांस्टेबल, पश्चिम रेलवे
- बसवराज दामोदर गर्ग, उप-निरीक्षक, मध्य रेल
- अशोक कुमार कहार, उप-निरीक्षक, मध्य रेल
- भगवान भूसिंह राणे, सहायक उप-निरीक्षक, मध्य रेल
- राजेश कुमार त्रिपाठी, हेड कांस्टेबल, मध्य रेल
- चंदन सिंह, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर/पश्चिम मध्य रेलवे
- विनोद कुमार शुक्ला, उप-निरीक्षक/टीसी-एमएलवाई
- सुखदेव घोष, उप-निरीक्षक/दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- ए. वीरन्ना, निरीक्षक/दक्षिण मध्य रेलवे
- राजेश कुमार विश्वकर्मा, सहायक उप-निरीक्षक/दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- रमेश कुमार बोरकर, हेड कांस्टेबल, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- दत्तात्रे वी. गोडोलू, हेड कांस्टेबल, मध्य रेल ■

तिनसुकिया रेलवे हेरिटेज पार्क और संग्रहालय - एक अनोखा उदाहरण

ऊपरी असम के उद्योग और व्यापार का केन्द्रबिन्दु तिनसुकिया, असम का एक अनोखा पर्यटन स्थान भी है। तिनसुकिया के आसपास ही कई पर्यटन स्थान जैसे - डिब्रू-साइखोवा राष्ट्रीय उद्यान, तेलेंगा मंदिर, लेखापानी आदि हैं। तिनसुकिया में पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्रबिन्दु स्वरूप एक अनुपम उदाहरण रेलवे हेरिटेज पार्क और म्यूजियम है जो न्यू तिनसुकिया रेलवे स्टेशन के पास और राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 37 के समीप स्थित है। सौन्दर्यशाली पार्क शैली से निर्मित रेल विभाग के इस म्यूजियम में स्वतंत्रता के समय में भारतीय रेल में व्यवहार किए गए और इंग्लैंड से आयातित रेल इंजन हैं जैसे - 1899 में निर्मित नैरोगेज पर चलनेवाला वाष्प इंजन, 1945 में निर्मित मीटरगेज पर चलनेवाला दो मुँह वाला वाष्प इंजन साथ ही विभिन्न प्रकार के रेल डिब्बे एवं रेल की कई मशीनों सहित अनेक सामग्रियां मौजूद हैं। 'जयमती-2618' नामक मीटर गेज पर चलने वाला वाष्पचालित इंजन जो 1957 को निर्मित हुआ था, ने म्यूजियम के सौन्दर्य को और बढ़ाया है। इस मनमोहक रेलवे हेरिटेज पार्क और म्यूजियम पर प्रकाश डालने से पहले हमें ऊपरी असम में रेल यातायात के ऐतिहासिक क्षणों पर नजर डालना होगा।

ऊपरी असम की ऐतिहासिक एवं युगांतकारी 'डिब्रू- सदिया रेलवे'

वर्ष 1878 में ऊपरी असम में रेल मार्ग निर्माण हेतु असम के मुख्य आयुक्त को प्रस्ताव भेजा गया। इस प्रस्ताव के अंशस्वरूप 4 दिसम्बर, 1879 को सदिया, माकुम, दुमदुमा और डिहिंग नदी तक संयोजन का निर्णय लिया गया। उल्लेखनीय है कि 30 जुलाई, 1880 को 'असम रेलवे एंड ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड' शामिल होने के बाद 1881 को डिब्रूगढ़ कारखाना स्थापित किया गया। वर्ष 1882 में डिब्रूगढ़-सदिया रेलवे का निर्माण कार्य शुरू होकर उसी वर्ष की पहली मई को मीटर गेज रेल मार्ग से असम के डिब्रूगढ़ स्टीमर घाट (मोहनमुख) से जयपुर रोड तक इंजन चलाया गया। 15 अगस्त और 23 दिसम्बर, 1882 को क्रमानुसार दिनजान और चाबुवा तक मालगाड़ी यातायात हेतु रेल मार्ग खोल दिया गया। बाद में 16 जुलाई, 1883 को इतिहास के पन्ने में नाम दर्ज करके डिब्रू-सदिया रेल मार्ग से चाबुवा तक पहली यात्री गाड़ी की शुरुआत हो गयी।

तिनसुकिया रेल मंडल - एक संक्षिप्त इतिहास

वर्ष 1882 में डिब्रू-सदिया रेलवे के एक अंश के रूप में आसाम रेलवे एंड ट्रेडिंग कंपनी ने डिब्रूगढ़ के आमोलापट्टी से दिनजान तक 15 मील लम्बे रेल मार्ग का निर्माण कार्य पूरा किया। 1884 के फरवरी महीने में इस मार्ग का मार्घेरिटा तक विस्तार किया गया। बाद में, क्रमानुसार इसको मार्घेरिटा से लीडो और माकुम जंक्शन से तालाप तक विस्तारित किया गया। वर्ष 1903-04 में असम-बंगाल रेलवे के रेल मार्ग सितागंग से लामडिंग होते हुए तिनसुकिया में 'डिब्रू-सदिया रेलवे' के साथ संयुक्त हुआ। तिनसुकिया मरियानी-लामडिंग सेक्शन से गोलाघाट हो कर जोरहाट तक और बाद में फरकाटिंग तक रेल मार्ग से संयुक्त करवाने के कार्य में 'जोरहाट प्रोविंसियल रेलवे' ने खास भूमिका निभाई।

वर्ष 1909 में फिर 'डिब्रू-सदिया रेलवे' के अधीन रेल मार्ग तालाप से साइखोवा घाट तक विस्तारित किया गया। यद्यपि, प्रारंभ में इस मार्ग को चाय लदान के कार्य हेतु व्यवहार किया गया था ऊपरी असम में कोयला और तेल उत्खनन के बाद यह रेल मार्ग इन सामग्रियों को लदान के क्षेत्र में ऊपरी असम को देश के दूसरे हिस्सों के साथ जोड़ कर परिवहन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

'डिब्रू-सदिया' और 'आसाम-बंगाल' की तरह बहुत पुरानी रेल व्यवस्था के संयुक्त संयोग से तिनसुकिया एक अनन्य एवं सम्पदाशाली रेल संस्कृति का ऐतिहासिक वाहक बन गया है। 1945 के अप्रैल महीने में डिब्रू-सदिया और दूसरे संयोगी रेलवे को सरकार ने क्रय करके 'आसाम-बंगाल रेलवे' के साथ एकीकरण कर दिया। 1953 में 'आसाम रेलवे' नार्थ-ईस्टर्न रेलवे' के साथ शामिल हो गई और 27 जून, 1988 से तिनसुकिया रेलवे मंडल का कार्य पूर्ण रूप से शुरू हुआ।

रेलवे हेरिटेज पार्क और संग्रहालय

न्यू तिनसुकिया रेलवे स्टेशन के साथ संलग्न एवं 37 नं. राष्ट्रीय राजमार्ग के पास ही स्थित रेलवे हेरिटेज पार्क और संग्रहालय एक ऐतिहासिक खूबसूरती का उदाहरण है। न्यू तिनसुकिया रेलवे स्टेशन के प्रवेश द्वार से घुसते ही बाएं स्थित हेरिटेज पार्क सभी रेल यात्रियों को आकर्षित करते हैं। पार्क के सामने स्थित विभिन्न नैसर्गिक चित्रों सहित तिनसुकिया रेलवे स्टेशन की खूबसूरती सभी का मन मोह लेती है। तिनसुकिया

हेरिटेज पार्क के प्रवेश द्वार

मंडल के मंडल रेल प्रबंधक संजय मुखर्जी (आईआरएएस)के प्रयत्न से बना रेलवे हेरिटेज पार्क 24 जुलाई, 2010 को आगन्तुकों के लिए खोल दिया गया।

हेरिटेज पार्क की ऐतिहासिक विशेषता

भारतीय रेल के ऐतिहासिक संसाधन समृद्ध हेरिटेज पार्क में आगन्तुकों को आकर्षित करने हेतु विभिन्न आकर्षक चित्र दीर्घाओं को सजा कर रखा गया है। इसमें उल्लेखनीय है कि डिब्रू-सदिया और आसाम-बंगाल रेलवे के ऐतिहासिक वाष्प इंजन जयमती (1957 में चित्तरंजन इंजन निर्माण कारखाना में निर्मित) कार्यकारी संबंधी आलोकचित्र, फेयरी क्वीन (गिनिज

स्टोरिज एंड लीजेंड चित्र-बीथिका

बुक आफॅ वर्लड् रिकार्ड के अधीन) का सुन्दर चित्र, यूनेस्को विश्व विरासत क्षेत्र के अधीन दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे के कार्यकारी उत्कीर्ण चित्र-दीर्घा, स्टोरिज एंड लिजेंड चित्र-दीर्घा में रेल एवं स्वतंत्रता आंदोलन, रेलवे ड्यूरिंग वर्ल्ड वार-2, द ग्रेट अर्थक्वेक ऑफ 1950 (मनोबीना दासगुप्त वर्णित) आदि आलोकचित्र किसी भी जिज्ञासु आगन्तुक को मोहित करेगा।

डिब्रू-सदिया और आसाम-बंगाल रेलवे से लेकर भारतीय रेल की कई ताजी यादों को संरक्षित रखने वाला हेरिटेज हॉल को सुन्दर ढंग से सजा कर रखा गया है। सुसज्जित ढंग से रखे गए पुराने रेल इंजन, रेल डिब्बे और दूसरी मशीनरी के समृद्ध वर्णन आगन्तुकों का हृदय जीते हैं। भारतीय रेल की एक यादगार स्मृति है - लेखापानी गैलरी। लेखापानी गैलरी को समृद्ध करने वाले छोटे पुस्तकालय में मूल्यवान पुस्तकें और पूर्व में व्यवहृत कई रचनाओं के साथ-साथ गैलरी में बहुत पुराने रेलवे साज-सामान और मशीनें विशेष रूप से सजाकर रखी गई हैं।

हेरिटेज पार्क की दर्शनीय वस्तुएं : ब्रिटिश अवधि में डिब्रू-सदिया रेलवे और आसाम-बंगाल रेलवे के लिए इंग्लैंड से कई मशीनें और इंजन आयात की गई थी। भारतीय रेल के इतिहास को संरक्षित करके रखने के लिए जो प्रयत्न किए गए, हेरिटेज पार्क स्थित कीर्तिचिह्न उसका उत्कृष्ट सबूत है।

नैरोगेज वाष्प इंजन - 781

मेसर्स शार्प स्टीवर्ड एंड कंपनी लिमिटेड, ऐटलस वर्क्स, मैंचेस्टर, इंग्लैंड द्वारा 1899 को नैरोगेज में उपयोग करने हेतु इस वाष्प चालित इंजन का निर्माण किया गया था। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे के दुर्गम पहाड़ी इलाके में सेवारत इंजन को 1969 को कोल इंडिया लिमिटेड द्वारा खरीद लिया गया। पू. सी. रेल के प्रयत्न से पुनः इस इंजन को तिनसुकिया हेरिटेज पार्क में स्थापित किया गया।

वर्ष 1899 को निर्मित वाष्प इंजन और 1898 का ब्रिज पिलर

ऐतिहासिक ब्रिज पिलर : नाहरकटिया और नामरूप स्टेशन के बीच स्थित पुल संख्या 556 के दो खंभों का निर्माण वर्ष 1898 में किया गया था। 1997 में मीटरगेज रेलमार्ग के बड़ी लाइन में परिवर्तित होने के बाद इन दो खंभों को हेरिटेज

पार्क में रखा गया है।

मीटरगेज डीजल इंजन : वाराणसी डीजल इंजन निर्माण कारखाने में वर्ष 1961 को वाईडीएम 4-6114 डीजल इंजन का निर्माण किया गया था। इस इंजन का व्यवहार 31 जनवरी, 1962 से ही लामडिंग-बदरपुर सेक्सन में रेल संचालन हेतु किया जा रहा था।

नैरोगेज रेल डिब्बा एच सी जेड-27 : वर्ष 1968 में पू.सी. रेलवे के गोरखपुर कारखाने में दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे के लिए 'रंगीत' नामक रेल डिब्बे का निर्माण किया गया था।

बड़े इंजन-32086 : वर्ष 1945 में पहाड़ी इलाके के मीटरगेज रेल मार्ग पर व्यवहार के लिए इस शक्तिशाली इंजन

का निर्माण मेसर्स बियर पीकॉक कंपनी लिमिटेड, इंग्लैंड ने किया था। वास्तव में म्यामार में चल रहे दूसरे विश्व युद्ध में उपयोग करने हेतु इस इंजन का निर्माण किया गया। बाद में विश्व युद्ध खत्म होने के बाद यह इंजन को आसाम-बंगाल रेलवे को सौंपा गया। 29 दिसम्बर, 1975 तक लामडिंग-बदरपुर सेक्शन में इस इंजन कार्यरत था।

गौरवशाली वाष्प इंजन 'जयमती'- 2618 : वर्ष 1957 में मीटरगेज में व्यवहार किए जाने वाले इस वाष्पचालित इंजन को चित्तरंजन इंजन निर्माण कारखाना में निर्मित किया गया था। 15 जुलाई, 1957 से लामडिंग-तिनसुकिया सेक्शन में कार्य सम्पादित करने वाला यह इंजन 21 जनवरी, 1997 को कार्यमुक्त हुआ। हेरिटेज हॉल में सजाकर रखा गया यह इंजन

बहुत ही खूबसूरत है।

वर्ष 1892 में निर्मित रेलवे टर्न टेबल : 1892 में निर्मित रेलवे टर्नटेबल और 1899 के स्टील ब्रिज गार्डर हेरिटेज

पार्क में सुन्दर ढंग से सजाकर रखे गए हैं।

हेरिटेज हॉल-विरासत : पूर्व में व्यवहृत इंजन और रेल डिब्बा हेरिटेज हॉल में बड़े अच्छे से सजाकर रखे गए हैं। इसमें वातानुकूलित परिदर्शन डिब्बा वीडियो हॉल में आगन्तुकों के लिए विभिन्न प्रकार के डाक्यूमेंटरी फिल्म प्रदर्शन की व्यवस्था हेतु रखा गया है। सुन्दर प्रकाश व्यवस्था से सजे हुए हॉल में रेल इंजन और रेल डिब्बा के क्रमवार विकास की एक फोटो दीर्घा है। गौरवशाली वाष्पचालित इंजन जयमती को इस हॉल में रखा गया है।

लेखापानी गैलरी : लेखापानी गैलरी हेरिटेज हॉल के पास ही स्थित है । इस गैलरी के अन्दर एक छोटा पुस्तकालय भी है। इस पुस्तकालय में कई मूल्यवान किताबें, जैसे - हिस्ट्री ऑफ इंडियन रेलवेज, 1968 वर्किंग टाइमटेबल, वर्ष 1938-40 के पुराने टिकट खाते, कई तरह की पुस्तिकाएँ आदि संरक्षित करके रखे गए हैं। भारत के साथ विश्व रेलवे के बेजोड़ संबंध को बड़ी खूबसूरती से प्रदर्शित किया गया। उससे संबंधित आलोक चित्र लगे हुए हैं जैसे - स्टोरिज एंड लिजेंड्स, ग्रेट फूट - प्रिन्ट, मैप्स एंड ड्राइंग, हेरिटेज बिल्डिंग, ए जर्नी थ्रू स्टैम्प, क्लासिक ब्रिज, कोलाज ऑफ ए ट्रिब्यूट टू इंडियन रेलवे मैन आदि।

रेलवे के विभिन्न विभाग में व्यवहृत संग्रहित मशीनें सुन्दर ढंग से नामांकित करके गैलरी में सजाकर रखी गई हैं। आकर्षक सामग्रियों में से सबसे पुराने स्पीरिट लेवल, स्किउगेट, लैम्प, कम्पास, मैगर, अमेरिटर, तीन पिन के चकेत, स्क्रू जेक, मर्चकोड जनेटरिंग मशीन, फेचित एडिंग मशीन, टिकट नीपर,

लेखापानी अंत:द्वार गैलरी

लेखापानी गैलरी का सामनेवाला हिस्सा

टेलीग्राफ बक्स, कोच में व्यवहृत लेवटरी सीट, पेट्रोल दीप, कोर बक्स, आग बुझाने वाली मशीन, तूफान प्रतिरोधी दीप, पैर से चलानेवाला रक्त चाप मापक यंत्र, भार मापक यंत्र, गार्ड और स्टेशन मास्टर के कपड़े, रेलवे सुरक्षा कर्मियों द्वारा उपयोग करने वाला सामान, टेल लैम्प, कैश सेफ-बॉक्स, अल्यूमीनियम निर्मित मीटर गेज के गेज-लेवल आदि हैं। कांच के डिब्बों में प्रदर्शित ऐतिहासिक सामग्री और प्रज्ज्वलित रोशनी ने गैलरी को और खूबसूरती प्रदान करती है।

दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे गैलरी

पार्क में विश्व विरासत का दर्जा प्राप्त दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे (डीएचआर) का एक संक्षिप्त संस्करण आकर्षित रूप से प्रदर्शित किया गया है। डीएचआर कोच एवं साथ ही ज्ञान समृद्ध सामग्रियों की चित्र-बीथिका डीएचआर गैलरी के भीतर रखी गई है। डीएचआर में व्यवहृत, संरक्षित और कार्यक्षम इंजनों की एक वृहत सूची चित्र-बीथिका में शामिल की गई है, जिसकी निर्माण अवधि वर्ष 1889 से क्रमानुसार 1911 और 1928 है। टूरिस्ट डेस्टिनेशन में दार्जिलिंग स्थित पर्यटन स्थल जैसे - टाइगर हिल्स का सूर्योदय का दृश्य, रॉक गार्डेन, बतासिया लूप आदि का सुन्दर प्रदर्शन किया गया है। चित्र-बीथिका डीएचआर की विभिन्न तस्वीरों को प्रकाशित करती है। हिस्ट्री ऑफ दार्जिलिंग - हिमालयन रेलवे में आगन्तुकों के सुविधार्थ एक चमकप्रद वर्णन शामिल है।

तकनीकी सामग्री के विशेष संग्रहालय टेक्नो हाट

सुन्दर झोपड़ी घर जैसे ग्लास से निर्मित टेक्नो हाट में अभियांत्रिक-बिजली विभाग और यांत्रिक-सिगनल विभाग के कई पुराने साज-सामान संरक्षित किए गए हैं। टेक्नोहाट में रेलकर्मी की आकृति बनाकर पुराने समय की रेलवे कार्य प्रणाली की रूपरेखा को प्रदर्शित की गई है।

आगन्तुकों के मनोरंजन हेतु ट्वाय ट्रेन और बाल उद्यान

कार्यरत स्टेशन मास्टर, बुकिंग ऑफिस, विश्रामगृह आदि के साथ स्टेशन मास्टर का कार्यालय अत्यन्त सुन्दर है। सीमान्त रेल जंक्शन में बहुत कम कीमत के टिकट से यात्री पार्क के चारों तरफ ट्वाय ट्रेन में सवार होकर घूम सकते हैं। इस ट्रेन से यांत्रिक यार्ड, ब्रॉड गेज, मीटर गेज और नैरो गेज के सुन्दर प्रदर्शनी ट्रैक अरेना, स्पोक ह्वुइल, ट्रॉली हाट, हेरिटेज ब्रिज के नीचे से पार होकर टेक्नो हाट, राष्ट्रीय मुख्य मार्ग के पास स्थित हनुमान मन्दिर पार करके डीएचआर गैलरी, लेखापानी गैलरी के निकट स्थित ट्वाय ट्रेन रेप्लिका, भव्य ग्यारेट इंजन, डेमू यार्ड आदि देखने के बाद हेरिटेज हॉल विरासत के बीच से घुसकर, सिगनलिंग यार्ड, लेवल क्रॉसिंग पार होकर फिर सीमांत रेलवे जंक्शन में उपस्थित हो सकते हैं। शाम को बहुरंगी सज्जा की चमक से इस भ्रमण को और रोमांचक बनाता है। बाल उद्यान के पानी के फव्वारे एवं विभिन्न प्रकार के खेलने के सामानों से खेल-कूद कर बाल एवं युवाओं का मन आनंद से भर जाता है। स्वच्छ फूट मार्ग से पैदल चलकर बहुरंगी फूलों की खूबसुरती देख सकते हैं। बाल उद्यान तथा पार्क के बीच ऐतिहासिक ब्रिज पिलर के ऊपर रखा। वर्ष 1899 में निर्मित वाष्प इंजन आगन्तुकों को और अधिक आकर्षित करता है।

ऐतिहासिक रूप से समृद्ध हेरिटेज पार्क में और अधिक दूसरे आकर्षनीय साज-सामान भी हैं, जैसे - वर्ष 1997 से 2008 तक तिनसुकिया मंडल में व्यवहृत मेलट्रोन रेडिओ रीले लिंक सामानों का प्रदर्शन, वर्ष 1924 में निर्मित टम्बलर प्वाइंट, सिगनलिंग यार्ड में रखे गए सिगनलिंग निर्देशका का मॉडल, यांत्रिक यार्ड में प्रदर्शित भव्य वर्टिकल ब्वॉयलर, टिलटिंग फर्नेस आदि आगन्तुकों को सच में आनन्द प्रदान करते हैं। पुरुष-महिलाओं के लिए टॉयलेट की सुविधा व पार्क में आगन्तुकों के लिए कॉफी कॉर्नर भी है। हेरिटेज पार्क के प्रवेश मार्ग के दाईं तरफ न्यू तिनसुकिया स्टेशन का नैसर्गिक प्राकृतिक दृश्य, प्रवेशद्वार के बाईं तरफ टिकट काउंटर और दाईं तरफ पहरेदार का कक्ष है। आगन्तुकों के मनोरंजन के लिए पार्क अनुरक्षकों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

आगंतुकों के लिए यह स्थल यादगार स्थल बन गया है।■

हेरिटेज पार्क की अन्य झांकी

डिब्रू-सदिया रेलवे में व्यवहृत लेवल क्रॉसिंग का सूचना बोर्ड

सीमांत रेलवे जंक्शन का ट्वाय ट्रेन स्टेशन

हेरिटेज पार्क की खूबसुरती

स्पाक व्हील

ट्रैक एरिना का एक अंश

यांत्रिक यार्ड में संरक्षित एक सामग्री

भारतीय रेल की प्रतिष्ठित पर्यटन रेलगाड़ियां

विमलेश चन्द्र, सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर

भारतीय रेल में अनेकों प्रकार की रेलगाड़ियां चलती हैं। जिनमें मालगाड़ियां, विभागीय रेलगाड़ियां, यात्री रेलगाड़ियां, मेल/एक्सप्रेस रेलगाड़ियां, सुपरफास्ट रेलगाड़ियां, पर्वतीय रेलगाड़ियां, प्रतिष्ठित रेलगाड़ियां और पर्यटन रेलगाड़ियां शामिल हैं। भारतीय रेल जो पर्यटन रेलगाड़ियां चलाती है। वह भारतीय रेल की कंपनी, भारतीय रेल खानपान और पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के साथ मिल कर चलाती हैं। यह भारत में लक्जरी पर्यटन रेल यात्रा के अंतर्गत कई पर्यटन रेलगाड़ियां चलाती है। आईआरसीटीसी, देश-विदेश के पर्यटकों के लिए बजट और डीलक्स पैकेज टूर का आयोजन करता है। 'भारत दर्शन' नामक लोकप्रिय पर्यटन पैकेज में समुचित बजट में पर्यटकों को भारत के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों की सैर करायी जाती है।

इसके द्वारा लग्जरी पर्यटन पैकेज भी उपलब्ध कराये जाते हैं, जिनमें विशेष लग्जरी गाड़ियों में यात्रा करायी जाती है। पारम्परिक पर्यटन के अलावा आईआरसीटीसी, साहसिक पर्यटन पैकेज भी उपलब्ध कराता है। जिसमें पानी के खेल, जोखिम भरे खेल और जंगलों में लम्बी पैदल यात्रा इत्यादि शामिल हैं। इनके अलावा पर्यटकों की विशिष्ट पसन्द के अनुकूल पर्यटन योजना बनाने का प्रावधान इसका एक और खास आकर्षण है।

फेयरी क्वीन पर्यटन रेलगाड़ी- वर्तमान समय में भारत एवं विश्व का सबसे पुराना एवं सफलता पूर्वक वर्तमान में भी कार्यरत तथा किसी भी तरह के रेल इंजनों में सबसे पुराना इंजन 'फेयरी क्वीन' भाप इंजन है जिसने 1 फरवरी, 2017 को अपना 161वाँ गौरवपूर्ण वर्ष पूर्ण कर लिया है। इस इंजन का निर्माण वर्ष 1855 में हुआ था तथा इसे इसी वर्ष 1855 में ही ईस्ट इंडिया रेलवे द्वारा खरीदा गया था। फेयरी क्वीन से पूर्व इसी तरह एक और रेल इंजन 'एक्सप्रेस', जिसे फेयरी क्वीन की जुड़वा बहन कहा जाता था का निर्माण फेयरी क्वीन से पहले अर्थात वर्ष 1854 में किया गया था। इन दोनों भाप इंजनों अर्थात फेयरी क्वीन तथा एक्सप्रेस का निर्माण यूनाइटेड किंगडम के अंतर्गत लीड्स किटसन थामसन तथा हेविटसन ने किया था। इनमें से एक्सप्रेस रेल इंजन को सर्वप्रथम 15 अगस्त, 1854 को प्रथम यात्री गाड़ी के साथ हावड़ा से हुगली के बीच 24 मील की दूरी पर ईस्ट इंडिया रेलवे की प्रायोगिक लाइन पर चलाया गया था। जबकि फेयरी क्वीन को सर्वप्रथम 1 फरवरी, 1855 को हावड़ा और रानीगंज के बीच 121 मील दूरी पर चलाया गया था। इन दोनों इंजनों को क्रमशः वर्ष 1854 एवं वर्ष 1855 में इंग्लैंड से मंगाया गया था। फेयरी क्वीन नई दिल्ली और राजस्थान में अलवर के बीच चलने वाला एक भाप इंजन है। वर्ष 1855 में निर्मित इस भाप इंजन को वर्ष 1998 में गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान मिला। सर्वप्रथम इसे पर्यटन के उद्देश्य से 18 जुलाई, 1997 को प्रथम व्यावसायिक ट्रिप के रूप में चलाया गया। फिर 16 अगस्त, 1997 को एवं 27 सितंबर, 1997 को इसे दिल्ली से अलवर के बीच चलाया गया। 18 अक्टूबर, 1997 को इसे व्यावसायिक पर्यटन रेलगाड़ी के रूप में तथा 21 फरवरी, 1998 के बीच तक दिल्ली और अलवर के बीच लगभग एक माह के अंतराल पर पाँच बार चलाया गया। इसके बाद इसे विभिन्न रेल खंडों पर पर्यटन यात्रा के रूप में कई बार चलाया गया। तब से लेकर अब तक यह प्रतिवर्ष अक्टूबर से मार्च तक दिल्ली कैंट से अलवर तक एक पर्यटन पैकेज के रूप में चलाया जाता है। पर्यटन यात्रा पूरी होने के बाद इसे राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली में प्रदर्शन हेतु रखा जाता है। इस रेलगाड़ी में दो डिब्बे लगाये जाते हैं। जिसमें पहला कोच यात्रियों के बैठने के लिए वातानुकूलित चेयर कार होता है, जबकि दूसरा कोच पैन्ट्री कार होता है। इस रेलगाड़ी के डिब्बों को पर्यटकों को आराम देने के अनुरूप विशेष रूप से डिजाइन किया गया है तथा इसके अंतर्गत खान-पान की सुविधा, गाइड, मधुर संगीत तथा पत्र-पत्रिकाएँ इत्यादि उपलब्ध कराई गई हैं। यात्रा के दौरान पर्यटकों को राजस्थान पर्यटन निगम के होटल सरिस्का में ठहराया जाता है जहाँ पक्षी विहार, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा रात्रि भोजन उपलब्ध कराया जाता है। ■

पैलेस ऑन व्हील्स पर्यटन रेलगाड़ी – 'पैलेस ऑन व्हील्स' लक्जरी ट्रेन है। यह राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेल द्वारा चलाई जा रही है। भारतीय रेल की इस प्रतिष्ठित पर्यटन रेलगाड़ी की गणना विश्व की दस सबसे प्रतिष्ठित रेलगाड़ियों में होती है। इसकी शुरुआत मीटर गेज रेलगाड़ी के रूप में 26 जनवरी, 1982 को हुई थी। इसे 2 अक्टूबर, 1991 में पुनः नए वातानुकूलित मीटर गेज कोचों के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त करके चलाया गया था। गेज परिवर्तन के कारण जनवरी, 1995 से इसने पुनः बड़ी रेल लाइन पर नए रैक के साथ विभिन्न पर्यटन स्थलों की यात्रा शुरू की। अगस्त, 2009 में इसे फिर नई साज सजावट, नये यात्रा कार्यक्रम और भोजन के साथ शुरू किया गया था।

इसमें राजस्थान के राजसी ठाटबाट की पूरी झलक देखने को मिलती है। इसमें महाराजा और महारानी नामक दो भोजनयान हैं। इस रेलगाड़ी में कुल 14 सुसज्जित कोच होते हैं। प्रत्येक कोच में दो केबिन (कंपनी द्वारा नामित कक्षों या सैलून) डबल बेड, फर्श पर कालीन बिछा होना, एयर कंडीशनिंग, चैनल संगीत, संलग्न शौचालय, गर्म और ठंडे पानी, साथ चलने वाले व्यक्तिगत सहायक उपलब्ध रहते हैं। इस रेलगाड़ी के सभी कोचों में वाई-फाई नेटवर्क, एलसीडी टीवी, सैटेलाइट चैनल, संचार सुविधाएं तथा पुस्तकालय इत्यादि उपलब्ध हैं। इसमें बार तथा लॉज की सुविधा भी उपलब्ध है। आठ दिनों की यात्रा के दौरान यह राजस्थान के पर्यटन स्थलों सहित दिल्ली तथा आगरा का भी पर्यटन कराती है। यह रेलगाड़ी जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भरतपुर तथा आगरा की यात्रा कराती है। यह पूर्णतः वातानुकूलित पर्यटन रेलगाड़ी है। पैलेस ऑन व्हील्स की अवधारणा में इसके डिब्बों का नामकरण शाही पृष्ठभूमि से लिया गया है,जिसे मूल रूप से राजपूताना, गुजरात के रियासतों के राज्य शासकों, हैदराबाद के निजाम और ब्रिटिश भारत के वायसराय के व्यक्तिगत रेलवे डिब्बे के रूप में जाना जाता था। इस गाड़ी के डिब्बों में अलवर सैलून, भरतपुर सैलून, बीकानेर सैलून, बूंदी सैलून, धौलपुर सैलून, जैलसमेर सैलून, डुंगरपुर सैलून, जयपुर सैलून, झालावाड़ सैलून, जोधपुर सैलून, किशनगढ़ सैलून, कोटा सैलून, सिरोही सैलून, उदयपुर सैलून नाम रखे गए हैं। ■

भारत दर्शन विशेष पर्यटक ट्रेन – आईआरसीटीसी देश भर के सभी महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को कवर करने वाले सबसे सस्ती और सीमित बजट में यात्रा पैकेज प्रदान करती है। जिसमें से एक 'भारत दर्शन विशेष पर्यटक ट्रेन' शामिल है। भारत दर्शन यात्रा पैकेज में 800 रुपए प्रति व्यक्ति प्रति दिन का खर्च लगता है, जिसमें द्वितीय श्रेणी के स्लीपर कोच में ट्रेन द्वारा यात्रा करने के अलावा भोजन प्रदान करने, रुकने इत्यादि के खर्च शामिल हैं। वर्तमान में भारत दर्शन पर्यटन दक्षिण और पश्चिम क्षेत्र से ही शुरू होता है। यह रेलगाड़ी देश के प्रमुख पर्यटन व धार्मिक स्थलों का दर्शन कराती है। इसलिए इसे भारत दर्शन रेलगाड़ी कहते हैं। ■

गोल्डन चैरियट (स्वर्ण रथ) पर्यटन रेलगाड़ी – यह दक्षिण भारत की प्रथम पर्यटन लक्जरी रेलगाड़ी है। ट्रेन कर्नाटक, केरल, गोवा, तमिलनाडु और पुडुचेरी के भारतीय राज्यों में महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को जोड़ती है। इसकी शुरुआत 2 फरवरी, 2008 को बेंगलूरु के यशवंतपुर से हुई थी तथा इसका व्यावसायिक परिचालन 3 मार्च, 2008 से प्रारम्भ हुआ था। इसमें विश्व रेलवे में प्रथम बार वाई-फाई तकनीक वाली सेवा प्रदान की गई थी। यह भारतीय रेल खानपान एवं पर्यटन निगम तथा कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा पूर्ण रूप से चलाई जाती है। यह रेलगाड़ी हम्पी, पैडकल तथा गोवा के चर्च, विश्व स्मारक स्थलों के साथ बंगलौर, मैसूर, काबिनी, बेलुर, हम्पी, बादामी, गोवा इत्यादि स्थलों की पर्यटन यात्रा कराती है। रेलगाड़ी में प्लाज्मा टीवी, डीवीडी, 6 सेटेलाइट चैनलों के साथ वर्ल्डरोब, राइटिंग डेस्क, प्राइवेट बाथरूम जैसी आरामदायक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस रेलगाड़ी का नाम हम्पी में विठ्ठल मंदिर के रथ के नाम पर रखा गया है। जिसका अर्थ होता है 'स्वर्ण रथ'। इस रेलगाड़ी में 19 कोच होते हैं। जिस पर बैंगनी और सोने का रंग होता है। यह रेलगाड़ी साप्ताहिक संचालित होती है। स्वर्ण रथ के डिब्बों का नामकरण उस क्षेत्र पर शासन करने वाले राजवंशों के नाम पर रखा गया है, जिसमें कदंब, होयसाल, राष्ट्रकूट, गंगा, चालुक्य, बहमनी, आदिल शाही, संगमा, सातवाहन, यादुकुल और विजयनगर। इसमें दो रेस्तरां, एक लाउंज बार, सम्मेलन कक्ष, जिम और स्पा की सुविधाएं भी हैं। ■

महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस पर्यटन रेलगाड़ी – महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस पर्यटन रेलगाड़ी को बुद्धिस्ट (बौद्ध) सर्किट टूरिस्ट ट्रेन भी कहते हैं। यह सभी बौद्ध स्थलों का यात्रा कराने वाली एक लक्जरी ट्रेन है। बौद्ध विरासत वाले धार्मिक स्थलों की पर्यटन यात्रा हेतु 23 अक्टूबर, 1998 को गोरखपुर से इस रेलगाड़ी की शुरुआत हुई थी। आईआरसीटीसी द्वारा 28 मार्च, 2007 को इस रेलगाड़ी की दुबारा साज-सज्जा कर महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस या बुद्ध स्पेशल ट्रेन के नाम से पुनः शुरू की गई थी। यह वातानुकूलित रेलगाड़ी दिल्ली, गया, बोधगया, राजगीर, नालंदा, वाराणसी, सारनाथ, गोरखपुर, कुशीनगर,लुंबनी, गोंडा, श्रावस्ती, आगरा की पर्यटन यात्रा कराती है। ■

रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स पर्यटन रेलगाड़ी – भारतीय रेल द्वारा संचालित यह पर्यटन रेलगाड़ी एक लक्जरी ट्रेन है। यह पैलेस ऑन व्हील्स पर आधारित है और राजस्थान के पैलेस ऑन व्हील्स के समान मार्ग का अनुसरण करती है। यह भारतीय रेल खानपान एवं पर्यटन निगम और राजस्थान पर्यटन विकास निगम की ओर से चलाई जाती है। इस रेलगाड़ी से पर्यटकों को राजस्थान में कई महत्त्वपूर्ण पर्यटक, वन्यजीव और विरासत स्थलों पर ले जाया जाता है। पैलेस ऑन व्हील्स की सफलता के बाद इस रेलगाड़ी को 11 जनवरी, 2009 में चलाया गया था। यह रेलगाड़ी राजस्थान के राजशाही शासन के रहन-सहन, शान-शौकत तथा उनके अधीन राज्यों के दर्शन कराती है। इसमें डीलक्स केबिन, सुपर डीलक्स केबिन, बाथ ट्यूब, दो रेस्टरांलॉज, सैलून, जिम, वाई-फाई, बोर्ड रूम, कान्फ्रेंस रूम इत्यादि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यह रेलगाड़ी नई दिल्ली, जयपुर, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर, आगरा की पर्यटन यात्रा कराती है। ■

महाराजा एक्सप्रेस पर्यटन रेलगाड़ी – यह पर्यटन रेलगाड़ी, आईआरसीटीसी के स्वामित्व वाली एक लक्जरी ट्रेन है। यह रेलगाड़ी राजस्थान के महाराजाओं की शान शौकत की तर्ज पर बनी पर्यटन रेलगाड़ी है। इस रेलगाड़ी की शुरुआत 9 जनवरी, 2010 को हुई थी। यह ऐसी पहली पर्यटन रेलगाड़ी है जो भारत के कई स्थानों पर जाकर अपनी यात्रा पूरी करती है। इस रेलगाड़ी में कुल 23 कोच होते हैं। यह देश की सबसे लंबी पर्यटन रेलगाड़ी है। यह रेलगाड़ी अनेक आरामदायक सुविधाओं से भरपूर है। इसमें 20 डीलक्स कैरेज, 10 जूनियर शूट कैरेज, 4 शूट कैरेज और एक क्लासिकल प्रेसीडेंटियल सूट सहित 43 केबिन हैं। डाइनिंग रेस्टोरेंट बार, एक आबजरवेशन लांच जिसमें एक बार, एक गेम टेबल, आरामदायक क्लब इत्यादि सुविधाएं हैं। मयूर महल और रंग महल विशिष्ट रूप से रेस्तरां हैं। यह रेलगाड़ी 'स्टेट ऑफ दी आर्ट संस्पेंसन प्रणाली' वाली रेलगाड़ी है, जिसके चलने पर यात्रियों को झटके महसूस नहीं होते हैं। यात्री केबिन में वातावरण नियंत्रण प्रणाली, पर्यावरण अनुकूल टॉयलेट प्रणाली, डाइरेक्ट डायलिंग टेलीफोन इत्यादि प्रत्येक कोच में लगे हुए हैं।

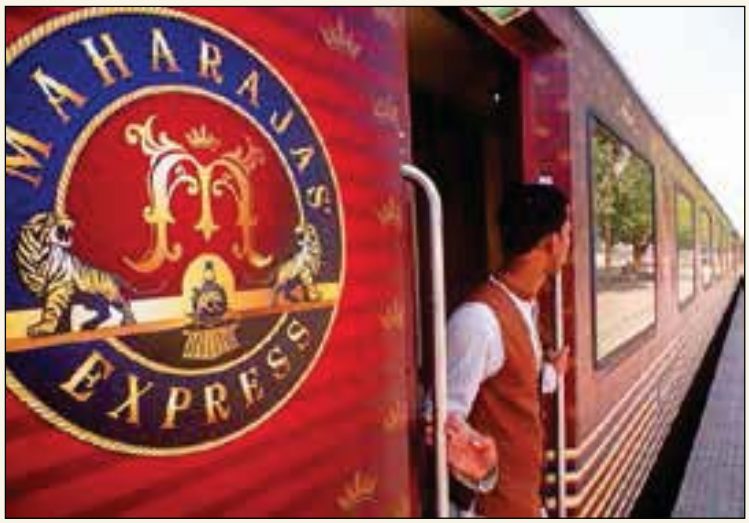

यह चार रूट पर चलती है :

- मुंबई, वडोदरा, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, सवाई माधोपुर, आगरा, दिल्ली।
- दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, सवाई माधोपुर, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, भुसावल, मुंबई।
- दिल्ली, जयपुर, आगरा, सवाई माधोपुर, फतेहपुर सीकरी, ग्वालियर, खजुराहो, वाराणसी, लखनऊ शामिल।
- दिल्ली, आगरा, सवाई माधोपुर, जयपुर। ■

डेक्कन ओडिसी पर्यटन रेलगाड़ी – डेक्कन ओडिसी लक्जरी पर्यटन ट्रेन पर्यटन के लिए 'पैलेस ऑन व्हील्स' की तर्ज पर भारतीय रेल और महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम द्वारा 16 जनवरी, 2004 को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई से चलाई गई थी। डेक्कन ओडिसी या डेक्कन एक्सप्रेस दक्षिण भारत में चलने वाली विशेष रेलगाड़ी है। महाराष्ट्र के ऐतिहासिक तथा पर्यटन स्थलों का दर्शन कराने वाली इस ट्रेन में टीवी, इंटरकाम, ऑडियो डिस्कप्लेयर, मोबाइल फोन, चैनल म्यूजिक, वातानुकूलित सैलून, बार, कॉन्फ्रेंस उपकरण, रेस्टोरेंट, प्राइवेट अटैच टॉयलेट, शाही केबिन, मल्टी-व्यंजन रेस्तरां, बैठने का लांज, विदेशी मुद्रा विनिमय आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में यह कुल 6 अलग-अलग रूट में चलती है। इसमें 1-मुंबई, नासिक, एलोरा गुफा, अजंता गुफा, कोल्हापुर, गोवा, रत्नागिरी, मुंबई, 2-नई दिल्ली, सवाई माधोपुर, आगरा, जयपुर, उदयपुर, वडोदरा, एलोरा गुफाएं, मुंबई, 3-मुंबई, बीजापुर, आईहोल, पट्टाडकल, हम्पी, हैदराबाद, एलोरा गुफाएं, अजंता गुफाएं, मुंबई, 4-मुंबई, एलोरा गुफाएं, औरंगाबाद, पेंच (रामटेक), ताडोबा, अजंता, नासिक, मुंबई, 5-मुंबई, वडोदरा, पालिताना, सासनगिर और सोमनाथ, कच्छ का छोटा रण, मोडेरा और पाटन, नासिक, मुंबई तथा 6-मुंबई, वडोदरा, उदयपुर, जोधपुर, आगरा, सवाई माधोपुर, जयपुर और दिल्ली शामिल हैं। ■

टायगर एक्सप्रेस – लोगों के बीच बाघों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए इस खास ट्रेन अर्थात टाइगर एक्सप्रेस का शुभारंभ 5 जून, 2016 को किया गया था। दिल्ली से शुरू होने वाली ये सेमी-लग्जरी स्पेशल ट्रेन 5 दिन और 6 रातों के सफर में मध्य प्रदेश के विश्व प्रसिद्ध बांधवगढ़ एवं कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का भ्रमण कराती है। इसके अतिरिक्ति, इस यात्रा में पर्यटकों को जबलपुर के निकट भेड़ाघाट में धुवाधांर जलप्रपात का भी भ्रमण कराया जाता है। मध्य प्रदेश के खूबसूरत नजारों को दिखाने वाली यह 'टाइगर ट्रेल सर्किट सेमी लग्जरी टूरिस्ट ट्रेन' है, जिसकी शुरुआत पर्यावरण दिवस के मौके पर की गई थी। ■

स्टीम एक्सप्रेस – इस पर्यटन यात्रा में यात्रा के लिए दिल्ली से रेवाड़ी तक का सफर भाप के इंजन से चलने वाली रेलगाड़ी से होता है। हालांकि परिचालन कारणों के कारण रेवाड़ी से दिल्ली छावनी की वापसी यात्रा डीजल इंजन के कर्षण वाली रेलगाड़ी से संचालित की जाती है। यह रेलगाड़ी समय समय पर चलती रहती है। यह 14 अक्टूबर, 2017 से 28 अप्रैल, 2018 तक चली थी। ■

डेजर्ट सर्किट सेमी लक्जरी टूरिस्ट ट्रेन – भारतीय रेल द्वारा डेजर्ट सर्किट सेमी लक्जरी पर्यटन ट्रेन का शुभारंभ किया गया था। यह 4 रातों और 5 दिनों में जैसलमेर, जोधपुर और जयपुर को कवर करती थी। ■

चारधाम यात्रा

जे.पी. पाण्डेय, प्रिन्सिपल, ओक ग्रोव स्कूल, झारीपानी, मसूरी

यमुनोत्री धाम

गर्मियों की छुट्टियां घूमने का मौका ले कर आती हैं। इस वर्ष हम भी पवित्र चारधाम यात्रा के लिए दिल्ली से ट्रेन से देहरादून पहुँच गये। संकरे घुमावदार सर्पिल और जिन्दा दिखने वाले सजीव रास्तों की खूबसूरती इस यात्रा को निश्चित रूप से यादगार बनाने जा रही थी, इसका अंदाजा मुझे पहले से ही था, जिसे लेकर मैं बहुत ही उत्साहित एवं रोमांचित था। पर्वत, घाटियों एवं सघन वनों से दो-चार होने को मेरा मन मयूर नृत्य कर रहा था, इसी बेकरारी में दो जून को मसूरी से हमने आगे की यात्रा शुरू की।

यमुनोत्री धाम

मसूरी से लगभग 135 किमी दूर स्थित यमुनोत्री धाम पवित्र यमुना नदी का उद्गम स्थल है। मसूरी से आगे बढ़ते हुए हमारा काफिला कैम्पटी फाल की तरफ रवाना हुआ। प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर रास्ते जैसे बाहें फैलाये हमारा स्वागत करते प्रतीत हो रहे थे। कैम्पटी फाल मसूरी का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है, जहाँ वर्षभर दर्शकों का तांता लगा रहता है। घंटे भर जाम में फंसने के बाद हम फिर से खुली सड़क पर आ पाये। आगे बढ़ते हुए हम एक मोड़ तक पहुंचे जहाँ से एक रास्ता यमुना ब्रिज की तरफ और दूसरा नैनबाग की तरफ जाता है।

कैम्पटी फाल के आगे हमने नैनबाग जाने वाला रास्ता लिया। यह रास्ता बहुत ही खूबसूरत है। चीड़ के वृक्षों की पूरी श्रृंखला हमारे एक तरफ चल रही थी। दुर्भाग्य की बात यह थी कि रास्ते में जितने भी पेड़ मिले, सबकी जड़े हमे जली हुई दिखाई दी। दिल अजीब सी कड़वाहट से भर गया। जिस प्राकृतिक खूबसूरती को निहारने, शहरी वातावरण से ऊब कर पर्यटक उत्तराखण्ड की ओर भागे चले आते हैं ऐसे में आज से पचास साल बाद नंगी पहाड़ियों को देखने भला कौन आएगा।

आगे बढ़ने पर यह रास्ता संकरा हो चला था। लेकिन सड़कों की स्थिति काफी ठीक थी। नैन बाग के उपरान्त बूटा गाँव आया, तब तक हम मसूरी से लगभग साठ किमी चल चुके थे। पहाड़ी रास्तो की खूबसूरती जहाँ आँखों में समा रही थी, वहीं पहाड़ी घुमाव दिमाग में चक्कर भी पैदा कर रहा था। डामटा, सरियागढ़ होते हुए हम बरकोट पहुँचे, यह एक बड़ा बाजार है, जहाँ फिर से चाय की तलब के कारण रुकना पड़ा। चीड़, देवदार के पेड़ों से गुजरने वाले रास्तें से होते हुए हम सभी चट्टी, गंगनानी, परीगढ़, रानाचट्टी, फूलचट्टी होते हुए जानकी चट्टी पहुँच गये, जहाँ से यमुनोत्री दर्शन के लिए चार किमी का ट्रेकिंग का रास्ता है, पहाड़ियों पर गाड़ियों की औसत गति लगभग बीस किमी प्रतिघंटा की आती है। ऐसे में सड़क पर लगे हुए माइल स्टोन एवं बीच-बीच में लगे साइन बोर्ड बड़ी राहत देते है। अगले पड़ाव की दूरी तक बात-चीत में रास्ता कट जाता है। फिर बीच-बीच में कोई मन-भावन दृश्य जैसे मन को प्रफुल्लित कर जाता है और उसी मुग्धता में कुछ रास्ता निकल जाता।

जानकी चट्टी पहुँचने पर यमुना के तीव्र प्रवाह की मधुरिम ध्वनियों ने हमारा स्वागत किया। यमुनोत्री ट्रेकिंग का रास्ता यमुनाजी के किनारे-किनारे पहाड़ काटकर मार्ग बनाया गया है। सभी उम्र, वर्ग, प्रान्त एवं क्षेत्र के लोग इस ट्रेकिंग मार्ग पर यमुना मैय्या की जय बोलते हुए आगे बढ़ते हुए मिल जाएंगें। हम लगभग बारह बजे तक आराम से चलते हए यमुनोत्री धाम तक पहुँच गये। यहाँ पहुँचकर हमने यमुनोत्रीजी के अत्यंत शीतल जल में स्नान किया। यमुनोत्री में गर्म पानी का भी कुण्ड है। फिर हमने विधि विधान से यमुना माँ के पिंड के दर्शन एवं पूजा अर्चना की। यहाँ गर्म पानी के स्रोत में चावल पकाने का रिवाज है, जिसे प्रसाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। पुजारीजी ने बताया कि यमुनाजी, सूर्य देव की बेटी हैं। यमुनाजी ने सूर्य देव से प्रार्थना की कि जब मेरे श्रद्धालु इतनी ठण्ड में मेरे दर्शन को आयेंगे, तब वे क्या खायेंगें? इसलिए आप अपनी करोंड़ों किरणों में से एक किरण का तेज इस स्थान को प्रदान कर दीजिये। कहते हैं कि सूर्य के तेज से ही यहाँ गर्म पानी का स्रोत है। अब हम आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान कर गये। अगला पड़ाव था - गंगोत्री।

गंगोत्री धाम

जानकी चट्टी से हम बड़कोट पहुंचे, जहाँ से उत्तरकाशी के लिए रास्ता निकलता है। लगभग चालीस किमी चलने के बाद सूखी नामक स्थान पर पहुंचे। यहाँ से लगभग उत्तरकाशी, मसूरी ऋषिकेश सभी दिशाओं में रास्ता जाता है। उत्तरकाशी यहाँ से सत्तर किमी दूर है। उत्तरकाशी से आगे हर्षिल पहुँचते-पहुँचते रात के एक बज गये थे। गंगा की उफनती लहरें, उछलती जल की बूंदे, दूसरी तरफ ऊँचे-ऊँचे चीड़ से लदी पर्वत श्रंखला, दूर शांत स्निग्ध सूर्य की किरणों से चमकती बर्फ से ढकी मेखला, सेब के पेड़, कुछ पुराने बने घर, उसके पास से बहती जल धारा के साथ हर्षिल बहुत ही खूबसूरत और रमणीक पर्यटक स्थल है। मेरा मन तो ऐसे ही स्थानों में रमता है, जहाँ कुछ दिन प्रकृति के साहचर्य का आनन्द लिया जा सके। हर्षिल उत्तराखण्ड का एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। यह स्थल गंगाजी के किनारे की कैम्पिंग साईट के लिए प्रसिद्ध है। हम यहाँ से तैयार होकर लगभग सुबह आठ बजे गंगोत्री यात्रा के लिए रवाना हो गए, जो हर्षिल से पच्चीस किमी की दूरी पर स्थित है। आगे रास्ते में बढ़ते हुए हम गंगा जी पर बने सबसे ऊँचे पुल से गुजरे, जहाँ गंगा जी दो विशाल चट्टानी प्राचीर के बीच से गुजरती हुई एक लकीर सी दिखाई देती हैं। आगे का रास्ता कच्चा एवं धूल मिटटी भरा था, जिस पर चलते हुये लगभग दस बजे तक गंगोत्री धाम पहुँच गये।

गंगोत्री का नजारा अविस्मरणीय था। गंगोत्री ग्लेशियर से उतरती पावनी माँ गंगा, जिनके दर्शन मात्र से समस्त पाप धुल जाते हैं। मैं उनके उद्गम स्थल पर खड़ा अत्यंत रोमांचित था। लगभग ढाई हजार किमी की यात्रा करती माँ गंगा लाखों किमी के क्षेत्र को उर्वरा शक्ति प्रदान करती है। करोड़ो लोगों की जीवनधारा माँ गंगे को नमन कर मैं घंटो, घाट के किनारे पड़ी एक बेंच पर प्राकृतिक दृश्य के रूप में परमपिता से एकाकार होता रहा। तत्पश्चात हम अगले पड़ाव यानि बद्रीनाथ के लिए निकल पड़े।

गंगोत्री धाम

बद्रीनाथ धाम

बद्रीनाथ धाम

हम उत्तरकाशी के पहले फूलचट्टी पर रुके, जहाँ गंगाजी की धारा को रोककर उत्तरकाशी पावर प्रोजेक्ट बनाया गया है। विशाल पर्वतों के बीच विशाल सरोवर और उसके बाद गंगा जी की निकलती तेज पानी की धारा के फव्वारे रोड तक पहुँच रहे थे। जिससे आती-जाती गाड़ियों से लगभग सभी टूरिस्ट यहाँ रूकने को बाध्य हो जाते हैं। इसके एक दिन पहले हमने उत्तरकाशी से हर्षिल तक का रास्ता रात को तय किया था। दिन में इस रास्ते पर चलना बहुत ही खूबसूरत एहसास था।

उत्तरकाशी से हमने श्रीनगर के लिए रास्ता लिया, जो गंगाजी पार कर दूसरी तरफ से जाता है। लगभग अस्सी किमी चलकर हम शेरगढ़ नामक स्थान पर चाय के लिए रुके। गडोंलिया होते हुए हम टिहरी झील के ऊपर से निकले। एक तरफ नीचे की तरफ पूरी झील प्रकाश - पुंज से जगमगा रही थी, दूसरी तरफ पहाड़ पर न्यू टिहरी शहर जगमगाता आधुनिक भारत की नई इबारतें गुनगुना रहा था। लगभग छः साल पहले 2010 में टिहरी बाँध बना था, जिसके कारण पुराना टिहरी शहर पूरा जलमग्न हो गया था। तब इस बांध के विरोध में बहुत कुछ कहा गया था, किन्तु वैज्ञानिकों ने चमत्कार कर दिया, सरकार की अच्छी प्लानिंग से पूरा का पूरा शहर फिर से बसा दिया गया। भारत का सर्वाधिक ऊँचा टिहरी बांध 2305 मी ऊँची चट्टान पर बना है, यह 575 मीटर लम्बा एवं आधार में 1128 मीटर चौड़ा है, जिससे से एक हजार मेगावाट बिजली पैदा की जाती है। बाँध का जलाशय लगभग 52 किमी में फैला है, जिसमें 4 क्यूबिक किमी पानी आता है। हम रात के ग्यारह बजे तक श्रीनगर पहुँच गये। हम सब काफी थके हुए थे। जल्द ही डिनर करके नींद के हवाले हो गये।

अगला दिन पांच जून सुबह उठते ही हमें ऐसा लगा जैसे देहरादून में आ गये हैं। पूरा मैदानी मौसम, गर्मी, उमस, आम के पेड़ और भीड़-भाड़ वाली सड़कें। सुबह जल्दी से तैयार होकर हम सब एक सौ नब्बे किमी दूर बद्रीनाथ धाम के लिए रवाना हो गए। कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, जोशीमठ होते हुए हम गोविन्दघाट पहुँचे, यहाँ से हेमकुंड के लिए रास्ता जाता है। हम पांडुकेश्वर पवारहॉउस होते हुए लगभग शाम को पांच बजे बद्रीनाथ धाम पहुँच गये। यहाँ परितः हिमाच्छादित पर्वतों के बीच मन्दाकिनी नदी के तट पर, तीन हजार तीन सौ मीटर की ऊँचाई पर बसा सुरम्य धाम देखते ही रास्तें की सारी थकान काफूर हो गयी। रेस्ट हॉउस से सामने की पर्वत चोटी से गिरते झरने का मनोरम नजारा दिख रहा था दूसरी तरफ खिड़की से बर्फ से ढका पहाड़ जैसे हमें बाहर बुला रहा था। छः जून को सुबह सात बजे उठते ही मैं भागकर खिड़की के पास गया जिससे झरने का दृश्य नजदीक से देख सकूं। प्रातः हमने गर्म कुंड में स्नान किया। पुनः भगवान बद्रीविशाल के दर्शन किये और केदारनाथ के लिए रवाना हो गये।

केदारनाथ धाम

गोचर, पीपलकोटि, जोशीमठ होते हुए हम रुद्रप्रयाग पहुँचे, यहाँ से केदारनाथ का रास्ता अलग होता है। पहाड़ी गांवों और ऊँचे रास्तों से होते हुए हम एक घने वन प्रदेश में पहुँच गये। हम पहली बार इतने घने जंगलों में थे। उत्तराखंड अपनी संपूर्ण वन संपदा की खूबसूरती के साथ हमारे सामने था। रात के नौ बजे तक हम अगस्तमुनि पहुँचे। रात्रि-विश्राम के बाद अगले दिन हम गुप्तकाशी होते हुए चालीस किमी दूर स्थित फाटा हेलीपेड पहुँचे। यहाँ से ही केदारनाथ धाम के लिए विभिन्न कम्पनियों द्वारा हेलिकाप्टर सेवा संचालित की जाती है। हम सुबह के छः बजे पहुँच गये थे किन्तु हमारा नम्बर नौ बजे आया। बताया जाता है कि यहाँ कई भक्त तो दो-दो दिन हेलीकाप्टर के लिए प्रतीक्षा करते हैं। केदार बाबा की कृपा से हमारा नम्बर जल्दी आ गया।

फाटा से आगे केदारनाथ तक पैदल के लिए रास्ता बना है, उसके बाद चौदह किमी की कठिन चढ़ाई है। इसलिए वृद्ध एवं महिलायें अक्सर हेलीकाप्टर का प्रयोग करते हैं। हम दस बजे तक केदारनाथ धाम पहुँच गये। चारों ओर हिमाच्छित पर्वत चोटियों के बीच में स्थित बाबा केदारनाथ मंदिर लगभग एक हजार साल पुराना है। मंदिर मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है। हम सबने मन्दाकिनी के शीतल जल में स्नान किया और बाबा केदारनाथ के दर्शन कर विधिवत पूजा अर्चना की। अचानक जोर की बरसात शुरू हो गयी, ऐसी बरसात जिसमें हेलीकाप्टर की उड़ान सम्भव नहीं। बादलों के झुण्ड अठखेलियाँ करते हुए उमड़ते-घुमड़ते हुये जैसे कहना चाह रहे हों कि भक्तों भगवान के धाम में भी इतनी चिन्ता कर रहे हो। प्रभु के धाम में तो इतनी चिन्ता ठीक नहीं, आखिरकार वह जो भी करेंगे, वह अच्छा ही करेंगे। प्रभु पर भरोसा करके भक्त इतनी दूर कठिन यात्रा पर आते हैं फिर इतनी चिंता, आकुलता और विह्वलता क्यों? इस समय में भी मैं निश्चिन्त था कि यदि हम नहीं जा पाए तो यहीं केदारधाम में प्राकृतिक सुषमा के बीच, रात्रि विश्राम करेंगे। सच कहूँ तो मैं तो भगवान से मना रहा था कि मुझे यहाँ रुकने का अवसर मिले लेकिन मेरे समूह के अन्य सभी सदस्य जल्दी से जल्दी नीचे उतर जाना चाहते थे। जोर की कड़ाके की ठण्ड, तेज बरसात और हड्डियों तक चुभने वाली तेज हवा, इधर-उधर उड़ते बादल बाबा केदारनाथ की यात्रा को यादगार बना रहे थे। हम सभी मौसम ठीक होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और बाबा केदारनाथ से प्रार्थना कर रहे थे कि हम सब सही सलामत वापस फाटा पहुँच जायें।

यहाँ यह उल्लेख करना अनिवार्य है कि सोलह जून दो हजार तेरह में केदारनाथ में भारी तबाही आई थी। जब बादल फटने से केदारनाथ मंदिर के ऊपर एक ग्लेशियर टूट कर गाँधी सरोवर में गिर गया था। जिससे गाँधी सरोवर का बहुत सारा पानी भारी तबाही मचाता नीचे आया था। उस समय केदारनाथ यात्रा अपने चरम पर थी। अनुमान है कि लगभग पचास हजार लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए थे। उस समय पैदल यात्रा करने वाले एवं धाम में उपस्थित सभी लोग काल के गाल में समा गये थे। प्रकृति का ऐसा संहार इससे पहले नहीं हुआ था। इस त्रासदी के चिन्ह अभी भी देखे जा सकते हैं। सबसे खास बात यह थी कि प्रलय के इस बाढ़ में भी बाबा केदारनाथ का मंदिर जस का तस खड़ा रहा जबकि धाम में उपस्थित सभी इमारतें धराशायी हो गयी थीं। हमने वह रक्षक-शिला देखी जो मंदिर के ठीक पीछे आ कर ठहर गई थी। जिससे मंदिर बिलकुल सुरक्षित बच गया था। अब तक ठण्डक अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। अब तक साढ़े पांच बज गये थे, फिर एक चमत्कार हुआ। हवा का एक झोंका आया और बादलों का झुण्ड छंटने लगा। हेलीकाप्टरों की गड़गड़ाहट से एक बार फिर आसमान गूंज उठा और सैकड़ों भक्तों की नजरें आशा और विश्वास से उपर उठ गई। आखिरकार अन्तिम उड़ान में हमारा क्रम आ गया और जैसे ही हेलीकाप्टर ने उडान भरी, मैंने बाबा केदारनाथ को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। खूबसूरत पर्वतों एवं बादलों के उपर तैरते हम अगले दस मिनट में फाटा हेलीपैड पर लैण्ड कर गये।

अब हम सब वापसी यात्रा पर निकल लिए। फिर श्रीनगर तक की सौ अस्सी किमी की दूरी रुद्रप्रयाग होते हुए तय करने में ही रात के ग्यारह बज गये। सवेरे नाश्ता करने के बाद लगभग नौ बजे से हमारी यात्रा का अन्तिम क्रम शुरू हुआ। हमने टिहरी चम्बा होते हुए लौटने का निश्चय किया। चम्बा एक प्राचीन शहर है। यहाँ से आगे बढ़े तो धनौल्टी के आगे का रास्ता जाना पहचाना सा लगा और दोपहर के तीन बजे हम देहरादून स्टेशन पहुँच गये। गाड़ियों की पहियों की ब्रेक की चीख के साथ सभी के मुंख से "जय भगवान" का स्वर अनायास ही निकल गया। लगभग पंद्रह सौ किमी की यात्रा, सात दिन, प्रतिदिन दस घंटे गाड़ी का सफर, अद्वतीय प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर क्षेत्रों से गुजरते खतरनाक पहाड़ी रास्तों में जीवन के सत्य का बहुत नजदीक से साक्षात्कार और परम पूज्यनीय चारों धामों का अविस्मर्णीय दर्शन सब प्रभु की कृपा से सकुशल संपन्न हो गया। हम अब दिल्ली जाने वाली शताब्दी में सवार हुए जैसे ही ट्रेन ने एक लम्बी सीटी देकर प्लेटफॉर्म छोड़ा, हम सबने परम पिता को उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया। ■

केदारनाथ धाम

ट्रेन 18 की विशेषताओं और अंडरस्लंग उपस्कर

मेनलाइन बिजली बहुयूनिट (एमईएमयू) का निर्माण इंटरसिटी के रूप में किए जाने के उद्देश्य से किया जा रहा है। भारतीय रेल में फिलहाल परंपरागत डीसी कर्षण सिस्टम से एमईएमयू चलाई जा रही है और इसके कर्षण उपस्कर ड्राइविंग मोटर कोच में लगे हुए हैं। सवारी डिब्बा कारखाना ने 3 फेस ऑनबोर्ड उपस्कर वाले एमईएमयू कोचों का उत्पादन वर्ष 2018 से शुरू किया है और ये कोच अत्याधुनिक, अनुरक्षणमुक्त और ऊर्जा किफायती होते हैं। एमईएमयू में ऑनबोर्ड उपस्कर अधिक स्थान ले लेते हैं, जिनका उपयोग यात्रियों के बैठने के लिए किया जा सकता था। अत: सवारी डिब्बा कारखाना द्वारा 26 करोड़ रुपए की लागत पर अंडरस्लंग एमईएमयू का प्रोटोटाइप तैयार किया गया और यह लागत ऑनबार्ड इलेक्ट्रिक सिस्टम वाले वर्तमान

युक्त एमईएमयू – ट्रेन 18 की छोटी बहन

एमईएमयू की लागत 25 करोड़ रुपए के करीब ही है।

हाल में सवारी डिब्बा कारखाना ने भारत की पहली आधुनिक सेमी हाई स्पीड ट्रेन – ट्रेन 18 का निर्माण सफलतापूर्वक किया है। अब ट्रेन 18 का गति परीक्षण किया जा रहा है। ट्रेन 18 में अंडरस्लंग प्रोपल्शन समेत कई नई विशेषताएँ दी गई हैं। इस अंडरस्लंग प्रोपल्शन के कारण यात्रियों के लिए अधिक स्थान उपलब्ध कराया जा सका जिससे कोच में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या में वृद्धि होगी। सवारी डिब्बा कारखाना ने मास ट्रान्सिट सिस्टम जैसे बिजली बहु यूनिट (इर्एमयू), मेनलाइन बिजली बहु यूनिट (एमईएमयू) आदि में भी अंडरस्लैंग प्रौद्योगिकी अपनाने की योजना बनाई है। पहले कदम के रूप में, सवारी डिब्बा कारखाना ने अंडरस्लंग इलेक्ट्रिक्स युक्त पहली मेन लाइन बिजली बहु यूनिट (एमईएमयू) का विनिर्माण किया है। इस गाड़ी में भी ट्रेन 18 की तरह यात्री एक छोर से दूसरे छोर तक आ-जा सकते हैं। इन विशेषताओं के कारण 110 से 130 किमी प्रति घंटा तक की रफ्तार से चलने वाली इस ट्रेन को ट्रेन 18 की छोटी बहन भी कहा जा सकता है।

अंडरस्लंग एमईएमयू वाले कोच, ट्रेन 18 के कोचों की तरह लंबे होते हैं। (ऑन बोर्ड एमईएमयू कोच की लंबाई 21.3 मीटर की तुलना में अंडरस्लंग एमईएमयू कोच की लंबाई 23.1 मीटर होती है।) निष्पादन में सुधार लाने के उद्देश्य से इस एमईएमयू में ट्रेन 18 की आधुनिक बोगियों का प्रयोग किया गया है। पूर्णत: सस्पेंडड 3-फेस मोटरों से मोटर कोच बोगियों के लिए आवश्यक बिजली की आपूर्ति होती है। ब्रेक सिस्टम में व्हील माउंटेड डिस्क ब्रेक और रीजेनरेशन ब्रेक हैं जो प्रभावकारी एवं तत्काल ब्रेकिंग में सहायक होते हैं।

फिलहाल चल रही एमईएमयू में 2402 यात्री यात्रा कर सकते हैं, जबकि नई एमईएमयू में 2613 यात्री यात्रा कर सकते हैं। इस प्रकार एक कोच में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या में 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सारे ऑन-बोर्ड इलेक्ट्रिक उपकरणों को ट्रेन-18 की तरह अंडरस्लंग में लगाए जाने के कारण यह उपलब्धि संभव हुई है। इस अंडरस्लंग एमईएमयू रैक में 2 ड्राइविंग मोटर कोच (डीएमसी) तथा 6 पैसेंजर कोच (टीसी – ट्राइलर कोच) होंगे। डीएमसी में 280 यात्री (84 बैठकर+196 खड़े होकर) यात्रा कर सकते हैं तथा टीसी में 343 यात्री (96 बैठकर+247 खड़े होकर) यात्रा कर सकते हैं। इस प्रकार इसमें कुल 2618 (744 बैठकर+ 1874 खड़े हो कर) यात्री यात्रा कर सकते हैं। ■

प्रमुख विशेषताएँ

- 25 किलोवॉट एसी ओवर हेड ट्रैक्शन से चालू
- 3 फेस इंडीजीनियस इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम (सभी अंडरस्लंग)
- रीजनरेटिव ब्रेकिंग जिससे 35% तक की ऊर्जा की बचत
- स्टेनलेस स्टील कोच बॉडी
- एयरोडाइनामिक आकार वाला स्टेनलेस स्टील ड्राइविंग एंड नोस
- वातानुकूलित ड्राइवर कक्ष तथा एर्गोनामिक एफआरपी ड्राइवर डेस्क
- स्क्रू-रहित आंतरिक पैनेल
- उन्नत श्रेणी की कुशन सीट
- पेसेंजर कोचों में दो शौचालय एवं ड्राइवर मोटर कोच में एक टाइलेट की सुविधा
- स्लीक एलुमिनियम लगेज रैक
- फिसलन मुक्त स्टेनलेस स्टील फ्लोरिंग
- एक छोर से दूसरे छोर तक आने-जाने के लिए कोचों के बीच सील्ड गैंगवे
- सीसीटीवी निगरानी प्रणाली
- जीपीएस आधारित सूचना/उद्घोषणा प्रणाली
- डबल लीफ स्लाइडिंग डोर
- ट्रेन 18 की आधुनिक बोगी
- यात्रियों को बेहतर यात्रा प्रदान करने के साथ-साथ 130 किमी प्रति घंटा तक दौड़ने में सक्षम
- ट्रेन-18 की तरह इस गाड़ी में भी आपातकालीन स्थिति में ड्राइवर से संपर्क करने हेतु टॉकबैक सिस्टम।

अंतरराष्ट्रीय

पतंगोत्सव

अहमदाबाद में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पतंगोत्सव के दृश्य

फोटो:- मनीष मिस्त्री

मध्य रेल के रोहा, पेन और आप्टा स्टेशन अब ग्रीन स्टेशन बने

भारतीय रेल में ऊर्जा संरक्षण 'मिशनक्षेत्र' है। इस मिशन के एक भाग के रूप में, मध्य रेल ने अपने स्टेशनों और सेवा भवनों आदि में पहले से ही ऊर्जा कुशल एलईडी लाइट्स लगा दी हैं। मध्य रेल के आसनगांव स्टेशन को भारतीय रेल पर दूसरा ग्रीन स्टेशन होने का गौरव प्राप्त है, जहां सभी ऊर्जा जरूरतों को सौर और पवन चक्की द्वारा उत्पादित बिजली से पूरा किया जाता है। इसके बाद जुम्मापट्टी, वाटरपाइप, अमन लॉज और माथेरान को हरित ऊर्जा से संचालित स्टेशन में बदल दिया गया।

रोहा स्टेशन में प्रतिदिन लगभग 65-80 केडब्ल्यूएच बिजली पैदा करने वाले 15 केडब्ल्यूएच सौर ऊर्जा पैनल हैं।

पहले रोहा स्टेशन का विद्युत भार 21 किलोवाट था, जबकि वर्तमान भार केवल 80% ऊर्जा की बचत के साथ 11.81 किलोवाट है। मूल्य के संदर्भ में वार्षिक बचत 3.54 लाख रुपए होगी।

पेन स्टेशन में 5 केडब्ल्यूपी सौर ऊर्जा पैनल और 7.2 केडब्ल्यूपी सौर+पवन चक्की है जो रोजाना लगभग 60-70 केडब्ल्यूएच बिजली पैदा करती है। पेन स्टेशन पर 14 किलोवाट का भार घटकर 7.65 किलोवाट हो गया है जिससे 80% ऊर्जा की बचत हो रही है। पैसे के संदर्भ में वार्षिक बचत 2.19 लाख रुपए होगी।

आप्टा स्टेशन में रोजाना 25-30 केडब्ल्यूएच बिजली पैदा करने वाले 5 केडब्ल्यूएच सौर ऊर्जा पैनल हैं। 8.52 किलोवाट का भार घट कर 4.38 किलोवाट हो गया है जिससे 80% ऊर्जा की बचत हो रही है। लाभ के संदर्भ में बात करें तो वार्षिक बचत 32 लाख रुपए होगी। ■

विद्युत लोको में एनर्जी सेविंग हेतु लोको पायलट सम्मानित

नसीम उद्दीन, प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर ने उत्तर मध्य रेलवे के 10 लोको पायलटों को विद्युत ऊर्जा पुनरूत्पादन में उल्लेखनीय योगदान के लिए नगद पुरस्कार एवं एलईडी बल्ब देकर पुरस्कृत किया। उन्होंने सभी लोको पायलटों को इस दिशा में लगातार कार्य करके रेलवे राजस्व की बचत के साथ-साथ वातावरण को भी सुरक्षित रखने हेतु प्रोत्साहित भी किया।

3 फेज विद्युत लोको में ब्रेकिंग के दौरान तकनीकी रूप से ट्रेन की यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलकर ऊर्जा का पुनरूत्पादन करने की क्षमता होती है। मुख्यालय स्तर पर लोको पायलटों को लगातार प्रोत्साहन एवं मंडलों के अथक प्रयास स्वरूप ऊर्जा के पुनरूत्पादन का प्रतिशत 15 हो गया है तथा वर्ष 2018-19 (अप्रैल से दिसम्बर) में 7.9 करोड़ यूनिट ऊर्जा की रिकार्ड बचत की गई है, जो भारतीय रेल में अधिकतम है। इस अवसर पर अनुपम सिंहल, मुख्य बिजली लोको इंजीनियर भी उपस्थित रहे। ■

आप को यह अंक कैसा लगा : हमें जरूर बतायें

फोन, व्हाट्सऐप, एस.एम.एस. : 9717641075 या 9909909966

ईमेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें : संपादक, भारतीय रेल, 337-बी, रेल भवन, रेल मंत्रालय, नई दिल्ली-110001

क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति की 120वीं बैठक सम्पन्न

महाप्रबंधक, मध्य रेल, डी.के. शर्मा ने क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति की 120वीं बैठक को छत्रपति शिवाजी टर्मिनस मुंबई में संबोधित किया। इस अवसर पर एस.के. तिवारी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), शैलेन्द्र कुमार, प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक, डी.के. सिंह, प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक, सुशील पी. वावरे, प्रधान मुख्य विद्युत इंजीनियर, मनोज जोशी, प्रधान मुख्य यांत्रिकी इंजीनियर, साकेत मिश्रा, सचिव, मध्य रेल, दिनेश वशिष्ठ, उप महाप्रबंधक एवं मध्य रेल के अन्य विभाग प्रमुख अधिकारी भी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्यों ने रेलवे संबंधित मामलों पर विचार विमर्श किया। ■

महाप्रबंधक, मध्य रेल द्वारा मुंबई मंडल का निरीक्षण

22 जनवरी को महाप्रबंधक, मध्य रेल, डी.के. शर्मा ने मुख्य सुरक्षा आयुक्त (सेंट्रल सर्कल), ए.के. जैन और मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई मंडल, एस.के. जैन एवं प्रमुख विभागाध्यक्षों के साथ मुंबई मंडल का वार्षिक निरीक्षण किया। श्री शर्मा ने रोहा, पेन, आपटा एवं पनवेल स्टेशनों के स्टेशन प्रबंधक कार्यालय, रेल परिसर, पुरुष एवं महिला प्रतीक्षालय, चिकित्सा एवं सुरक्षा स्टाल, सीएमएस सिस्टम, रेलवे कॉलोनी, गैंग हट आदि का निरीक्षण किया। श्री शर्मा ने इन स्टेशनों पर एलईडी लाइट एवं एनर्जी एफीसिएंट फैन के साथ ग्रीन पॉवर स्टेशन, सोलर पॉवर सिस्टम, सोलर पंप वाटर कूलर का भी निरीक्षण किया। उन्होंने रोहा के निर्माण कार्य की प्रगति, रेल दोहरीकरण के कार्य की समीक्षा की। रोहा-नागोठने के बीच भिषे टनल का निरीक्षण किया, पेन एवं जीते के बीच गर्डर ब्रिज तथा विभिन्न पॉइंट्स एवं लेवल क्रासिंग गेट का

निरीक्षण किया। नागोठने एवं पेन के बीच 120 किमी प्रतिघंटा स्पीड रन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। श्री शर्मा ने पनवेल में आरपीएफ सीसीटीवी कंट्रोल रूम, सोलर ट्री के साथ सेल्फी पॉइंट, हिंदी पुस्तकालय एवं प्रदर्शनी का भी निरीक्षण किया। ■

माटुंगा रेलवे वर्कशॉप में एलएचबी कोच के रख-रखाव की सुविधा

मध्य रेल के माटुंगा रेलवे वर्कशॉप ने एलएचबी कोचों का पीरियाडिकल रख-रखाव शुरू किया है।

पहले सुविधा की कमी के कारण एलएचबी कोचों को अजमेर रेलवे वर्कशॉप भेजा जा रहा था। इसके लिए लंबे पारगमन समय की आवश्यकता होती थी। इससे मध्य रेल आवधिक मरम्मत क्षमता में आत्मनिर्भर होगा तथा पारगमन समय भी नगण्य होगा और यह विशेष ट्रेनों को चलाने के लिए कोचों की उपलब्धता में सुधार करेगा या मौजूदा ट्रेनों में अतिरिक्त कोच लगायेगा।

मनोज जोशी, प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, मध्य रेल तथा मुख्यालय के सीनियर अधिकारियों की उपस्थिति में दत्तात्रेय वायंगनकर और एंथनी जेवियर जो कि जनवरी-2019

में सेवानिवृत हो रहे हैं, के द्वारा माटुंगा केरिज वर्कशाप द्वारा शॉप शेडुल-2 के अंतर्गत आवधिक मरम्मत कर प्रथम एलएचबी शयनयान कोच संख्या 15299 का अनावरण 5 जनवरी 2019 को किया गया। ■

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मुख्यालय स्थित सभागार में 14 दिसंबर को विद्युत विभाग के तत्वावधान में लाइटिंग, सौर ऊर्जा, ऊर्जा परिदृश्य एवं उनके प्रभाव के विषय पर एक तकनीकी सेमिनार एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सेमिनार में सुनील सिंह सोइन, महाप्रबंधक, अनिल कुमार, अपर महाप्रबंधक, ब्रजेश गुप्ता एवं मुख्य विद्युत इंजीनियर व कर्मचारीगण उपस्थित थे।

सेमिनार में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा आज के परिप्रेक्ष्य में इको फ्रेंडली तथा ऊर्जा की बचत करने वाले उपकरणों व इनके प्रभाव के बारे में तथा रेलवे के विद्युत और डीजल इंजनों में लगने वाली हेड लाइट, स्टेशनों एवं कार्यालयों में लगने वाले एलईडी लाइटों तथा अन्य उपकरणों के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया गया।

महाप्रबंधक श्री सोइन ने इस अवसर कहा कि हमें ऊर्जा की बचत को अपने स्वभाव में उतारने की जरूरत है एवं ऊर्जा संरक्षण के नए-नए प्रयोगों पर सतत् ध्यान केंद्रित करना है जिससे कि ऊर्जा की बचत कर देश के विकास में हम ज्यादा से ज्यादा सहभागी बनें। ■

नागपुर मंडल में चल रहे रेलवे विद्युतीकरण कार्यों की समीक्षा बैठक

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के क्षेत्राधिकार में विद्युतीकरण से संबंधित अनेक परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। सभी निर्माण परियोजनों के कार्यों की समीक्षा महाप्रबंधक, सुनील सिंह सोइन द्वारा 18 दिसम्बर, 2018 को नागपुर मंडल कार्यालय के सभाकक्ष में की गई। इस दौरान बिलासपुर मुख्यालय के विद्युत विभाग के विभागाध्यक्ष, मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय सहित निर्माण व रेलवे विद्युतीकरण एवं मंडल के समस्त शाखा प्रमुख उपस्थित थे। वर्तमान में नागपुर मंडल में आमान परिवर्तन कार्य के साथ विद्युतीकरण का कार्य भी जारी है।

इसमें जबलपुर से शिकारा- 66 किमी तथा छिंदवाड़ा से भंडारकुंड - 34 किमी विद्युतीकरण का कार्य पूरा हो चुका है तथा विद्युत गाड़ियों का परिचालन भी प्रारंभ हो चुका है। बचे हुए खंड इतवारी- भंडारकुंड -110 किमी शिकारा-नैनपुर-मंडला - 98 किमी तथा समनापुर-नैनपुर 57 किमी पर विद्युतीकरण का कार्य प्रगति पर है। ■

ट्रैक अनुरक्षकों को विंटर सेटी जैकेट्स एवं सेफ्टी शूज का वितरण

4 जनवरी को मंडल रेल प्रबंधक कौशल किशोर द्वारा ट्रैक अनुरक्षकों को विंटर सेफ्टी जैकेट्स एवं सेफ्टी शूज का वितरण किया गया। रायपुर मंडल के गश्ती कर्मियों के लिए 100 जीपीएस डिवाइस (ब्रांड-जनरल- वाई-वेंचर्स) के उपलब्ध करायी गयी हैं, जो पैट्रोलमैन और संबधित इंजीनियर के बीच संचार सुविधा में सुधार करेंगी। आपातकालीन स्थिति में पैट्रोलमैन अधिकारियों को एसएमएस भेज सकते हैं और अधिकारियों को बुलाकर दिशानिर्देश भी ले सकते हैं। यह प्रणाली पैट्रोलमैन के कामकाज

और उनकी सतर्कता की निगरानी में भी सहायक है। ये आइटम रायपुर मंडल के ट्रैक मेंटेनर की कार्य स्थिति में सुधार करेंगे और ट्रैक मेंटेनर्स और ट्रेन सेवाओं की सुरक्षा बढ़ाने में भी मदद करेंगे। कौशल किशोर सहित अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) शिव शंकर लकड़ा, अपर मंडल रेल प्रबंधक (ओपी) अमिताव चौधरी वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) आशीष मिश्रा, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी डॉ. आर सुदर्शन एवं संबंधित कर्मचारी उपस्थित थे। ■

उत्तर मध्य रेलवे के चिकित्सकों द्वारा कुम्भ मेले में आए श्रद्धालुओं को प्रदान की गई चिकित्सीय सहायता

पहली बार, इलाहाबाद जंक्शन स्टेशन पर एक छह बेड वाली आपातकालीन स्वास्थ्य इकाई स्थापित की गई है। साथ ही प्रयागराज के सभी स्टेशनों के सभी प्लेटफार्मों और यात्री आश्रयों में मेडिकल बूथों को स्थापित किया गया है जिससे चिकित्सकीय आवश्यकता वाले यात्रियों को त्वरित और पर्याप्त चिकित्सा उपलब्ध कराई जा सके।

22 जनवरी तक उत्तर मध्य रेलवे के डॉक्टरों ने इलाहाबाद जंक्शन, नैनी और छिवकी स्टेशनों पर 15500 से अधिक रोगियों का सफल इलाज किया। इन 15500 रोगियों में से, 328 रोगियों को जिन्हें 'गंभीर' बीमारी डायगनोस हुई उनको स्टेशन पर स्थापित 'अस्पताल वार्ड' में आपातकालीन उपचार देकर उनकी सहायता की गई। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे राजीव चौधरी ने कहा कि तीर्थयात्रियों की "उम्र और श्रद्धालुओं की भारी संख्या के दृष्टिगत ये तो संभावित था ही कि रेलवे को इलाहाबाद जं. एवं अन्य स्टेशनों पर चिकित्सकीय सहायता आवश्यकता रखने वाले श्रद्धालुओं और यात्रियों को चिकित्सा उपलब्ध करानी होगी और इसके लिये हमारे स्टेशनों पर, विशेष रूप से इलाहाबाद जंक्शन स्टेशन पर आने वाले तीर्थयात्रियों और यात्रियों को समय पर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए उचित और पर्याप्त तैयारी की गई है"। ■

कुम्भ मेले में स्टेशनों पर बहुभाषीय उद्घोषणा

उत्तर मध्य रेलवे प्रशासन ने एक ऐसी प्रणाली तैयार करते हुए अनोखा काम किया है जिसके माध्यम से हिंदी में की जाने वाली उद्घोषणाओं का स्वचालित रूप से 6 विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है जो देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कुंभ मेला में प्रयागराज आने वाले तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए लाभकारी हैं। यह गैर-हिंदी भाषी यात्रियों को रेलवे स्टेशनों, यात्री आश्रय स्थलों आदि में की जा रही उद्घोषणाओं को समझाने के लिए किया गया है। इस प्रणाली के तहत एक उद्घोषणा ऑटो-रिकॉर्ड होती है, और विभिन्न भाषाओं-अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल, मलयालम में विशेष रूप से विकसित सॉफ्टवेयर द्वारा अनुवादित की जाती है। इस संबंध में मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी उत्तर मध्य रेलवे ने बताया कि हमारे वाणिज्य विभाग ने एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित इस प्रणाली को प्रयोग करने की योजना बनाई, जिसने इलाहाबाद जंक्शन स्टेशन पर सफलतापूर्वक काम करना शुरू कर दिया है। उन्होंने बताया कि उपरोक्त भाषाओं के अलावा, तेलुगु, उड़िया और बांग्ला में भी हिंदी उद्घोषणाओं के स्वचालित अनुवाद पर काम चल रहा है। प्रथम चरण में, इस प्रणाली को इलाहाबाद जंक्शन स्टेशन पर प्लेटफार्मों पर और यात्री आश्रयों में 14 जनवरी से प्रारंभ किया गया। द्वितीय चरण में, इसे 21 जनवरी को दूसरे मुख्य स्नान दिवस से पहले नैनी और इलाहाबाद छिवकी स्टेशनों के साथ-साथ संगम क्षेत्र (रेलवे कैंप) में भी प्रारंभ किया गया। भविष्य में, उत्तर मध्य रेलवे के अधिकारी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित एक फेस टू फेस इन्क्वायरी सिस्टम विकसित करने की योजना बना रहे हैं, जिसका उपयोग गैर- हिंदी भाषी यात्रियों द्वारा स्टेशनों के पूछताछ काउंटर पर काम करने वाले कर्मियों से उनके सवालों के जवाब पाने के लिए किया जा सकेगा। ■

रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 62वीं बैठक का आयोजन

पूर्व मध्य रेल, मुख्यालय में क्षेत्रीय रेल राजभाषा की 62वीं बैठक एल.सी. त्रिवेदी, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक को संबोधित करते हुए श्री त्रिवेदी ने कहा कि राजभाषा विभाग प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इस अवसर पर उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित वाणिज्य विभाग के कर्मचारियों की कार्यसूची का विमोचन किया। इसके अलावा परिचालन विभाग को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए अंतर्विभागीय राजभाषा चलशील्ड प्रदान की एवं साथ ही रेलवे बोर्ड एवं क्षेत्रीय स्तर पर पुरस्कृत अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। ■

पूर्व तट रेलवे महाप्रबंधक ने की निर्माण कार्यों की समीक्षा

पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक पूर्णेंदु शेखर मिश्रा ने पूर्व तट रेलवे में जारी विभिन्न निर्माण कार्यों की समीक्षा की। श्री मिश्रा ने 22 व 23 जनवरी को रेलवे के विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक कर खोरधा रोड–बलांगीर, अनगुल– सुकिंदा, तालचेर–बिमलागढ़, हरिदासपुर–पारादी नई लाइन सहित संबलपुर–टिटिलागढ़ एवं अनगुल–संबलपुर दोहरीकरण परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान महाप्रबंधक श्री मिश्रा ने किसी भी परियोजना की सफलता के लिए विस्तृत एवं सटीक योजना, प्रभावी निविदा प्रक्रिया एवं कार्य निष्पादन के पर्यवेक्षण को महत्त्वपूर्ण बताया। बैठक के दौरान जमीनी स्तर पर काम करने वाले कर्मियों एवं राज्य सरकार के बीच उचित तालमेल पर भी जोर दिया गया। ■

पूर्व तट रेलवे में लगायी गयी सर्वाधिक सैनिटरी नैपकिन वेन्डिंग मशीन

हीराखण्ड एक्सप्रेस में सैनिटरी नैपकिन मशीन लगाये जाने के उपरांत महिला यात्रियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया के उपरांत तथा यात्रियों की मांग को ध्यान में रखते हुए पूर्व तट रेलवे ने इस मशीन की सुविधा पूर्व तट रेलवे से शुरू होने वाली अन्य कई ट्रेनों में भी शुरू की।

स्वच्छता व सफाई को बढ़ावा देने तथा लोगों में रेलवे की साख बेहतर करने के साथ ही स्वच्छ रेल–स्वच्छ भारत अभियान की दिशा में पूर्व तट रेलवे की ओर से यह पहल की गयी है। इस पहल के तहत पूर्व तट रेलवे की कुछ 36 ट्रेनों में इस तरह की 91 मशीनें लगायी गयी हैं। ज्ञातव्य है कि ट्रेनों में सैनिटरी वेन्डिंग लगाने का वृहद अभियान चलाने वाला पूर्व तट रेलवे भारतीय रेल का पहला जोन है।

इसके अलावा पूर्व तट रेलवे की ओर से भुवनेश्वर, विशाखापट्नम व पुरी जैसे बड़े स्टेशनों में भी इस मशीन की सुविधा दी गयी है। एक बार में 75 पैड की क्षमता वाली इस मशीन में यात्री पांच रुपए का सिक्का डाल कर एक पैड प्राप्त कर सकते हैं। ■

पश्चिम रेलवे के अधिकारियों की टाटा मुंबई मैराथन 2019 में प्रतिभागिता

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता के नेतृत्व में पश्चिम रेलवे ने 20 जनवरी को मुंबई में आयोजित टाटा मुंबई मैराथन के ड्रीम रन में प्रतिभागिता दर्ज कराई। इस मैराथन में पश्चिम रेलवे के 40 से अधिक अधिकारियों तथा उनके परिवारजनों ने पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता के नेतृत्व में भाग लिया।

पश्चिम रेलवे के लगभग 15 अधिकारियों ने हाफ मैराथन एवं पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी रविंद्र भाकर ने फुल मैराथन पूरी की।

इस मैराथन में प्रतिभागिता के संयोजन का कार्य पश्चिम रेलवे खेलकूद संघ के अध्यक्ष आर.के. लाल एवं महासचिव संदीप राजवंशी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। ■

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक द्वारा संरक्षा कैलेंडर का विमोचन

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता द्वारा पश्चिम रेलवे के मुख्यालय में मुख्य संरक्षा अधिकारी मनोज शर्मा, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी रविंद्र भाकर तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में संरक्षा कैलेंडर का विमोचन किया गया। इस संरक्षा कैलेंडर में चित्रों के जरिये विभिन्न संरक्षा पहलुओं को दर्शाया गया है। विभिन्न विभागों की संरक्षा चेक लिस्ट को राजभाषा हिंदी में प्रकाशित किया गया है। इस कैलेंडर में स्टेशन एवं लाइन स्टाफ के लिए संरक्षा संबंधी 'क्या करें' और 'क्या न करें', संबंधी सावधानी एवं निर्देश भी शामिल हैं। ■

वाइब्रेंट गुजरात ट्रेड शो में पश्चिम रेलवे द्वारा 'ट्रेन 18' संकल्पना पर निर्मित भारतीय रेल की प्रदर्शनी दीर्घा को मिला उत्कृष्ट प्रतिसाद

गांधीनगर, गुजरात में आयोजित वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो प्रदर्शनी 2019 में भारतीय रेल के पैवेलियन का एक दृश्य। वर्चुअल कोच रूम में ट्रेन 18 के 360 डिग्री वर्चुअल दृश्य एवं ट्रेनों के चलित मॉडलों का अवलोकन करते आगन्तुक

पश्चिम रेलवे को मिला एबीसीआई पुरस्कार

58वें ए.बी.सी.आई. वार्षिक पुरस्कार समारोह में पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क विभाग की पत्रिका रेल दर्पण को सृजनात्मक उत्कृष्टता के लिए मिले 7 राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी एवं 'रेल दर्पण' के प्रधान संपादक रविंद्र भाकर तथा संपादकीय टीम के सदस्य

प्रोजेक्ट उत्कृष्टता के लिए इरकॉन सम्मानित

इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड (इरकॉन) को इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में उसकी उपलब्धियों के लिए रेल अनैलिसिस इनोवेशन एंड एक्सलेंस समिट 2019 के दौरान सम्मानित किया गया है। इरकॉन की ओर से महाप्रबंधक, सिविल, विनीत कुमार तथा अपर महाप्रबंधक, सिविल, मनोरंजन ठाकुर ने चेयरमैन, रेल अनैलिसिस, अशोक गोयल के हाथों 23 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में यह सम्मान ग्रहण किया। इरकॉन ने अब तक भारत तथा 24 से ज्यादा देशों में 500 से ज्यादा कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक संपन्न किए हैं। ■

आरडीएसओ में रेल अनुसंधान केंद्रों तथा विभिन्न आईआईटी में स्थापित तकनीकी पीठों की गोलमेज बैठक का आयोजन

भारतीय रेल द्वारा विभिन्न भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में स्थापित रेल अनुसंधान केंद्र (सीआरआर) और तकनीकी पीठों में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक गोलमेज सम्मेलन आरडीएसओ में 11 जनवरी को आयोजित किया गया। बैठक की अध्यक्षता महानिदेशक, आरडीएसओ, वीरेंद्र कुमार द्वारा की गई। इस अवसर पर आरडीएसओ के सभी अपर महाप्रबंधक और तकनीकी कार्यकारी निदेशकों एवं आईआईटी के प्रोफेसरों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

इस बैठक का मुख्य एजेंडा सीआरआर और तकनीकी पीठों की गतिविधियों की समीक्षा पर चर्चा करना और हाई स्पीड रेलवे के क्षेत्र में नवीनतम रेलवे टेक्नोलॉजी के विकास के लिए संयुक्त अनुसंधान एवं विकास का पता लगाना तथा मौजूदा प्रणाली की सुरक्षा, दक्षता और उत्पादकता को कैसे बढ़ाया जाये तथा प्रागाक्ति रख-रखाव एवं प्रशिक्षण आदि था।

महानिदेशक, आरडीएसओ ने अपने संबोधन में भारतीय रेल और नई रेलवे प्रौद्योगिकियों में आ रही समस्याओं के समाधान के लिए आईआईटी के सहयोग से नवीनतम और कम लागत वाली रेलवे तकनीकों को विकसित करने पर जोर दिया। ■

भारतीय रेल में विद्युत कर्षण के लिए भावी विद्युत आवश्यकता हेतु कंप्यूटर सिमूलेशन अध्ययन

आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने भारतीय रेल के सभी मार्गों के 100 प्रतिशत विद्युतीकरण को पहले ही स्वीकृत कर दिया है। भारतीय रेलों का विद्युतीकरण बहुत तीव्र गति से किया जा रहा है। भविष्य में अधिकांश रेलगाड़ियां विद्युत कर्षण से चलाई जाएंगी, इसलिए भविष्य में ट्रैक्शन लोड (विद्युत रेलगाड़ी इंजनों को विद्युत आपूर्ति) हेतु विद्युत आवश्यकता बढ़ जाएगी। इसके अतिरिक्त रेलवे बोर्ड ने निर्णय लिया है तथा क्षेत्रीय रेलवे को सलाह दी है कि स्वर्ण चतुर्भुज एवं विकर्णीय योजना (दिल्ली, कोलकाता, मुंबई एवं चेन्नै द्वारा निर्मित) पर अधिकतम गति को इस समय 130 किमी/110 किमी/घंटा से बढ़ाकर 160 किमी/घंटा तक निर्बाध रूप से अपग्रेडित किया जाना है। इससे इन वर्तमान मार्गों पर भी विद्युत आवश्यकता बढ़ जायेगी। इसी को ध्यान में रखते हुए, आरडीएसओ ने विद्युत कर्षण हेतु विद्युत आपूर्ति एवं करेंट संचयन हेतु कंप्यूटर सिमूलेशन अध्ययन परियोजना शुरू कर दी है। सिमूलेशन (अनुकूलन) से मिश्रित यातायात के विभिन्न परिदृश्यों के अधीन सेक्शन-वार विद्युत आवश्यकता का पता लग जाएगा। इस अध्ययन से रेलवे 160 किमी/घंटा गति की सभी रेलगाड़ियों के अनुकूल विद्युत कर्षण प्रणाली को अपग्रेडित करने के उपाय निर्धारित करने में सक्षम हो सकेंगी। इसमें विद्युत आपूर्ति में वृद्धि तथा उच्च गति पर सुचारू करेंट संचयन हेतु आवश्यक पुर्जों की शुरुआत करना शामिल है। पहला सिमुलेशन पैंटोग्राफ और ओवर हेड वायर के मध्य यांत्रिक इंटरैक्शन हेतु है, जबकि दूसरा ऊर्जा आपूर्ति आवश्यकताओं में बढ़ोत्तरी के आंकलन करने के संबंध में है। अध्ययन अगले वर्ष के प्रारंभ में शुरू होने और अप्रैल, 2019 तक पूर्ण हो जाने की आशा है। ■

रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला में कैंसर जागरूकता प्रोग्राम आयोजित

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला के लाला लाजपत राय अस्पताल में विश्व कैंसर दिवस के मौके पर एक कैंसर जागरूकता प्रोग्राम आयोजित किया गया। इस प्रोग्राम में लाला लाजपत राय अस्पताल के डाक्टर और कैपिटल अस्पताल, जालंधर से कैंसर विशेषज्ञ डॉ. हिमांशु श्रीवास्तव ने आम लोगों और कैंसर रोगियों को कैंसर रोग के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी। इस अवसर पर विभिन्न तरह की कैंसर, उससे बचाव तथा उपचार को दर्शाती एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में कैंसर की बीमारी के लक्षण और इसके रोकथाम के विषय में भी जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. एस.पी.एस.

सचदेवा, प्रिंसीपल चीफ मेडिकल अफसर, आरसीएफ द्वारा की गई तथा इस अवसर पर डॉ. सुरेश चंद असिस्टेंट चीफ मेडिकल अफसर भी विशेष रूप से उपस्थित थे। ■

रडार सिस्टम आधारित रेलपथ गिट्टी कुशन और फारमेशन का निरीक्षण

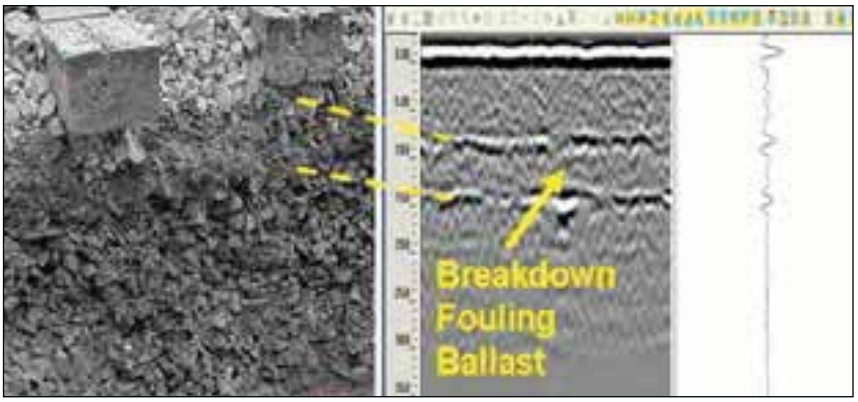

भारतीय रेल ने अपने रेलपथों के गिट्टी बेड और फारमेशन के निरीक्षण हेतु 'ग्राउन्ड पेनिट्रेशन रडार' (जीपीआर) नामक एक नई तकनीक का प्रयोग करने का निर्णय लिया है। ग्राउन्ड पेनिट्रेशन रडार (जीपीआर) एक अविनाशी है जिसमें धरातल के नीचे की सतह की छवि के लिए रडार पल्सों का प्रयोग किया जाता है। अच्छी दशाओं में, जीपीआर सतह के पदार्थों, सामग्री गुणधर्मों में परिवर्तनों, रिक्त स्थानों तथा दरारों का पता लगा सकता है।

गिट्टी कुचला हुआ प्राकृतिक पत्थर है। सही तरह से बिछाई गई गिट्टी नीचे जमीन पर रेलगाड़ी के केन्द्रित भार को बांट देती है तथा गुजरने वाली रेलगाड़ी के कंपन और झटकों को कम करने में भी सहायक होती है। नीचे तैयार किये गये धरातल के साथ गिट्टी रेलपथ बेड बनाते हैं जिस पर स्लीपर और पटरियां बिछाई जाती हैं।

वर्तमान में गिट्टी का अनुरक्षण यानि कि डीप स्क्रीनिंग क्षेत्रीय रेलों के इंजीनियरी विभाग द्वारा की जा रही है। गिट्टी को आवधिक डीप स्क्रीनिंग की आवश्यकता होती है, जिसमें बैलास्ट क्लीनिंग मशीन का प्रयोग करके गिट्टी को साफ किया जाता है। यदि सफाई नहीं की जाती है, तो गिट्टी जमीन के साथ दबकर सख्त हो जाती है। इससे किसी रेलगाड़ी के झटकों और कंपन का सहन नहीं कर पाती है। इस समय, गिट्टी का रखरखाव एवं अनुरक्षण यानि कि डीप स्क्रीनिंग गुजरने वाले यातायात और आवधिकता के आधार पर किया जाता है। जीपीआर प्रौद्योगिकी शुरू होने के बाद आंकलन वैज्ञानिक तरीके से रेलपथ बेड की वास्तविक स्थिति के आधार पर किया जायेगा। ■

पश्चिम रेलवे ने 25 साल पुराने ईएमयू कोचों की 'मक स्पेशल ट्रेन' बनाई

पश्चिम रेलवे के महालक्ष्मी ईएमयू कारखाने ने 25 साल पुराने ईएमयू कोचों का प्रयोग कर चार ईएमयू कोच को प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर एक 'मक स्पेशल ट्रेन' के रूप में रूपांतरित किया है। इस रेक का प्रयोग पश्चिम रेलवे के मुंबई उपनगरीय खंड के ट्रैकों से कचरे एवं मक को इकट्ठा करने के लिए किया जायेगा।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता ने प्रधान मुख्य इंजीनियर आर. के. मीणा, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर अशेष अग्रवाल, महालक्ष्मी स्थित ईएमयू कारखाना के मुख्य कारखाना प्रबंधक के.एस. कपूर, मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक सुनील कुमार और प्रधान कार्यालय, महालक्ष्मी ईएमयू कारखाना एवं मुंबई सेंट्रल मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ 27 जनवरी, 2019 को मुंबई सेंट्रल (मेन) के प्लेटफॉर्म संख्या 5 पर खड़े इस रेक का निरीक्षण किया। ■

देश के पहले एसी ट्रैक्शन का हीरक जयंती समारोह

15 दिसम्बर, 1959 को भारत का पहला एसी ट्रैक्शन चक्रधरपुर मंडल के खदान बहुल क्षेत्र राजखरसवा–दंगोवापोसी खंड में प्रारंभ हुआ। 25 केवी कर्षण पर प्रथम ट्रेन इसी दिन चली थी। इस दिन भारत 25 केवी एसी ट्रैक्शन को अपनाने के बाद एशिया में जापान के बाद दूसरा देश बन गया। कुछ वर्ष बाद वर्ष 1961 में, चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स ने 25 केवी ट्रैक्शन का उपयोग कर इलेक्ट्रिक इंजनों का निर्माण करना आरंभ कर दिया।

देश के पहले एसी ट्रैक्सन का हीरक जयंती समारोह 15 दिसंबर, 2018 को क्रमशः दांगोवापोसी, चाईबासा एवं केंदपोसी में मनाया गया। पी.एस. मिश्रा, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे, क्षत्रशाल सिंह, मंडल रेल प्रबंधक, चक्रधरपुर, दक्षिण पूर्व रेलवे के प्रधान मुख्य विभागाध्यक्ष एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस समारोह में उपस्थित थे। इस मौके पर दांगोवापोसी, चाईबासा एवं केंदपोसी स्टेशनों को लाइट से सजाया गया था। इस अवसर पर चाईबासा, केंदपोसी, दंगोवापोसी एवं चक्रधरपुर स्टेशनों पर स्मारक पट्टिका का अनावरण किया गया।

अपने 60 वर्ष की यात्रा में एसी ट्रैक्सन भारतीय रेल नेटवर्क के 30,000 रूट किमी में विस्तृत हो गया है। वर्ष 2022 तक पूरे भारतीय रेल नेटवर्क को विद्युतीकृत के लिए एक महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे की सभी ईएमयू का 12 कार रैक से संचालन

दक्षिण पूर्व रेलवे ने 1 जनवरी, 2019 से सभी ईएमयू का संचालन 12 कार वाले रैक से आरंभ किया है। अधिक यात्रियों को समायोजित करने हेतु केवल हावड़ा–खड़गपुर– मिदनापुर खंड ही नहीं बल्कि दीघा एवं आमता लाइन के लिए भी 12 कार रैक का संचालन किया गया है। वर्तमान में दक्षिण पूर्व रेलवे औसतन प्रतिदिन 30 रेक के साथ 194 ईएमयू का संचालन करती है। मौजूदा सभी 30 रैक 12 कार वाले हैं। पहले 9 कार रैक वाले ईएमयू 918 यात्रियों को समायोजित कर रहे थे, जबकि 12 कार वाले रैक के आरंभ होने से इसकी क्षमता 1240 यात्रियों को समायोजित करने की हो गई है। दक्षिण पूर्व रेलवे पहले से ही आधुनिक जीपीएस आधारित ऊर्जा बचत, महिलाओं के डिब्बे में सीसीटीवी कैमरे सहित 3–चरण वाली स्वदेशी ईएमयू रैक का संचालन कर रहा है। ■

यात्री सुरक्षा बढ़ाने हेतु दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा सीसीटीवी निगरानी की शुरुआत

दक्षिण पूर्व रेलवे के एक स्टेशन पर सीसीटीवी कंट्रोल रूम

दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा अपने प्रमुख स्टेशनों पर यात्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हेतु सीसीटीवी आधारित निगरानी पद्धति की व्यवस्था की गई है, यात्रियों की सुरक्षा एवं संख्या सुनिश्चित करने के लिए अब तक दक्षिण पूर्व रेलवे के प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर 533 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, महत्त्वपूर्ण स्टेशन जहां सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं वे हैं – खड़गपुर, मिदनापुर, सांतरागाछी, झाड़ग्राम, गिधनी, सरडिहा, रांची, मुरी, टाटानगर, चक्रधरपुर, झाड़सुगुड़ा, राउरकेला, मनोहरपुर, गोईलकेरा, जराई केला, आद्रा, पुरुलिया, बोकारो स्टील सिटी, गोदापियासाल, सालबोनी, पियारडोबा इत्यादि।

दक्षिण पूर्व रेलवे की उपनगरीय शाखाओं में महिला यात्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षा बढ़ाने हेतु, खड़गपुर मंडल की उपनगरीय शाखाओं में चलने वाली डी.पी.एस. आधारित सभी नये रेक वाले ईएमयू ट्रेनों के महिला डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। इन उपनगरीय ट्रेनों के प्रत्येक महिला डिब्बे में सात सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। आनेवाले दिनों में राजधानी, शताब्दी, दुरंतो सहित सभी प्रीमियर ट्रेनों में आधुनिक निगरानी पद्धति लागू करने की योजना है। ■

मध्य रेल पर ईएमयू सेवा के गौरवशाली 94 साल पूरे

मध्य रेल ने 3 फरवरी को ईएमयू सेवा के गौरवशाली 94 साल पूरे कर लिए हैं। 3 फरवरी, 1925 को 4 डिब्बों की पहली ईएमयू सेवा शुरू हुई थी, जिसे मुंबई के तत्कालीन गवर्नर सर लेस्ली विल्सन ने हरी झंडी दिखाई थी। पहली सेवा तत्कालीन विक्टोरिया टर्मिनस (अब छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई) से कुर्ला लाइन पर कुर्ला तक चली थी। तब और अब में बहुत बदलाव आया है जो नीचे दिया गया है:

वर्षवार डिब्बों की संख्या

1925 हार्बर लाइन पर 4-कार
1927 मेन-लाइन और हार्बर लाइन पर 8-कार
1961 मेनलाइन पर 9-कार, 1986 - मेनलाइन पर 12-कार, 1987 - 12-कार कर्जत की ओर 2008 -12-कार कसारा की ओर 2010 - ट्रांसहार्बर लाइन पर 12-कार 2012 15-कार मेन लाइन पर 2016 - हार्बर लाइन पर 12-कार

वर्षवार उपनगरीय सेवाएं

1925 प्रतिदिन 150 सेवाएं; प्रतिदिन २.२ लाख यात्री
1935 330 सेवाएं दैनिक; रोजाना 3 लाख यात्री
1945 485 सेवाएं प्रतिदिन;
1951 519 सेवाएं प्रतिदिन; रोजाना 4 लाख यात्री
1961 553 सेवाएं प्रतिदिन; प्रतिदिन 5 लाख यात्री
1971 586 सेवाएं प्रतिदिन; प्रतिदिन 6 लाख यात्री
1981 703 सेवाएं प्रतिदिन; प्रतिदिन 13.2 लाख यात्री
1991 1015 सेवाएं प्रतिदिन; 23.5 लाख यात्री प्रतिदिन
2001 1086 सेवाएं दैनिक; रोजाना 28.5 लाख यात्री
2015 1618 सेवाएं दैनिक; प्रतिदिन 41 लाख यात्री
2019 1772 सेवाएं दैनिक; प्रतिदिन 44 लाख यात्री। ■

योगेश कुमार मिश्रा ने इरकॉन के निदेशक (कार्य) का पदभार संभाला

योगेश कुमार मिश्रा ने इरकॉन के नए निदेशक (कार्य) के रूप में पदभार संभाल लिया है। 53 वर्षीय श्री मिश्रा, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली से बीटेक, सिविल इंजीनियरिंग हैं। वे 1987 बैच के भारतीय रेल इंजीनियरिंग सेवा (आईआरएसई) अधिकारी हैं तथा उन्हें इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े विभिन्न कार्यों में 29 वर्ष से ज्यादा का अनुभव

है। वे इरकॉन में, वर्ष 2006 में नियुक्त किए गए थे, जिसके बाद वे स्थायी रूप से इरकॉन के साथ जुड़ गए।

उन्होंने जम्मू-कश्मीर रेल लिंक के डिजाइन व निर्माण समेत रेल विस्तार की अन्य परियोजनाओं में बहुमूल्य योगदान दिया है। उनके नेतृत्व में इरकॉन ने भारत तथा अन्य दूसरे देशों में अनेक प्रोजेक्ट हासिल किए हैं। ■

भारतीय रेल के 'कॉफमो' ने वर्ष 2018 में सर्वश्रेष्ठ कामकाज किया

भारतीय रेल कार्यशालाओं के आधुनिकीकरण के संगठन 'कॉफमो' ने वर्ष 2018 में सर्वश्रेष्ठ कामकाज किया। यह संगठन आधुनिक और उन्नत मशीनी उपकरणों की खरीद के लिए एक उत्कृष्ट केन्द्र है और वह डिब्बों और इंजनों के रखरखाव तथा निर्माण सुविधाओं को आधुनिक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस इकाई ने वर्ष 2018-19 के दौरान 15 जनवरी तक 1050.85 करोड़ रुपए का कामकाज किया। आधुनिक मशीनों की खरीद और समय पर काम को पूरा करने में पिछली तिमाही के दौरान बहुत इजाफा हुआ। इससे भारतीय रेल को डिब्बों, इंजनों और पटरियों के निर्माण को आधुनिक बनाने तथा बुनियादी ढांचे के रखरखाव में काफी मदद मिलेगी। ■

एबीसीआई द्वारा 'भारतीय रेल' पत्रिका सम्मानित

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव (बायें) तथा सचिव, सुशांत कुमार मिश्रा (दायें) ने 'भारतीय रेल' पत्रिका की टीम को पुरस्कार के लिए शुभकामनाएँ दी।

एसोसिएशन ऑफ बिजनेस कम्युनिकेटर्स ऑफ इंडिया, मुंबई (एबीसीआई) के 58वें वार्षिक समारोह में रेल मंत्रालय की हिन्दी मासिक पत्रिका 'भारतीय रेल' को पुरस्कृत किया गया। 18 जनवरी को मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में इस पुरस्कार को भारतीय रेल पत्रिका के संपादक योगेश अवस्थी तथा सहयोगी रणमत सिंह द्वारा प्राप्त किया गया।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2016 में यह पत्रिका तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के हाथों 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' से सम्मानित हो चुकी है। भारतीय रेल पत्रिका रेल मंत्रालय द्वारा वर्ष 1960 से नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है।

संचार एवं संप्रेषण क्षेत्र की अंतरराष्ट्रीय संस्था एबीसीआई देश की प्रतिष्ठित संवाद संस्था है। प्रतिवर्ष यह संस्था देशभर की कंपनियों के लिए स्पर्धा आयोजित करती है। कंपनियों की ओर से प्रकाशित अनेक पत्र-पत्रिकाओं, ई-मैग्जीन, कैलेंडर आदि को उनकी प्रस्तुतिकरण के आधार पर एबीसीआई की ओर से सम्मानित किया जाता है। ■

बदलाव की हलचल

नूतन वर्ष 2019 जनमानस की समृद्धि का प्रतिबिंब बने।
तिथि बदले, मास बदले, वर्ष बदले, दिल भी बदले,
हर देशवासी, एक दृढ़ आत्मविश्वास के साथ,
अपनी जिंदगी संवारने की चाह से चल निकले।

ऋतु है सर्द, फिर भी,
जनमानस का दिल पिघल निकला है,
साक्षरता के संग,
हर देशवासी का दृष्टिकोण बदल निकला है।

सरहदों की चुनौतियों की ओर,
एक से एक नया कदम निकला है,
दुश्वारियों को पार पाने का,
देशवासियों के हाथों एक सशक्त हल निकला है।

पड़ोसियों के साथ, सदभाव व सत्कार,
अन्तरों को कम करने का सिलसिला चल निकला है,
आत्मनिर्भरता का अस्तित्व, अब घर करने,
परचम फहराने चल निकला है।

वादों के दौर में अनुपालना का क्रम होने लगा है,
पारदर्शिता व जिम्मेदारी का पालन एहसास होने लगा है,
हमारा भारतवर्ष कदमताल पर प्रबल होकर,
एक उभरती विश्वशक्ति बनने के पथ पर बढ़ने लगा है। ■

श्रेष्ठ कुम्भ

शुभ हो,
शुरुआत हो,
कुंभ का पावन अमृत,
सबको पर्याप्त हो।

त्रिवेणी का विस्तार हो,
सच का पलड़ा, बाध्य हो,
संस्कारों के संग प्रयास हों,
समाज में विकसित मेलमिलाप हो।

संगम की पावन धारा पर,
जनमानस की जय विशाल हो,
मानवता की पवित्र धरोहर का,
विश्वास के संग, हर प्रयास पुरुषार्थ हो...।

अमावस हो, या पूर्णमासी,
हर दिन, हर पल, परमार्थ हो,
अर्ध हो या पूर्ण हो, कुंभ का,
गुणगान, गुंजित हो, विशाल हो...
हर हर गंगे, हर सर, कुंभे।। ■

शैलेन्द्र कपिल, संकायाध्यक्ष, इरिटिम, लखनऊ

'भारतीय रेल' पत्रिका के सदस्य बनें

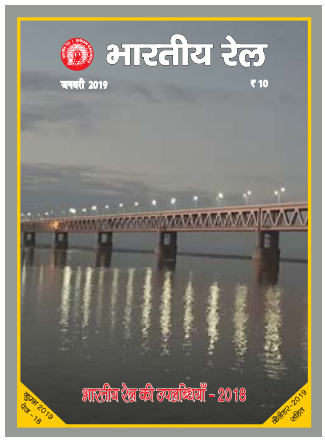

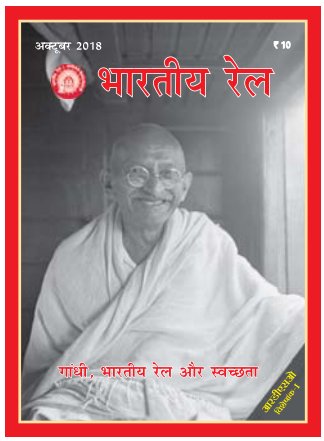

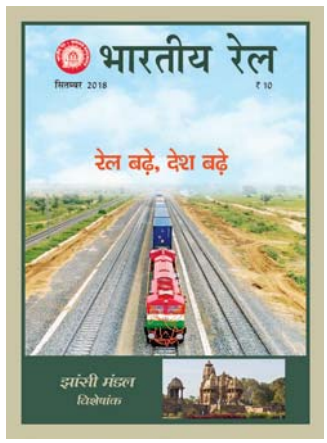

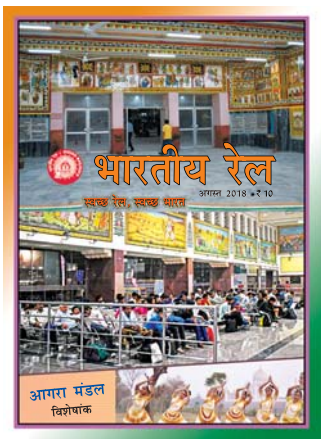

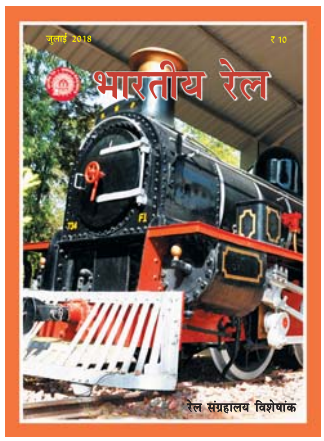

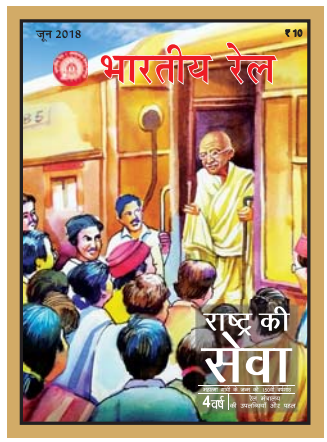

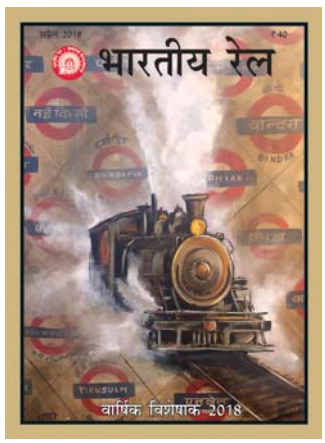

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2018-19-20
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

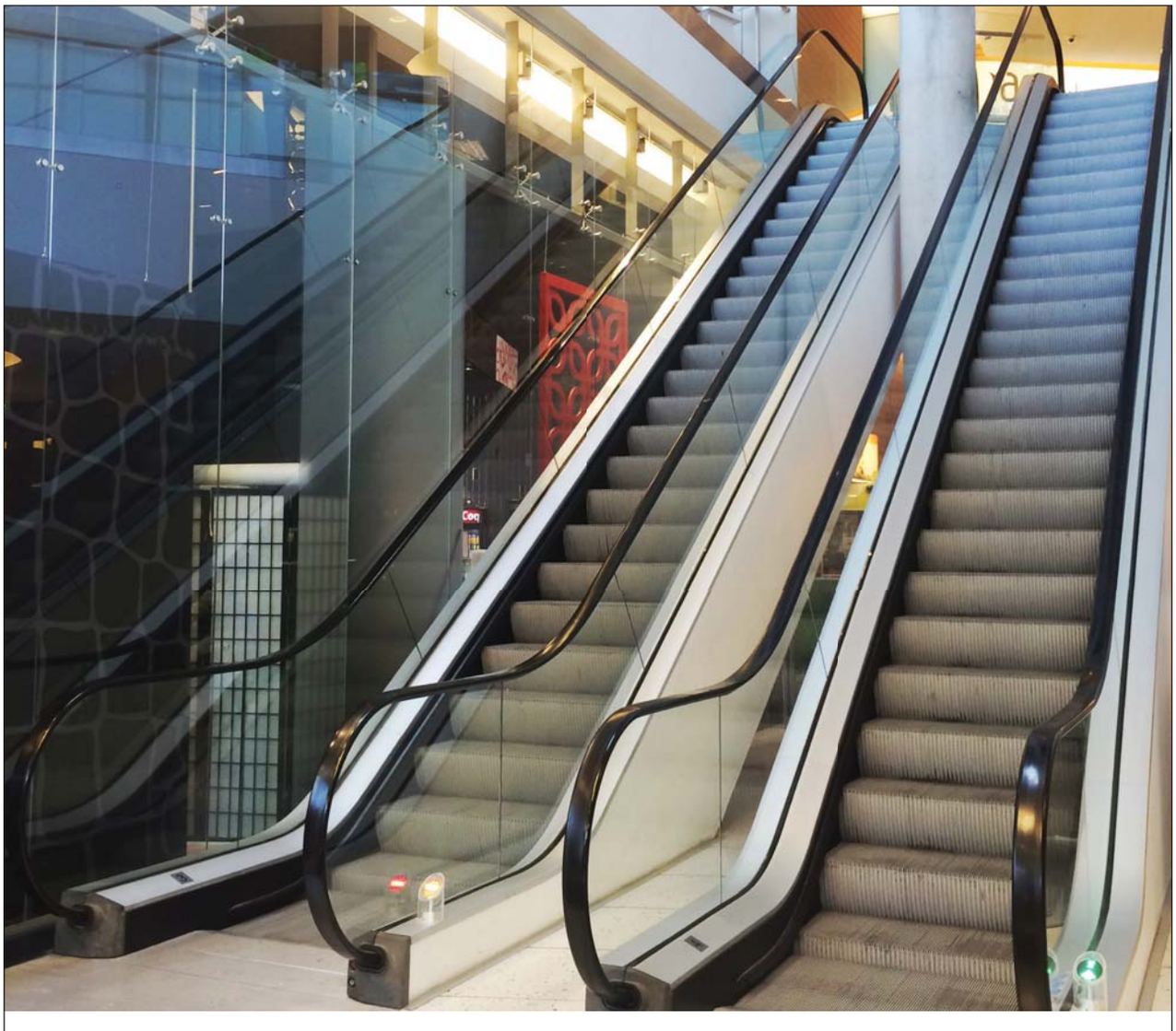

Escalators
Railway, Metro Stations

Locomotives | Traction Alternators & Motors
Dynamic Brake Resistors | Cooling Fans | HVAC

Daulat Ram
Engineering Services Private Limited

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Near Bhopal City, Dist. Raisen (MP) 464993 INDIA
Ph: 91 7480 231252 / 53 | Fax: 91 7480 231250 | info@daulatram.org | daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**